



# ललितललाम

ललितकौमुदी टीका सहित ।

प्रसिद्ध कवि श्रीमतिरामजी के ललितललाम  
ग्रन्थ की टीका ।

जिसे

बूढ़ी राज्य प्रतिष्ठित वालटरक्त राजपूत-  
हितकारिणी सभा तथा कौंसिल के  
मेम्बर श्रीकविराज रावगुणावसिहजी  
ने कविता प्रेमियों के हितार्थ रची,

और जिसे

बाबू रामकृष्णवर्मा भारतजीवनसम्पाटक  
ने उक्त कविराज जी की सहायता से  
प्रकाश किया ।

इसका सर्वविध अधिकार सम्पाटक भारतजीवन  
बाबू रामकृष्णवर्मा को है ।

काशी ।

भारतजीवन प्रेस में मुद्रित हुई ।

सन्वत् १९२४ ।



२६०  
 व्याख्या १० ४-६

## धन्यवाद ।

आज हम अत्यन्त कृतज्ञता और धन्यवाद-पूर्वक निवेदन करते हैं कि इस अनूठे ग्रन्थ के प्रकाश करने में वृंद्दीनरेश श्री १०८ महाराज रघुवीरसिंह जी ने हमारी बहुत ही सहायता की है । महाराज जैसे विद्यानुरागी है वैसेही गुणग्राही भी हैं, इनकी गुणग्राहकता हमारे भारतवर्ष में सर्वत्र प्रसिद्ध है और उदारता वीरता सुजनतादि गुणों से तो महाराज परम्परा से भूषित चले आते हैं। ये समस्त गुण तो महाराज के वंश के पूर्वपुरुषों में ऐसे विराजमान थे मानो उन्हीं के लिये इन गुणों की सृष्टि हुई थी । अंग्रेजी सरकार में भी श्री १०८ महाराज रघुवीरसिंह जी का बहुत मान्य है । यह इनकी अनूठी सुशीलता विद्यानुरागिता तथा गुणग्राहकताही का कारण है कि एक से एक भारी

सर्दार और विद्वज्जन महाराज के द्वार में शोभा  
पा रहे हैं । हम अन्तःकरण से श्रीमहाराज  
को धन्यवाद देते हैं और जगदीश्वर से प्रा  
र्थना करते हैं कि हमारे सुयोग्य महाराज बहादुर  
चिरायु होकर देशहितसाधनपूर्वक सदा प्रजा  
का पालन करते रहे ।

रामकृष्णवर्मा  
भारतजीवनसम्पादक  
काशी ।

---

# ललितललाम के टीकाकार श्रीरावजी साहिब श्रीकविराज गुलाबसिंहजी का जीवनचरित्र ।

ये कविराजजी इन दिनों श्रीमहाराज बूंदीन्द्र शील समुद्र यो १०८ रघुवीरसिंहजी के दरबार को भूषित करते हैं । इनके पूज्य पितामह श्रीसेठूरामजी को अलवर के महाराज श्रीब्रह्मावरसिंहजी ने सुकविजी की पदवी दी थी और इनके पूज्य पिताजी का नाम श्रीमहताबसिंहजी है । कविराजजी का जन्म अलवर राज्य के प्रथम स्वस्थान राजगढ़ में श्री सम्बत् १८८० के भादो सुदी १ को हुआ । पाँचही वर्ष की अवस्था में पढ़ने लिखने का शौक अधिक हुआ, भाषा काव्य और सस्कृत में सारस्वतचन्द्रिका कण्ठस्थ कर गये थे । तद् परान्त अलवर में आकर रावजी ने श्रीपूर्णमल्लजी से भाषा ग्रन्थ और सस्कृत ग्रन्थ अर्थ सहित पढे । फेर पण्डित जगन्नाथ जी से कुवलयानन्द काव्यप्रकाश आदिक ग्रन्थ भली प्रकार पढे । इसके अनन्तर अलवर महाराज श्रीशिवदानसिंहजी की महाराणीजी भालावाह की के श्रीमहाराजकुमार भये उनको बधाई के अन्त में रावजी साहिब को पूरा इज्जत

और पूरी जीविका होने का विचार हो गया था। उस समय से चन्द्र रोज पहिलेही एजण्टी हो गई जिससे कुछ दिन पीछे रावजी साहिब अलवर महाराज की सम्मति से सम्बत् १८१८ में भालावाड को चले, तब गैल में करीली महाराज श्रीजयसिंहपालजी से मिल बहां दस रोज रह कर भागे को चले तो बूंदी के महाराज श्री १०८ रामसिंह जी सख्त प्राकृति अपभ्रंस पिंगलादि भाषाओं के जानने वाले येदनकी विद्या और काव्यशक्ति को देख बहुतही प्रसन्न हुये और भली प्रकार सत्कार देकर उन्होंने इनको अपने दरबार में रख लिया, तब से ये कविराजजी आज पर्यन्त बूंदी दरबार को ही सुशोभित कर रहे हैं। श्रीमहाराज बहादुर ने प्रसन्न हो कर इनको जलोदो और बाँक्यों दो ग्राम दिये और सालगिरह के उत्सव में बनी हुई बहुत नागत की खास पौशाक के दस्तूर से अधिक पाँच सौ रुपये का दुशाला घर के बिना धारण करा बख्शी फेर ताजोम और सिरपेचादि उत्तम भूषण छड़ी आदि सत्कार कर साखत सहित हाथी बख्शी उसपर इनकी घटा सवा जमा साथ देकर इनकी हवेली पहुँचाया फेर महाराज बहादुर श्री १०८ रघुवीरसिंहजी ने पगन दो वास्ते सुवर्ण कहा बख्शा। राजपूताने में यह इज्जत बहुतही बडी गिनी जाती है और कठिनता से प्राप्त होती है। कविराजजी वास्टर संस्थापित राजपूतहितकारिणी सभा के और कौंसिल

के मेखर है और महकमा रजिस्ट्रो के हाकिम है, और स  
 हर्ष प्रकाश करने में आता है कि हमारे काशीकविसमाज  
 के एक मात्र भूषण हैं। बूटो में उनकी बड़े सर्दारों में गि  
 नती है, ऐसा उत्तम विभव पाने पर भी श्रीराव साहब की  
 सुशीलता और मिलनसार प्रशसा के योग्य है, । रावजी  
 साहिब के रचित ग्रन्थ ये हैं। रुद्राष्टक १ रामाष्टक २ गङ्गा,  
 टक ३ शारदाष्टक ४ बालाष्टक ५ पावसपञ्चीसी ६ प्रेमप  
 ञ्चीसी ७ रसपञ्चीसी ८ समस्यापञ्चीसी ९ गुलाब कीप  
 काड चार १० नामचन्द्रिका ११ नाम सिधुकोश भाग  
 चार १२ व्यंग्यार्थचन्द्रिका १३ बृहद्ब्यंग्यार्थचन्द्रिका १४ भू  
 षणचन्द्रिका १५ ललितकीमुदी १६ नीतिसिधु खंड चार १७  
 नीतिमजरी १८ नीतिचन्द्र भाग दोय १९ काव्यनियम २०  
 वनिताभूषण २१ बृहद्बनिताभूषण २२ चिन्तातन्त्र २३ मू  
 र्खशतक २४ ध्यानरूप सवति का ब्रह्मकण्ठचरित्र २५ आदि  
 त्थहृदय २६ कण्ठलीला २७ रामलीला २८ सुलोचनालीला  
 २९ विभीषण लीला ३० दुर्गास्तुति ३१ लक्षणकीमुदी ३२  
 कण्ठचरित्र में गोलोकखंड । वृन्दावनखंड । मथुराखंड  
 द्वारिकाखंड । विज्ञानखंड । ३३ । कण्ठचरित्र सूची ३४ ।  
 इन्होंने अपने भाई के पुत्र श्रीरामनाथजी को गोद लिया  
 है ये भी सिद्धान्तकीमुदी आदि सस्कृत के ग्रन्थ और भाषा  
 के ग्रन्थ बहुत पढ़े हैं। अच्छी कविता करते हैं इन्होंने स  
 मस्यासार १ सतीचरित्र २ रामनीति ३ नीतिसार ४ शंभु



दशक ५ परमेश्वराष्टक ६ ये ग्रंथ बनाये हैं। राव जी के घर में भाषाकाव्य का ऐसा प्रचार है कि उनकी घरकी दासी पुत्री चन्द्रकला बाई की कविता जिससे हमारे कविसमाज के सभी लोग पढ चुके हैं वास्तव में प्रशंसा के योग्य होती है। क्यों न हो विद्वान का साहचर्य भी दूसरों को विद्वान कर देता है। श्रीचन्द्रकलाबाई के बनाये ग्रंथ जमुनाश तक १ रामचरित्र २ पदवीप्रकाश ३ महोत्सवप्रकाश ४ ये उत्तम हैं हम लोग इनग्रंथों को देख चुके हैं और इनके विद्यार्थी अलवर में उमराव हैं किसनपुर के ठाकुर चहुवाण श्रीविडदसिंह जी इनके छोटे भाई श्रीईश्वरीसिंहजी ये अलवर महाराज श्री मङ्गलसिंह जी के साला हैं और धवाला केठाकुरन रूका श्रीहनुवतसिंहजी आदि बहुत ग्रंथ करना हैं। बूढ़ो में चौब श्रीजगन्नाथजी आदि ग्रंथकर्त्ता हैं। जगदोखर श्री राव जी साहब को चिरायु करें।

रामकृष्ण वर्मा ।

श्रीगणेशाय नमः ।

# अथ ललितललाम ।

कवि गुलाबराय कृत ।

ललितकौमुदी टीका सहित ।

दीक्षा ।

गणप गिरा गिरिजा गिरिश ग्रहपति गुरु गोपाल ।

राम सिधा राधा रमा भो पर होहु कृपाल ॥१॥

हाथ जोरि बिनती करौ वार वार सिर नाथ ।

टीका ललितललाम की तुमही देहु बनाथ ॥२॥

अथ नृपवशवर्षन - दीक्षा ।

है बूँदी अमरावती सुर से मनुज तमाम ।

तहँ सुरपति सम होत भौ भावसिंह मतिधाम ॥

शर शशि ऋषि भू \* वर्ष मैं भावसिंह भौ भूप ।

भयो तिनहि के समय मैं ललितललाम अनूप ॥

भावसिंह नृप को तनय कृष्णसिंह बलवान ।

भौ हिन्दुन की रीति को रक्षक राम समान ॥५॥

कवित्त ।

एक समै साह की पठाई फौज आई घोर  
पट्टन में मन्दिर के तोरन कौं है हृष्यार । सो  
सुनि सुजान कृष्णसिंह जूने जाय तहाँ लीनौ  
घेरि केशव को मन्दिर महा उदार ॥ सुकवि गु-  
लाव खग खोलि धार वारिधि मै खलन डुवाय  
छीनि लीने सब के हृष्यार । मन्दिर वचाय  
कित्ति कीनी महिमण्डल में राखी रइ हिन्दुन  
की पैज बाधि कै कुमार ॥ ६ ॥

कृष्णसिंह सूनु अनिरुद्धसिंह महावीर दक्षिण  
मै जाय मरहट्ट जीते तीन वार । चौथे अवरङ्गजैव  
साह सुत आजम की वेगम कौ छीनि भये दक्खनी  
गरुरदार ॥ तव करि कोप खग खोलि खल  
मौलि तोरि वेगम छिनाय जइ जीति कित्ति कै  
अपार । रज रजपूतन की राखि लाज साहन की  
ता समै भयो सपूत हाडा हिन्दु को अधार ॥७॥

दोहा ।

सुत अनिरुद्ध भुवाल को भौ बुधसिंह नरेश ।  
तिनकी कीरति जोन्ह सी फ़ैली देश विदेश ॥८॥  
छप्पय-एक दिना दरवार साहआलम के जातै ।

मिल्यो यवन मदमत्त वक्त कछु अनमिल वातै॥  
 तीजी डोढी माँहि खीज तहँ भूपहि आई ।  
 मारि कटारी राव देह खल खेह मिलाई ॥  
 पुनिससुत आजमहि मारिरनजयजसओलमकौदियो  
 तव पञ्जहजागी आप बुध महाराव राजा भयो ॥

दोहा ।

भयो भूप बुधसिंह को सुत उमेद भुवाल ।  
 जीति खग्ग वल सवल रिपु लीनों सुजस विसाल॥

कवित्त ।

काह्र समै पाय भूलि भूमि बुधसिंह जू की  
 खलन किनाय रिपु रीति कछु काल की । तव  
 करि कोप पैज रोपि श्री उमेदसिंह खग्ग खर  
 धारन तैं खीन खल खाल की॥ सुकवि गुलाव  
 विचलाय अरि सेन सब भूमि अपनाय द्विज दीन  
 प्रतिपाल की । सग हित हाल करि जाचक नि-  
 हाल करि नृपता बहाल करि कीरतिविसाल की॥

दोहा ।

पुनि अजीत की राज दै धरि मन विमल विचार ।  
 सब तीरथ करि राजकृषि बसत भये, केदार॥१२॥

कवित्त ।

प्रवल प्रतापी महिपाल श्रीउमेद-सुत महाराव राजा मे अजोतसिंह महाराज । तखत विराजे पाय आयु साल अष्टादश तीखे तेग धारि भये राजन के सिरताज ॥ सुकवि गुलाव कहै अधिक उपाधिकारि मैना मारि मारि करे अखिल अभूत काज । अकस विचारि रान अरुसी सँवारि पुनि वय वीस साल मँभू लीनों जाय सुरराज ॥ १३ ॥

दोहा ।

सुत अजीत को विष्णु वय मास चार दिन तीन । किय राजर्षि उमेद नै नाती तखतनसीन ॥१४॥

कवित्त ।

भयउ अजीत सुत विष्णुसिंह महावीर टुति में दिवाकर सो कमनीय काम सो । सिन्धु सो गँभीरता में वीरता में पारथ सो वचन विशेषता में गुरु मतिधाम सो ॥ सुकवि गुलाव प्रजापालन में माधव सो बलि सो विनै में अरि-नासन में वाम सो । धरमधुरीण धीर बलावन्ध पातसाह सरल स्वभाव माँहि राव राजा राम सो ॥ १५ ॥

दोहा ।

विष्णुसिंह कै सुत भयो राम धर्म-अवतार ।

ज्यों दशरथ कै राम भौ सुमति जगत हितकार॥

कवित्त ।

सोभा मैं निसाकर सो तेज मैं दिवाकर सो  
दान मैं उमावर सो कीरति को धाम है । रूप  
मैं मनोज सो अलिप्त मैं सरोज सो है भोज काव्य  
मौज माँहि चोजही सौं काम है ॥ सुकवि गुलाव  
कहै ज्ञान मैं जनक सो है वनक सरीर को सु-  
रेस सो तमाम है ॥ बैरिन मैं विप्रराम नीति  
माँहि जदुराम बुँदीनाथ राजा राम शील माँहि  
राम है ॥ १७ ॥

पूरन गँभीर धीर बहुबाहिनी को पति धा-  
रत रतन महा राखत प्रमान है । लखि द्विजराज  
करै हरष अपार मन पानिप विपुल अति दानी  
छमावान है ॥ सुकवि गुलाव शरनागत अभय-  
कारी हरि उरधारी उपकारीह महान है । बला  
वन्ध शैल पतसाह कवि कौल भानु रामसिंह भूत-  
लेन्द्र सागर समान है ॥ १८ ॥

दोहा ।

रामसिंह नृप कौ प्रथम जुग सुत भये सुजान ।  
भीमसिंह बलधर्म अरु रङ्गनाथ छवि-यान ॥१६॥

कवि ।

दीनदयाधारी देखि विक्रम विचाख्यो सब  
हर अनुमान्यौं लखि वीरता की वार मैं । धीरता  
निहारि राम जान्यौं कविराजन नैं सुरतरु ठान्यौ  
दीह दान निरधार मै ॥ सुकवि गुलाव आव देखि  
देखि आनन की मदन बखान्यौ मनमोहन वि-  
चार मै । बल विसतार माँहि मान्यौ भीम भीम-  
सिंह पारथ पिछान्यौ धनु वान के प्रचार मै ॥२०॥

बालक सुरेश को सो पालक अशेषन को  
टालक दुनी दुख को छविधाम काम सो । तेज  
मैं दिनेश सो गणेश सो विचार माँहि बचन वि-  
शेषता मैं गुरु अभिराम सो ॥ सुकवि गुलाव क-  
नकाचल सो धीरता मैं सिन्धु सो गँभीरता मैं  
वीरता मैं वाम सो । श्याम सो सुजान खलहरन  
कलान माँहि पितु अनुशासन मै रङ्गनाथ राम  
सो ॥ २१ ॥

दोहा ।

इन जुग राजकुमार नै पितु आगैही जाय ।  
 वास कयो सुरलोक मै अनुचित समय बसाय ॥  
 ता पाछै नृप राम कौ उपजै चार कुमार ।  
 नखशिख शुभलक्षण भरे कृत्र धर्म अवतार ॥२३॥  
 कवित्त ।

शील सुधी अधिक उदार रघुवीरसिंह परम  
 दयालु गुणधाम काम अवतार । रङ्गराजसिंह  
 मतिसागर उदार अति द्विजहितकार खलटारक  
 अरि विदार ॥ सुकवि गुलाव रघुराजसिंह महा  
 धीर मरल सुशील प्रजापाल दीनदुखहार । रघु  
 वरसिंह सिंह सोहै रन-कानन को दुज्जन कौं  
 दायक प्रवाह खर खगधार ॥२४॥

करन समान मन पारथ सो पूरो पन काम  
 सो अनूप तन पृथु सो पृथी को वर । वलि सो  
 विचार उपकार-कर विक्रम सो हरि सो हृस्थार  
 कार हर सो दया की घर ॥ सुकवि गुलाव रण-  
 धीर रघुवीरसिंह सिन्धु सो गंभीर द्विज दीन उर  
 पीर-हर । परम प्रतापी अरि-तापी निज हुक्म-  
 थापी दुज्जन उथापी जुवराज सुतराम कर ॥२५॥



जौलौ या मही मैं शशिसूर को प्रकाश होय  
 जौलौं ईस सीस पै प्रवाह गङ्गपानी को । जौलौ  
 नभमण्डल मैं धान रहै तारन को जौलौं जग  
 बीच है विचार वर बानी को ॥ सुकवि गुलाव  
 जौलौ शेष पै धरातल है जौलौ है पुरान मैं नि-  
 सान बलि ज्ञानी को । जौलौ करै परम अनन्द  
 चव नन्दन रु तौलौ होहु अचल प्रताप राम दानी  
 को ॥ २६ ॥

दोहा ।

सभा माँहि इक दिवस यह दियो हुकम नृपराम् ।  
 कियो गन्ध मतिराम नै नीकी ललितललाम ॥  
 पै टीका काहु न करी जो अब टीका होय ।  
 कठिन अर्थ आशयहु मै तौ समुझै सब कोय ॥  
 कोविद कवि गुरु शुक्र से जद्यपि हुते अपार ।  
 तदपि अल्पमति मै धरी आज्ञा सीस उदार ॥  
 सम्बत्ः शशि दिग्निधि अवनि क्वारमास रविवार ।  
 कृष्णपक्ष दशमी विषै भौ टीका अवतार ॥३०॥

अथ कविवश वर्णन—कविल ।

वन्दीवश माँहि भये प्रगट अनन्तराम पट्टन

मैं तौरनाथ माने मुख्य मन्त्रकार । जैपुरादि राज-  
 जनहू ताजीमादि मानजुत दीनें दान तिनही  
 कौं योग्य जानि केही वार ॥ तिहिं सुत सेठूराम  
 आये अलवर माँझ सुकवि बखानि कियो बखतेश  
 सतकार । कवि महताव भये तासु पुत्र शीलसिधु  
 तिनकै गुलाब भयो ग्रन्थ की प्रकासकार ॥३१॥

वालकपने सैं मन खींचि जग कामन सौं  
 सुरनर वानी विषै कीनौ श्रम को समाज । अल-  
 वरनाथ करी प्रीति औ प्रतीति अति तौहू सीख  
 लिय कियो देशाटनही को साज ॥ प्रथम करोली-  
 नाथ दीनों सनमान अति दिन दश वसि बूँदी  
 मारग लियो दर्राज । तहँ हित ठानि सनमानि  
 रुजगार करि महाराव राजाराम राखि लियो म-  
 हाराज ॥ ३२ ॥ दोहा ।

बहुरि खास प्रीसाकहू सालगिरह की वेस ।  
 विन धारन कीनी हरषि दीनी राम नरेश ॥३३॥  
 सछजादे साहिव कियो मेल आगरै चार ।  
 बहुरि लाठ साहिव कियो दिल्ली मधि दरवार ॥  
 राम शिविर अंगरेज नृप तहँ आये जिहिं वार ।

तव हीं ह हाजिर रख्यो आदर सहित उदार ॥३५॥  
 पुनि सम्बत चौतीस में दियो जलोदो ग्राम ।  
 अरु अटोक डोढी करी पैठत वखत तमाम ॥३६॥  
 पुनि दीनी ताजीम अरु ग्राम दूमरो दीन ।  
 साखति नुत गज एक दिन दीने राम प्रवीन ॥३७॥  
 देलवाज भी साथ अरु सादर गज चढवाय ।  
 खिलत सहित नृपराम नै दियो सदन पहुँचाय ॥  
 अब करि पञ्च मुसाहिव रु सामिल राखि सलाह ।  
 दियो प्रकृति अधिकार मुहि रामसिंह नरनाह ॥  
 श्रीजुत जसनुत विजयनुत नुत मन वाँछित काम ।  
 राजी महि सिर शेष लौ सुतन सहित नृपराम ॥

# अथ ललितकौमुदी टीका सहित ललितललाम ।

दोहा ।

सुखद साधुगन कौ सदा गजमुख दानि उदार ।  
सेवनीय सब जगत को जग मा वाप कुमार॥४१॥

यह मङ्गलाचरण है मङ्गलाचरण वह कह्यावे जो ग्रन्थ के आदि में विघ्ननिवारण के अर्थ इष्टदेव को मनाइये सो तीन प्रकार को है जामें वस्तु को जतायवो होय सो वस्तु निर्देशात्मक १ जामें आशीर्वाद होय सो आशीर्वादात्मक २ जामें नमस्कार होय सो नमस्कारात्मक ३ । यहा केवल वस्तु निर्देश है जय नम वाचक शब्द नहीं यातें यह वस्तु निर्देशात्मक मङ्गलाचरण है । साधुन के गन कौ सदा सुख दायक है गज क सुख सो सुख है दानी है उदार दक्षिण है अथवा बडो दानी है सब जगत के सेवन करिवे योग्य है, जगत् के मा वाप जो पार्वती शिव तिनको कुमार है । उदारो दाढमहतोर्दक्षिणेऽचाभिधेयवत् । इति मेदिनी ।

दोहा ।

कवि मतिराम गणेश कौ सुमिरत सुख सरसात ।  
श्रौंन पौन लागें विघन तूल तूल उडि जात॥४२॥

मतिराम कवि कहे है गणेश कौ सुमिरतें सुख सरसावत है कानन की पुवन लगतैही विघ्न प्रत्यूहन को तूल नम्याव

अर्थात् फैलाव सोई भयो तूल रुई सो छडि जात है, अथवा  
विघ्न है सो रुई के तुल्य छडि जात है यहा सुमिरत मुख  
सरसात में हेतु, विघ्न में रूपक, तूल तूल में जमकालद्वार है।  
दोहा ।

मदरसमत्तमिलिन्दगनगानमुद्रित गणनाथ ।  
सुमिरत कविमतिराम कौं ऋद्विसिद्धि निधि हाथ॥

मद जल करिके मस्त जो भ्रमरन के समूह तिनके  
गुञ्जार करिके प्रसन्न जो गणेश तिनको सुमिरते मतिराम  
कवि कौं सम्पूर्ण ऋद्वि आठौं सिद्धि नवनिधि हाथ में है ।  
हेतु अलङ्कार है ॥ ४३ ॥

सवैया ।

पारवती के पयोधर के पय ज्योति जगै अति  
उज्जल जो है । ईश के सीस शशी सुरसिन्धु  
अमीजुत पावन पाप वियो है ॥ सिद्धिवधू कुच  
मण्डन को मतिराम मनौ मुकता मन मोहै ।  
साधुन को सु बसी करतार करीमुख के कर  
शीकर सोहै ॥ ४४ ॥

साधुन कौं भली प्रकार बस करिबे वारो और तारिबे  
वारो करीमुख जो गणेश ताके सुड पै भीकर जो जलकन  
सोहै है सो कैसो है पार्वती के कुच के ऊपर दुग्ध विन्दु  
है जाकी ज्योति जगै है फेरि जलकन कैसो है, मस्तक पै

मानो चन्द्रमाः है फेरि महादेव के मस्तक पै सुरसिधु गगा  
 हैं । शशि कैसी हैं अमृत सहित है । गगाः कैसी हैं पवित्र  
 है और पापन को दूर करै हैं । मतिराम कहै है सिद्धि है  
 साईं भई स्त्री ताके कुध के मडन को मानो मुक्ता है मन  
 को मोहै है । उक्तास्यदावस्तूप्रेघालकार है ॥ ४४ ॥

छप्पय ।

मुकुट मोर पर पुञ्ज मञ्जु सुरधनुष विराजत ।  
 पीतवसन छिनर नवीन छिनकवि छवि श्राजत ॥  
 वचन मधुर गभीर घोष वरषत प्रमोदवर ।  
 वृन्दावन वर वाल-बेलिवृन्दनविलासकर ॥  
 मतिराम सकल सन्तापहर भावसिंह भूपाल-मन ।  
 गोविन्द नदनन्दन सुखद घन सुन्दर आनन्दघन ॥

महाराज भावसिंहजी के आनन्दघन नामक सुन्दर  
 इष्टदेव ठाकुर है जिनकी अब भी पूजा होती है तिनको  
 घन समान रूपका करिके वर्णन है, सो कैसे हैं गोविन्द हैं  
 नन्द के नन्दन हैं सुख के दाता हैं । मोर की पोंखन के  
 समूह को सुन्दर मुकुट है सो इन्द्र की धनुष विराजै है  
 छिन ९ में नवीन पीतवसन है सो छिनकवि जो वीशुरी  
 ताकी छवि छाजै है, मधुर गभीर वचन है सो घोष नाम  
 गर्जना है सुन्दर प्रमोद है सो वर्षा है वृन्दावन की सुन्दर  
 वनिता है सोई भई बेलिंग को समूह तिनसे विलास को

करिविवारो है, मतिराम कवि कहे है भावसिंह राजा के  
मन के सम्पूर्ण सत्तापन को हरिविवारो है सम अभेदरूप  
कान्तहार है ॥ ४५ ॥ दोहा ।

जगत-विदित बूँदीनगर सुख सम्पत्ति को धाम ।  
कलिजुगह में सत्यजुग तहाँ करत विश्राम ॥

बूँदीनगर है सो जगत में प्रगट है सम्पूर्ण सम्पदान को  
घर है । जहा कलिजुग में भी सत्यजुग आराम करै है ॥ ४६ ॥

पढत सुनत मन है निगम आगम समृति पुरान ।  
गीत कवित्त कलान के जहँ सब लोग सुजान ॥

जहा बूँदी में मन लगाय के लोग निगम आगम अति  
पुराण पढते सुनते है गीत कवित्त कलान में सब लोग सु  
जान है ॥ ४७ ॥

सरद-वारिधर से लमत अमल धौरहर धील ।  
चित्रनि-चित्रित सिखर जहँ इन्द्रधनुष से नील ॥

सरदऋतु के मेघ से निर्मल धीले महल लसत हैं जहँ  
बूँदी में तस्वीरन करिके चित्रित सिखर है सो नवीन इन्द्र  
धनुष से है । पूर्णोपमानहार है ॥ ४८ ॥

महलनि ऊपर जहँ बने कञ्चनकलस अनूप ।  
निज प्रभानि सौं करत हैं गगन पीत अनुरूप ॥

जहँ बूँदी में महलनि के ऊपर कञ्चन के सुन्दर कलस  
बने हैं अपनी कान्ति सौं आकास को पीत रङ्ग करत हैं ॥

जहाँ विमान वनितान के श्रमजल हरत अनूप ।  
सौध-पताकनि के वसन होइ विजन अनुरूप ॥

जहाँ देवाइनान के श्रमजल कौं भली प्रकार हरें हैं  
महलनि की पताकान के वस्त्र पह्ना के स्वाफिक हो कर ॥  
वीनावेनु निनाट मृग मोहि अचल करि चन्द ।  
सौध-सिखर ऊपर जहाँ दम्पति करत अनन्द ॥

बीना और बिन के शब्द से मृगन कौं मोहि के चन्द्रमा  
कौं अचल करिके जहाँ बूंदी में दम्पति महलनि के शिखर  
के ऊपर आनन्द करते हैं । अर्थात् चन्द्रमा के रथ के मृग  
वाहन हैं उनके मोहि तै रथ रक्त है ॥ ५१ ॥

जहाँ छहौं ऋतु मै मधुर सुनि मृदङ्ग मृदु सोर ।  
सङ्ग ललित ललनानि के नृत्य करत गृह-मोर ॥

बूंदी में छहूँ ऋतु में मोठे कोमल पखावजन के शब्द  
सुनि के सुन्दर स्त्रियन ३ साथ पाने मधुर नाच करते हैं ।  
भ्रमालहार है । मोरन कौं मृदङ्गरव में घनरव को भ्रम है ॥  
मरकत लाल प्रवाल मनि सुकुत हीर अवदात ।  
ललित राजपथ में जहाँ जरकस वसन विधात ॥

पद्मा लाल मूंगा मणि मोती हीरा चञ्चल बूंदी में  
सुन्दर बाजार में जरी के वस्त्र विकते हैं ॥ ५२ ॥

मृदु जल वरपत भूमि के जलधर सम मातङ्ग ।  
बिना परनि के खग जहाँ सुन्दर तरल तुरङ्ग ॥



पृथ्वी ३ मेघ समान हाथो हैं सो मझी के पानो को  
बर्तते है, बूदी में सुन्दर चञ्चल घोडे है सो बिना पाँखन के  
पक्षी है । न्यून अभेदरूपकालद्वार ६ ॥ ५४ ॥

सदा प्रफुल्लित फलित जहँ द्रुम वेतिन के वाग ।  
अलिकीकिलकलधुनिसुनतलहतशवनअनुराग ॥

बूदी में हृद्य बेलडोग के वाग है सो सदा फूलें फलें हैं  
भौर कीकिलन के सुन्दर शब्द सुनि के कान अनुराग को  
प्राप्त होते है ॥ ५५ ॥

कमल कुमुद कुवलयन के परिमल मधुर पराग ।  
सुरभि-सलिल-पूरे जहाँ वापी कूप तडाग ॥५६॥

कमल कुमुद कुवलयन के सुगन्ध और मीठे पराग हैं  
सुन्दर जल के पूरे बूदी में वावडी कुया तालाब हैं ॥ ५६ ॥  
शुक चकोर चातक चुहिल कोक मत्त कलहस ।  
जहँ तरवर सरवरन के लमत ललित अवतस ॥

सुवा चकोर पपोडा चुहिल करते हैं चकवा हंस मस्त  
हैं बूदी में तालाबन के हृद्य सुन्दरन ३ विरोमणि लसते हैं ।  
अक्षयवट वालक-उदर ज्यों ससार ममाय ।  
सकलजगत-पानिप रघौ बूँदी में ठहराय ॥५७॥

प्रलयकाल में अक्षयवट में नारायण बाल रूप धरि के  
रहे हैं ताके पेट में जैसे मसार समावे है तैस सम्पूर्ण जगत  
को पानी अथात् तेज बूदी में ठहरि रघो है, दृष्टान्तानुद्वार

तामै प्रतिविम्बित मनौ सम्पतिजुत सुरलोक ।  
घर घर नर नारी लसैं दिव्य रूप के ओक ॥५६॥

ता पानिप में मानौ सम्पति सहित देवलोक भलकै है।  
घर घर के नर नारी है सो दिव्यरूप के लसैं हैं और ओक  
स्थान भो दिव्यरूप के लसैं है अर्थात् मनुष्य मकान सुरलोक  
केसे है ॥ ५६ ॥

चन्द्रमुखिन के भौहजुग कुटिल कठोर उरोज ।  
वाननि सौ मन कौ जहाँ मारत एक मनोज ॥

खियन की भौह दो यही कुटिल है कठोर कुचही है  
भूदो में एक मनोजही वाननि सौ मन कौ मारे है अर्थात्  
कुटिल कठोर मारक कोइ नहीं है । परिसव्यालद्वार ॥ ६० ॥

जहाँ चित्त-चोरौ करै मधुर-वदन-मुसकानि ।  
रूप ठगत है दृगन कौ और न दूजो जानि ॥६१॥

बूदो में मधुर मुख मुसकानि है सो चित्त को चोरो  
करै है नैननि कौ रूप है सो ठगै है और दूसरो नहीं जानौ  
अर्थात् चोर ठग नहीं है । परिसव्यालद्वार ॥ ६१ ॥

ता नगरी को प्रभु वडो हाडा सुरजनराव ।  
रच्यो एक सब गुननि को वर विरञ्चि समुदाव ॥

ता नगरी को स्वामो समर्थ हाडो सुरजनराव हीत  
मयो सो मानौ विधि नें सब गुनन को सुन्दर एक समुदाव  
रच्यो है ॥ ६० ॥

छप्पय ।

एक धर्म गृह खम्भ जम्भरिपु-रूप अग्नि पर ।  
 एक बुद्धि गम्भीर धीर वीराधि वीरवर ॥  
 एक श्रीज अवतार सकल सरनागतरक्षक ।  
 एक जामु कंरवाल निम्बिल खुलकुल कहैं तक्षक॥  
 मतिराम एक दातानिमनिजगजसत्रमज्ञप्रगट्टियउ।  
 चहुवानवश-अवतस दूमि एक रात्र सुरजन भयउ॥

धर्म घर को धम्भ एक भयो, पृथ्वी पै इन्द्र समान एक  
 भयो, बुद्धिमान गम्भीर धीरवान वीरन को अधिवीरन को  
 पति एक भयो, प्रताप को अवतार और सम्पूर्ण सरनागतन  
 को रक्षक एक भयो, जाको खड्ग सम्पूर्ण दुष्टन के समूह  
 को सर्प एक भयो, मतिराम कहै है दातान में मणि एक  
 भयो जगत में निम्बिल जस प्रगट कियो चहुवानवश को  
 शिरोमणि या प्रकार एक सुरजनराय भयो ॥ ६३ ॥

मनहरन ।

दान समै गनै धन तन सो कुवेरह को त-  
 नक सुमेरु महादानि ऊंचे मन को । पृथु सों  
 प्रथित पृथ्वी प्रबल प्रतापवन्त प्रभु पुरहृत सों  
 प्रगट पूरे धन को ॥ मतिराम कहै वैरी वारन  
 विदारिवे को रूप धरें राजे मृगराज रनवन को ।

दुरजनबधू-उरजन की सिंगारहर ऐसी जस गावैं  
सुरजन सुरजन को ॥ ६४ ॥

दान समय में कुबेर के धन को भी लन सम गिनै है,  
सुमेरु को भी छोठो गिनै है ऊँचा मन को महादानी है, पृथ्वी  
पै पृथु राजा सो स्थित है प्रबल प्रतापवन्त है इन्द्र सो प्रभु  
है प्रगटही पूरेपन को है । मतिराम कहै है शत्रु है सोही  
भयो हाथो तिनके विदारिबि को मानौ रूप धरें हुये रनरूपी  
वन को सिह राजै है बैरीन की स्त्रियन के कुचन के सिंगार  
को दूर करत है । अर्थात् बैरीन को मारि गेरै तब बैरी  
बधू हार धतारि गेरै देव श्री मनुष्य सुरजनसिंह को ऐसी  
जस गावैं हैं । बैरो वारनरूपक, सुरजन सुरजन जमका ॥ ६४ ॥

दोहा ।

भयो भोज सुरजन-तनै अतुल भोज की खानि ।  
हिन्दुन की राखी मरम निज मूँछन में आनि ॥

सुरजनसिंह को सुत भोज भयो सो अप्रमाण प्रताप  
की खानि भयो हिन्दुन की लाज अपनी मूँछन में लाय  
राखी अर्थात् बादशाह को माता मरी तब सब राजान  
की मूँछ डाढी मुड़ाइवे को हुक्म भयो तासों सब राजान  
ने मूँछ डाढो मुडवाई, भोज ने नही मुडवाई ॥ ६५ ॥

मनहरन ।

जिते ऐंडदार दरवार-सिरदार सब ऊपर प्र-  
ताप दिल्लीपति को अभङ्ग भौ । मतिराम कहै

करवार के कसैया किते गाडर से मूँडे जग हँसी  
 को प्रसङ्ग भौ ॥ सुरजन-सुत रज-लाज-रखवारो  
 एक भोजही तै साहि को हुकम-पग पङ्ग भौ ।  
 मूँछनि सौ राव मुख लाल रग देखि मुख श्री-  
 रनि को मूँछनि विनाही श्याम रंग भौ ॥ ६६ ॥

जितने अकडवाले साही को सभा के सर्दार थे उन  
 सब के ऊपर दिधीनाथ की प्रताप अभङ्ग भयो अर्थात् कोद  
 पै मूँछ, मुडावा को हुकम भयो नहीं गयो। भतिराम कहै है  
 कितनेही खडग बाँधनेवाले भेड की तरह मूँडे जगत् में  
 हँसी को जिकर द्ये सुरजनसिंह की पुत्र रजपूती की  
 लाज की रखनवाला एक भोजही से पातसाह को हुकम  
 पग, पौगसो भयो अर्थात् भोज ने हुकम नहीं मान्यो, मूँछनि  
 सहित राव को मुख लाजरङ्ग को देखिके श्रीरनि को मुख  
 मूँछनि विनाही श्यामरङ्ग भयो। गाडर से मूँडे पूर्णोपमा ६६

दीहा ।

वश-वारिनिधि रतन भौ रतन भोज को नन्द ।  
 साहनि मौं रन रग मै जोल्यो वखतविलन्द ॥

वश है सोही भयो समुद्र तामे रत्र भयो भोज को सुत,  
 खरसिंह है सो पातसाहन सौं सपाम के रङ्ग में वखतवि  
 सन्द जोल्यो । रूपक ॥ ६७ ॥

विगर इध्यान हजूर आइवे को हुकम मान्यौ  
 नहि दिल्लीपति आलमपनाह को । मतिराम  
 कहै टल दिक्खिनी समेत साहिजहाँ सो हटायो  
 वीर वारिधि उछाह को ॥ भोज को सपूत भयो  
 फौज को सिंगार अति अोज को दिनेश दुरजन  
 दिलदाह को । रावरतनेश कर ओट राख्यो करि  
 वार करिवार ओट राख्यौ कोट पातसाह को ६८

इधियारन बिना दरबार में आइवे को हुकम नही मान्यौ  
 दिल्लीनाथ जगत के रचक को, अर्थात् पातसाह ने हुकम  
 दियो ही कि सब राजा बिना शस्त्र दरबार में आयौ करै सो  
 रमेश ने नहीं मान्यौ । मतिराम कहै है दक्षिण की फौज  
 समेत शाहजहाँ हटा दियो वीर और उछाह को समुद्र  
 भोज को सपूत है सो फौज को सिंगार भयो, प्रताप को  
 सूरज, वैरोन के मन को जराइवोवारी रावरतनेश ने हाथ  
 में खडग भेलि राख्यौ और वार करिके पातसाह को कोट  
 आह में राख्यौ अर्थात् खडग चलाय के कोट बचायो ।  
 करि वार करिवार जमक ॥ ६८ ॥

दोहा ।

भयो राव रतनेश को गोपोनाथ कुमार ।  
 सुजस अपार वखानिये दान कृपाने उदार ॥ ६९ ॥

राव रत्नेश के कुमार गोपीनाथ भयो जाको सुजस  
अपार बखानिये है, दान कृपान में उदार भयो ॥ ६८ ॥

मनहरन ।

सगर में सिंह-मम कीने करिवर सुरपुर के  
निवासी सूर शत्रुन के साथ के । कहै मतिराम  
गज गाँव है निवाजि कीने सकल निहाल जे ग-  
वैया गुनगाथ के ॥ राव रत्नेश के कुमार के सु-  
जस फैलि रहे पुहुमी में ज्यों प्रवाह गग पाथ के ।  
रीझ खीज मौज फौज दान औ कृपान ऊँचे  
जगत बखानै दोऊ हाथ गोपीनाथ के ॥ ७० ॥

सग्राम में सिंहसमान गोपीनाथ ने, शत्रुन के साथ के  
सूर जे है तेही भये हाथी तिनकों देवलोक के वासी किये  
अर्थात् मारि नांखे मतिराम कहै है निवाजि के गज ग्राम  
दे करिके गुन कथान के गानेवाले सब निहाल किये । राव  
रत्नेश के सुत के सुजस है सो पुहुमी में फैलि रहे हैं, जैसे  
गङ्गा के जल के बहाव । रीझ में खीज में मौज में फौज  
में दान में और कृपान में जगत् है सो गोपीनाथ के दोनों  
हाथ ऊँचे बखानै है । सुतोपमारूपक ॥ ७० ॥

दोहा ।

गोपीनाथ तनै भयो पानिप-पारावार ।  
शत्रुशाल छितिपालमनि छत्रधर्म अवतार ॥७१॥

गोपीनाथ को सुत शत्रुशाल भयो सो छवि को समुद्र  
भयो पृथ्वीपालकन में मति श्री छत्र धर्म को अवतार भयो॥

मनहरन ।

पण्डित सुकवि भाट चारन को गुन समुभैया  
सावधान सदा सुजस विधान मै । कवि मतिराम  
जाको तेजपुञ्ज दिनकर दुज्जन को दाहकर दसहँ  
दिसान मै ॥ गोपीनाथ-नन्द चित चाही वक-  
सीसनि सौं जाचक धनेश कीनें सकल जहान  
में । ज्ञान में दिवान शत्रुशाल सुरुगुरु साहिबी  
मै सुरपति सुर-तरवर दान में ॥ ७२ ॥

पण्डित सुकवि भाटचारन इनके गुन को समुभैया सदा  
सुजस को विधि में सावधान । मतिराम कहै है जाको प्र  
ताप गन सूर्य है सो दशो दिशान में दुर्जन को जराइवे  
वारो है, गोपीनाथ के नन्द नै चित को चाही वकसीसन  
सौं सपूर्ण जगत के जाचक कुवर किये, दिवान शत्रुशाल है  
सो ज्ञान में हृदयति है प्रभुता मै इन्द्र है दान में कल्प-  
वृक्ष है । रूपक अत्युक्ति उल्लेखालङ्कार है ॥ ७१ ॥

सवैया ।

श्रीरंग दारा नुरे दीउ जग भये भट युद्ध वि-  
नोद विलासी । मारू वजै मतिराम वषानै भई  
अति अस्त्रनि की वरखा सी । नाथ तनै तिहिँ ठौर



भिख्यो जिय जानि कै छत्रिन कौं रन कासी ॥  
 'सीस' भयो हर हार सुमेरु छता भयो आपु सुमेरु  
 को वासी ॥ ७३ ॥

शौरगजेव और दारा साह दोनों जग में घुरे भट हैं  
 सो युद्ध के विनोद के विनासी भये मारु राग बजे है, म  
 तिराम बषानै है अस्त्रनि की अति बर्षा सी भइं तिहि ठौर  
 में गोपीनाथ को सुत भिख्यो जीव में छत्रिन कौं रन है सो  
 कासी जानि कै अर्थात् मुक्तिदाता समुक्ति के शत्रुशान  
 को सीस है सो महादेव के हार को सुमेरु भयो अर्थात्  
 मुडमाल को सुमेरु और राजा आपु सुमेरु को वासी भयो  
 अर्थात् देवता भयो ॥ ७३ ॥

दोहा ।

शत्रुशाल सुत सत्य में भावसिंह भूपाल ।  
 एक जगत में जगत है सब हिंदू की ढाल ॥ ७४ ॥

शत्रु शाल को सुत भावसिंह भूपाल है सो सत्यही ज  
 गत में सब हिंदू की एक ढाल जगमगावै है ॥ ७४ ॥

छप्पै ।

तिमिरतुलित तुरकान प्रवल दिशि विदिशि  
 प्रगटत । चलत पथ पथीन धरम श्रुति करम नि  
 घटत । लखत न लोचन लोक अवनिपति मोह  
 नौं दे रम । धरनि वलय सब करत जानि कलि-

काल आप वस । मतिराम तेज अति जगमगत  
भावसिंह भूपाल महँ । दिनकर दिवान दिन दिन  
उदित करत सुदिन सब जगत कहँ ॥ ७५ ॥

अन्धकार तुल्य प्रबल मुसलमानो दिशा विदिशान मै  
प्रगटतै धर्म श्रुति कर्मरूप पन्थ के मिटतै धर्मात्मा पथिकन  
के न चलतै भूमिपाल राजा है सो अज्ञान रूप नींद के रस  
मै लोक कौ नेचन सौं नही देखतै कालकाल मै सब पृथ्वी  
मडल कौ अपने बस करत जानि करिकै । मतिराम कहै  
है तेज अत्यन्त जगमगावै है, भावसिंह भूपाल मै दिनकर  
समान दिवान है सो नित्यप्रति अपनों उदय करतो भयो  
सब जगत कौ सुन्दर दिन करै है । उपमाशुद्धार है ॥

मनहरन ।

परम प्रवीन धीर धरमधुरीन दीनवन्धु सदा  
जाकी परमेशुर मै मति है । दुज्जन विहाल करि  
जाचक निहाल करि जगत मै कीरति जगाई जी-  
ति अति है । राव शत्रुशाल को सपूत पूत भाव  
सिंह मतिराम कहै जाहिँ साहिबी फवति है ।  
जानपति दानपति छाडा हिन्दुवानपति दिल्ली  
पति-दलपति बलाबन्धपति है ॥ ७६ ॥

अति चतुर है, धीर है धर्म की धूर कौ धारण करिबे  
वारो है, दोनन को सहायक है जाकी सदा नारायण मै

बुद्धि है, अर्थात् परमेश्वर में प्रीति है दुर्जनन को विगारिव  
 धारो हे, जाचकन को निहाल करिवेवारा है, जगत में  
 जस की प्रति जोति जगाई है । मतिराम कहै है राव शत्रु-  
 शान को सपूत पूत भावसिद्ध ह, ताको साहिबी सोहै है,  
 सुजान को पति है, दान को पति है, हाडान को पति है,  
 दिक्कोनाथकी फौजको पति है, बलाबन्ध पर्वतका पति है ।  
 सबैया ॥

मौजन सो मतिराम कहै कवि लोगन को  
 जिमि भोज बढावै । रोस किये रनमण्डल मै  
 खल-देह की खालनि भूमि मढावै ॥ रोभ्र खीज  
 में राव सता-मुत कीरति मै अति जोति चढावै ।  
 भाऊ दिवान गुरु सब भूपर भूपन दान कृपान  
 पढावै ॥ ७६ ॥

मतिराम कहै है मौजन से कवि लोगन को भोज  
 की तरह बढावै है अर्थात् भोजवत्कार बकसीस करै है  
 रोस करने पै सयाम मडल में दुष्टन को देह की खालनि  
 से पृथ्वी को मढावै है अर्थात् मारि के जमीन पै पटकि  
 दे है, रोभ्र में भी खोभ्र में भी राव शत्रुशाल को मुत है  
 सो कीरति मै अत्यन्त जोति चढावै है । दिवान भावसिद्ध  
 है सो सब धरा पै गुरु है राजान को दान कृपान पढावै  
 है अर्थात् वे सब इनको देखि के दान बीरता करै हैं ॥ ७७ ॥

दोहा ।

भावसिंह की रीझ को कविता भूषण-धाम ।  
 ग्रन्थ सुकवि मतिराम यह कीनो ललितललाम ॥  
 भावसिंह की रीझ के वास्ते कविता अलकारन की  
 घर उतम कवि मतिराम ने यह ललितललाम ग्रन्थ कियो ॥

### अथ अलंकार लक्षण दोहा ।

रस अर्थन तै भिन्न जो शब्द अर्थ के माहिँ ।  
 चमत्कार भूषण सरिस भूषण मानत ताहि ॥१॥  
 अथ अलंकारागकथन दोहा ।

मुख चषादि उपमेय हैं शशि भूषादि उपमान ।  
 समानार्थ वाचक लखौ धर्म एक गुण जान ॥२॥  
 चौपाई ।

है उपमेय विषय अरु वर्ण्य । उपमानतु वि  
 षयी रु अवर्ण्य ॥ प्रासगिक कह प्रस्तुत जानि ।  
 अप्रसग अप्रस्तुत मानि ॥ भेद विशेष्य विशेषण  
 भेदक । बहु व्यापक सामान्य अखेटक ॥ अल्प  
 व्यापक आहि विशेष । भूषण भाषक नाम अशेष ॥  
 दोहा ।

जाको वर्णन कीजिये सो उपमेय प्रमान ।  
 जाकी समता दीजिये ताहि कहत उपमान ॥

जिसकी वर्णन करिये सो उपमेय मानते हैं जिसकी  
वरावरी दीजिये तिसको उपमान कहते हैं ॥ ७६ ॥

उपमानकार मदन दोहा ।

जहा बनिये टुहनि की सम छवि को उल्लास ।

पडित कवि मतिराम तहँ उपमा कहत प्रकास ॥

जहा उपमेय उपमान को समान छवि को उल्लास व  
निये मतिराम कहै है तहा प्रगटही पडित कवि उपमा  
अलकार कहते हैं

उदाहरन मनोहर ।

एक रजपूत है दिवान भावसिंह जाको जग  
जुरें चौगुनो चढत चित चाव मै । शत्रुगाल नद  
को सुजस मतिराम यातै फैलत महीपति समाज  
समुदाव मै ॥ दिल्ली के दिनेश के प्रचड तेज  
आच लागे पानिप रह्यो न काहू भूपति तलाव  
मै । ऐसे सब खलक तै सकल भकिनि रही राव  
मै सरस जैसे सलिल दखाव मै ॥ ८१ ॥

एक दिवान भावसिंह रजपूत है जाको धित जग  
जुरे पै चौगुने चाव मै चढे है मतिराम कहै है याही तै  
शत्रुगाल क नद को सुजस है सो राजान के समाज के  
समूह मै फैले है । दिल्ली के सूर्य के प्रचड तेज की आच ल  
गने से कोइ राजा रूप तलाव मै पानिप नहीं रह्यो अथात्

सब राजा पातसाह से दबि गये, सब जगत में सपूर्ण लाज  
 सिमटि कै राव भावसिद्ध में ऐसै रह्यो जैसे समुद्र में पानी  
 अर्थात् पातसाह के तेज से सबकी मर्जाद राव में रह्यो जैमें  
 भीष्म में समुद्र में पानी रहै है इहा राव उपमेय समुद्र  
 उपमान को समान बर्णन है यातैं उपमा है ॥ ८१ ॥

सवैया ।

पानपियारो मिल्यो सपनें मै परी जब नै  
 मुक नीद निहोरें । कत को आइवो त्योंही  
 जगाय सखी कहै वैन पियूपनिचोरें ॥ यौं मति-  
 राम भयो हिय मै सुख बाल के बालम सौं हग  
 जोरें । ज्यों पट मै अतिही चटकीली चढे रग  
 तीसरी वार के बोरें ॥ ८२ ॥

सखी वक्ति सखी में पानप्यारो सपनें में मिल्यो जब  
 निहोरे से नैक नीद आइ तब तैसेही सखी ने जगाय के  
 पति क आइवे के बचन अमृत के निचोड सो कह्यो मति  
 राम कहै है बालम सौं नैव मिलतेही नायिका के हिये में  
 ऐसे सुख भयो जैसे तीसरी वार ३ डुबेवे सौं बन्ध म अत्यन्त  
 चटकदार रग चढे है अर्थात् नायिका कौं तीन वार सुख  
 भयो स्रष्ट्र में सखी के कहे में, देखे से, इहा नायिका उप  
 मेय पट उपमान को समान बर्णन है यातैं उपमा है ॥ ८२ ॥

पूर्णोपमा लक्षण दोहा ।

वाचक अरु उपमेय जहँ साधारण उपमान ।

पूरज उपमा कहत है तहँ मतिराम सुजान ॥ ८३ ॥

जहा बाचक और उपमेय साधारण धर्म उपमान ये  
 प्यारी होय मतिराम कहै है सुजान लोग तहा पूर्णोपमा  
 कहते है ॥ ८३ ॥

उदाहरण मनोहर ।

आलस वलित कोरै काजर-कलित मतिराम  
 वै ललित अति पानिप धरत हैं । सारस सरस  
 सोहैं सलज भहाम सगरव सविलास है मृगनि  
 निदरत हैं ॥ बरुनी सघन वक तीकन कटाछ  
 वडे लोचन रसान उर पीरही करत हैं । गाढे  
 ह्वै गडे हैं न निसारे निमरत नैन-वान से वि-  
 सारे न विसारे विसरत हैं ॥ ८४ ॥

आलस करिके वेषित कोर है काजरजुक्त है मतिराम  
 कहै है वै अति सुन्दर हैं पानिप को धारण करै हैं कमल  
 मों अधिक सोहै है लाजमहित हास्यमहित गर्वमहित  
 विलाससहित होय के मृगन को निरादर करै है बरुनी  
 सघन और बाकी है, कटाछ पैने है, लोचन वडे और रसान  
 है, सो उर में पीडा को करै है मजबूत होय के गडे है  
 निकासे पै निकसे नहीं है कामदेव के सर से बिप वारे है  
 भूलने से भूले नहीं जाते हैं । इहा नैन उपमेय कामवान  
 उपमान से बाचक विसारे धर्म है यातै पूर्णोपमा है ॥ ८४ ॥  
 दोहा ।

भौह कमान कटाछ सर समर-भूमि विचलै न ।  
 लाज तर्जेहू टुटुनि के सलज सूर से नेन ॥ ८५ ॥

भौह कमान हैं कटाक्ष सर हैं ठौर समर है तहा सैं  
 डिगै नही हैं लाज तजे पै भी नायक नायिका के नैन हैं  
 सो लाज सहित मूर से हैं अर्थात् निलज सिपाही भागै हैं  
 ससज भागै नही, इहा नैन उपमेय मूर उपमान, से वाचक  
 ठहरिवो धर्म है यार्तै पूर्णोपमा है ॥ ८५ ॥

अथ लुप्तोपमा लक्षण दोहा ।

होत एक है तीन कों इन चारिहु में लोप ।

तहाँ होत लुप्तोपमा वानत कवि मति-ओप ८६

उपमेय उपमान वाचक धर्म इन चारिन में सौं एक  
 को दीय को तीन को लोप होय तहा लुप्तोपमा होय है  
 मति की ओप से कवि वरनत हैं ॥ ८६ ॥

उदाहरण मनोहर ।

सत्ता को सपूत भावसिंह भूमिपाल जाकी  
 कित्ति जौन्ह करत जगत चित चाव है । कबिन  
 को मतिराम कामतरु ऐसी कर अगद को ऐसी  
 रण मै अडोल पाव है ॥ चद कैसी जोति चड-  
 कर कैसी तेज पुरहूत कैसी पुहुमी में प्रगट प्र-  
 भाव है । अरजुन पन मुनि मन धनपति धन जग  
 पति तन मृगपति रन राव है ॥ ८७ ॥

शत्रुशाल को सपूत भावसिंह भूमिपाल है जाकी को  
 त्ति चन्द्रिका है सो जगत के चित्त कों चाव करै है मति



राम कहै है जाकी हाथ कविन की कल्पवृक्ष सो है जाकी  
 पग रन में अडोल अगद को सो पग है, चन्द्रमा की सो  
 जोति है चडकर मूर्य कौसी तेज है इन्द्र को सो पृथ्वी पै  
 प्रगटही प्रभाव है अर्जुनवत पन है मृगिवत् मन है कुबेर  
 वत धन है अगपति सार्वभौम को सो तन है राव है सो  
 रन में मृगपति सिद्ध तुल्य है । यहा जोह किति जोह  
 उपमान कीर्ति उपमेय चितचाव करिबो धर्म है वाचक  
 नहीं यातै वाचकलुप्ता है कामतर उपमान कर उपमेय  
 एसो वाचक है धर्म नहीं यातै धर्मलुप्ता है । अगद को एसो  
 रन में अडोल पाव है यामें राव को पग उपमेय, एसो वा  
 चक अडोल धर्म है उपमान नहीं यातै उपमानलुप्ता है  
 चन्द्र कौसी जोति, चन्द्र उपमान, कौसी वाचक, जोति धर्म  
 है, उपमेय नहीं यातै उपमेयलुप्ता है इत्यादि जानौं ॥८७॥

मालोपमा लक्षण दोहा

जहाँ एक उपमेय कौ होत बहुत उपमान ।  
 तहाँ कहत मालोपमा कवि मतिराम सुजान ८८

जहाँ एक उपमेय कौ बहुत उपमान होय तहाँ मालो  
 पमा कहत है कविनोग सपूर्ण सुजान जे हैं ते ॥ ८८ ॥

उदाहरण—सवैया ।

तेज-निधाननि में रवि ज्यौ कविवंतन में  
 विधु ज्यौ कवि छाजै । सैलनि में ज्यौ सुमेर ल-  
 सै वर उच्चनि में कल्पद्रुम साजै ॥ देवनि में

मतिराम कहै मधवा जिमि मोहत मिद्ध-सम  
 जै । राव सतासुत भाज दिवान जहान के रा-  
 जनि मै इमि राजै ॥ ८६ ॥

तेजवानन में सूरज ज्यों छविवानन में जैसे चन्द्रमा  
 छवि साजै है पवतनि में जैसे सुमेर लसै है सुदर रुखन में  
 जैसे देवतरु राजै है मतिराम कहै है देवन में जैसे इन्द्र  
 सिद्धि सजै सोहत है रावशत्रुशाल को सुत दिवान भाव  
 सिद्ध है सो जगत के राजान में ऐसे राजै है । इहा एक  
 भावसिद्ध उपमेय है रविशशि सुमेर सुरतरु इन्द्र ये पाच  
 उपमान हैं यातैं मालोपमा है ॥ ८६ ॥

दोहा ।

रूपजाल नंदलाल के परि करि बहुरि छूटै न ।  
 खजरीट मृग मीन से ब्रजवनितन के नैन ॥८७॥

नदलाल के रूप के जाल में परि कै फेरि छूटै नहीं  
 खंजन हरिन सफरी से ब्रज वनितन के नैन हैं सो अर्थात्  
 जैसे जाल में परि कै खंजन मृग मीन नहीं छूटै तैसे कृष्ण  
 के रूप से ब्रजसुदरीन के नैन नहीं दूर होय । इहा नैन उप  
 मेय है खंजन मृग मीन उपमान हैं यातैं मालोपमा है ॥

अथ रसनोपमा लक्षण दोहा ।

जहाँ प्रथम उपमेय सो होत जात उपमान ।  
 तहाँ कहत रसनोपमा कविमतिराम सुजान ॥

जहा प्रथम उपमेय है सो उपमान हो तो जाय तह  
रसनोपमा कहत हैं मतिराम कहे है सुजान जे हैं ते ॥ ८१ ॥

उदाहरण मनोहर ।

काहू को न बडो कुल काहू को न बडो  
भाग देखे वर भूमिपाल सकल जहान के । काहू  
को न बडो हियो काहू को न बडो हाथ काहू  
के न बडे हाथी सुकवि बखान के ॥ कहे मति  
राम सब राजत अनूप गुन राव भावसिह बला  
वध सुलतान के । बग सम बखत बखत सम  
ऊचो मन मन सम कर कर सम करी दान के ८२

कोई को बडो कुल नहीं है कोई को बडो भाग नहीं  
है सब जगत के सुदर राजा देखे कोई को हियो बडो नहीं  
है कोई को हाथ बडो नहीं है कोई के हाथी बडे नहीं हैं  
सुकविन के बखान योग्य मतिराम कहे है सब गुन अनूप  
राजते है राव भावसिह बलाबन्ध के पातसाह के बंश स  
मान बखत है बखत समान ऊचो मन है मन समान ऊचे  
कर हैं कर सम दान के हाथो ऊचे हैं । यहा बग उपमेय है  
बखत उपमान है यातैं रसनोपमा है ॥ ८२ ॥

अनन्वय लक्षण दोहा ।

जहाँ एकही बात कौ उपमेयो उपमान ।

तहाँ अनन्वय कहत हैं कवि मतिराम सुजान ॥

जहा एकही वस्तु कौं उपमेय उपमान कहे तहा अनन्वयालकार कहति है मतिराम कवि कहे है सुजान जे है ते ॥ ६३ ॥

उदाहरण कवित्त ।

सुरजन कैसी सुरजनही मे साहिबी है भोज  
कैसी भोजमें अकड वड भाल मै । रतनेस कैसी  
रतनेस मै कहत मतिराम करतूति जीति जाके  
वारवाल मै ॥ गोपीनाथ कैसी गोपीनाथ मै स-  
पूतो भद्र शत्रुशाल कैसी रजपूती शत्रुशाल मै ।  
भूमि सब देखी और काहू मै न पेखी छवि भाव  
सिंह कैसी भावसिंह भूमिपाल मै ॥ ६४ ॥

सुरजनसिंह की सी साहिबी सुरजनसिंह मै ही है  
भोज कीसी अकड वड भागी भोज मैही ही, मतिराम  
कहे है रत्नश कैसी करतूति रत्नेश मै ही रही जाके खड्ड मै  
जीतिही गोपीनाथ की सी सपूतो गोपीनाथ मै भद्र शत्रु  
शाल कीसी रजपूती शत्रुशाल मै भद्र सब पृथ्वी देखी और  
कोई मै नहीं परपो, भावसिंह कीसी छवि भावसिंह मै है  
इहा सुरजन भोज रत्नसिंह गोपीनाथ शत्रुशाल भावसिंह  
येही उपमेय येही उपमान है यातै अनन्वयालकार है ॥

अथ उपमेयीपमान लक्षण -- दोहा ।

जहा होत है परस्पर उपमेयी उपमान ।  
तहँ उपमेयुपमान कहि वरनत सुकवि सुजान ॥

जहा परस्पर उपमेय उपमान होत है तहा उपमेय उपमान होत है तहा उपमेयुपमान कह करि सुजान ब नते है ॥ ८५ ॥

उदाहरण सबैया ।

वारण ते बकसै जिनकी ममता न लहै बढि विध्य समूचो । कित्ति सुधा दिगभित्ति पखारत चन्द-मरीचिन को करि कूचो ॥ राव सता-सुत कौ मतिराम महीपति क्यौ करि और पहुचो । भूपर भाज भुवप्पति को मन सो कर औ कर सो मन ऊचो ॥ ८६ ॥

ते हाथी बकसै हैं जिनकी बराबरी नही पावै बढि करिके सपूर्ण विद्याचल कीर्ति सुधा है सो दिशा भी ति नको धोवै है चन्द्रमा की किरनन को कूचो बनाय के अर्थात् बहुत फैलि रही है मतिराम कहै है राव शत्रुशाल के सुत को और राजा कैसे पहुचें पृथ्वी पे भावसिंह भू पति के मन सो ऊचो हाथ है हाथ सो ऊचो मन है अ र्थात् इन सम तृतीय नही यहा मन को कर की उपमा लगी करको मन की उपमा लगी याते उपमानोपमेया उकार है ॥ ८६ ॥

अथ प्रतीप लक्षण टोहा ।

जहँ प्रसिद्ध उपवर्न कौ पलटि कहत उपमेय । वरनत तहा प्रतीप हैं कवि जन जगत अजेय ॥

जहा प्रसिद्ध उपमान कौं पलटि कै उपमेय कहै तहा प्रतोप बरनते है जगत मै अनोत कविजन है ते ॥ ६७ ॥

उदाहरण कवित्त ।

जाकी खीज भूपति भिखारी से निहारे होत भूप से भिखारी जाकी रीझ पै सराह की । नृपति को थप्पन उथप्पन समर्थ शत्रुशालसुत करै करतूति चित चाह की । कहै मतिराम फौली चहुँ चक्क आन चहुवान कुलभानु भावसिह नरनाह की ॥ राव सखिवर उमराव कैसे पावै पातसाह सरि पावै बलावध पातसाह की ॥ ६८ ॥

जाके कोप से राजा है सो भिखारी से होत देखे, भिक्षुक है सो राजा से होत देखे जाकी रीझ ऐसी तारीफ की है राजान कौं बनावा बिगाहवा मै समर्थ है शत्रुशाल को सुत हे सो चितचाहो करतूति करै है मतिराम कहै है चारों ओर दुहाई फौली है चहुवान कुल के सूरज भावसिह राजा की राव की बराबरी पातसाह के उमराव कैसे पावै पातसाह समता पावै बलावध नाम पर्वत के पातसाह की । इहा पातसाह उपमान ही सो उपमेय कियो यातै प्रतीप है अधिक गुनवारी उपमान होय है यातै पातसाह उपमान मान्यो पतीप नाम उलटा की है सो पाची भेदन में उलटो चाहिये ॥ ६८ ॥

दूजो प्रतीप लक्षण दोहा ।

जहा और उपमान लहि वन्य अनादर होय ।  
तहाँ प्रतीपहि कहत हैं कवि कोविट् सब कोय ॥

जहां और उपमेय लहि याको अर्थ उपमान उपमेयता  
को पावे सुख्य उपमेय को अनादर होय तहां भी प्रतीप  
ही कहते है कवि पंडित सब कोई ॥ ९९ ॥

उदाहरण कवित्त ।

सागर में गहिराई मेरु में उचाई रति ना-  
यक में रूप की निकाई निरधारिये । दान देव-  
तरु में सयान सुरगुरु में प्रसाद गगनीर में सु  
कैसे कै विसारिये ॥ तरनि में तेज वरनत मति-  
राम जोति जगमगै जामिनीरमन में विचारिये ।  
राव भावसिंह कहा तुमही बडे हौ जग रावरे  
के गुन और ठौरहू निहारिये ॥ १०० ॥

समुद्र में गभीरता है, सुमेरु में उचाई है, कामदेव में  
रूप की निकाई मिथय है, सुरतरु में ज्ञान है, प्रसन्नता  
गंगा के जल में है सो कैसे करि भूलिये । मतिराम कहे  
है रवि में तेज वरनत है, निशापति में जोति जगमगावे  
है सो विचारि लीजे । हे राव भावसिंह कहा जगत में तु  
मही बडे हौ? आप के गुन और ठौर भी देखिये है, इहां  
सिधु सुमेरु काम सुरतरु गुरु गंगाजल रवि अग्नि पाठी

उपमान उपमेय भये मुख्य उपमेय भावसिंह को अनादर भयो यातैं द्वितीय प्रतीप है ॥ १०० ॥

द्वितीय प्रतीप लक्षण दोहा ।

जहाँ अनादर आन को उपावर्ण्य उपमेय ।

वरनत तहाँ प्रतीप हैं कीज सुकवि अजेय ॥ १०१ ॥

जहां उपमेय कौं उपमेय बर्नि कै आन जो उपमान है ताको अनादर होय तहा भो प्रतीप वरनत है कोई अ जीत सुकवि ॥ १०१ ॥

उदाहरण दोहा ।

जलधर छोडि गुमान कौं हौंही जीवनदानि ।

तोसो ही पानिप भग्यौ भावसिंह को पानि ॥

हे मेघ इस गरूर कौं छोडि कि मैही जीवन को दानी हौं, भावसिंह को दाय तो समान ही पानिप को भग्यो है इहा पानि उपमेय सें जलधर उपमान को अनादर है ।

प्रथ । प्रतीप नाम उलटा को है उलटो भये प्रतीप अलकार होय पहिले दूसरे भेदन में उपमान उपमेय भयो या उल टापन तैं प्रतीप भयो, तीसरा भेद में उपमेय उपमेय ही रह्यौ तो प्रतीप कैसे भयो । उत्तर । दूसरे भेद में उपमान से उपमेय को अनादर है यामें उपमेय है उपपाठकों अनादर है यह उलटो भयो यातैं प्रतीप है ॥ १०३ ॥

चतुर्थ प्रतीप लक्षण दोहा ।

जहाँ वर्ण्य सो और को उपमा वचन न होय ।

ताह कहत प्रतीप हैं कवि कीविद सब कोय ॥



जहा उपमेय की समान और की उपमान कहवो नहीं  
होय ताको भी प्रतीप कहत है कवि पंडित सब कोइ ।

उदाहरण कवित ।

विक्रम में विक्रम धरमसुत धरम में धुम्भ  
मार धीर में धनेस वारौ धन में । मतिराम क  
हत प्रियव्रत प्रताप में प्रबल बल पृथु पारथहि  
वारौ पन में ॥ शत्रुसाल नन्दरैया राव भावसिंह  
आजु मही की महीप सब वारौ तेरे तन में । नल  
वारौ नैननि में बलि वारौ वैननि में भीम वारौ  
भुजनि में करन करन में ॥ १०४ ॥

पराक्रम में विक्रमादित्य को वारौ, धर्म में युधिष्ठिर  
को वारौ धोरज में धुम्भमार को वारौ, धन में कुबेर को  
वारौ । मतिराम कहत है प्रबलप्रताप में प्रियव्रत को वारौ  
बल में पृथु को वारौ, पन में पारथ को वारौ है शत्रुसाल  
के नन्द राजान के राजा भावसिंह पृथ्वी के सब राजा तेरे  
तन में वारौ, नैननि में नल को वारौ बचननि में बलि को  
वारौ, भुजानि में भीम को वारौ, हार्यानि में करन को  
वारौ अर्थात् विक्रम, युधिष्ठिर, धुम्भमार, कुबेर, प्रियव्रत,  
पृथु पारथ वर्त्तमान सब राजा नल बलि भीम करन ये  
भावसिंह से नहीं इहा सब राजा उपमान है, ते उपमेय  
भये और भावसिंह मुख्य उपमेय को समतायोग्य नहो  
याते चतुर्थ प्रतीप है ॥ १०४ ॥

पचम प्रतीप लक्ष्य दोहा ।

कहा कछु न उपमान की यौ जहँ करत वखान ।  
तहो प्रतीपहि कहत हैं कीज कवि सज्जान ॥

कहा है? कछु नहीं है ऐसे जहा उपमान को बर्नन करै  
तहा प्रतीप ही कहत हैं कोड़े ज्ञानवान कवि ॥ १०५ ॥

उदाहरण कवित्त ।

दिन दिन दीने दूनी सम्पति बढत जाति  
ऐसो याकौ कछू कमला को वर वर है । हेम  
हाथी हीरा बकसि अनूप जिमि भूपनि को  
करत भिखारिन को घर है ॥ कहै मतिराम और  
जाचक जहान सब एक दानि शत्रुसालनन्दन  
को कर है । राव भावसिंह जू के दान की बडाई  
देखि कहा कामधेनु है कछू न सुरतरु है ॥

दोने से राज रीज दूनो सम्पति बढती जाती है इस  
तरह को याकौ लक्ष्मी को सुन्दर बरदान है, सुवर्ण घोडा  
हाथी हीरा बकसि के जैसे सुन्दर राजान को घर है तैसो  
भिन्न को घर करे है । मतिराम कहै है और सब जहान  
जाचक है, एक शत्रुसालनन्दन को हाथ दानो है राव  
भावसिंह को के दान को बडाई देखि के कामधेनु कहा  
है? कल्पवृक्ष कछू नहीं है । इहा कामधेनु सुरतरु उपमान  
है सो उपमेय भये और हाथ उपमेय के आगे कहा कछू  
न शब्द करि के व्यर्थ भये, यातैं पचम प्रतीप है ॥ १०६ ॥

पुन दोहा ।

काला द्वागनि कै पिये कहा धरें गिरि धीर ।  
विरहानल में जरत ब्रज वूडत लोचननीर ॥

दावानल के पिये से कहा भयो ? हे घोर पर्वत धारण  
करे से कहा भयो ? ब्रज है सो विरह की अग्नि में लरें हैं  
नेचन ३ जल में वूडे है अर्थात् विरहानल सो दावानल  
नहीं लोचन जल सो इन्द्रकोप जल नहीं इहां विरहानल  
नैन जल उपमेय है सो उपमान भये, दावानल इन्द्र जल  
कहा शब्द करि कै अर्थ दिखाये, यार्तै पद्यम प्रतीप है ॥

अथ रूपक लक्षण दोहा ।

वरनत विषयी विषय को करि अभिन्न तद्रूप ।  
अधिक हीन सम उक्ति सो रूपक त्रिविधि अनूप ॥

उपमान उपमेय कौं अभिन्न तद्रूप करि कै वरनन तें  
सुन्दर रूपक होय है सो अधिक न्यून सम उक्ति करि कै  
तीन भांति को है, अर्थात् उपमान उपमेय मिले पै रूपक  
होय है सो यदि दोनून में भेद नहीं रहै तब तौ अभेद रू-  
पक और एक उपमान उपमेय में मिल्यो रहै, एक उपमान  
न्यारो रहै सो तद्रूप इन दोनून के ये पट भेद हैं. अधिक  
अभेद १, न्यून अभेद २, सम अभेद ३, अधिक तद्रूप १,  
न्यून तद्रूप २, सम तद्रूप ३ ॥ १०८ ॥

समीक्ति अभिन्न रूपक कविता ।

मौज दरियाव राव शत्रुशाल तनै जाकी ज-

गत मैं सुजस सहज सीतभान है । विबुधसमाज  
 सदा सेवत रहत जाहि जाचकनि देत जो मनो-  
 रथ को दान है ॥ जाके गुनसुमन सुवास ते मु-  
 दित मन साच मतिराम कवि करत बखान है ।  
 जाकी छाँह बसत विराजै ब्रजराज यह भावसिंह  
 सोई कल्पद्रुम दिवान है ॥ १०६ ॥

यह दिवान भावसिंह सोई कल्पवृक्ष है, मीन जो दान  
 ताकी दर्याव ओ समुद्र राव शत्रुसाल ताकी पुत्र है, सुर  
 तरु समुद्र की सुत है, भावसिंह को और कल्पवृक्ष की सु  
 जस है सो सहजमें हो जगत में चन्द्रमा है अर्थात् दोनूनों  
 को जस बहुत है, भावसिंह को विबुध जो पंडितन के स-  
 मूह सदा सेवते रहते है, कल्पवृक्ष को विबुध जो देवतान  
 के समूह सदा सेवते रहते है दोनूनों जाचकन को मन  
 वाञ्छित दान देते है । भावसिंह रूप कल्पवृक्ष के गुन है  
 सोई भये सुमन फूल तिनको, सुवास ते मन प्रसन्न रहे है ।  
 मतिराम कवि है सो साचो बखान करे है, भावसिंह की  
 छाया में बसती भयो ब्रज को राजा जो पातशाह है सो  
 विशेष राजे है, कल्पवृक्ष की छाया में ब्रजराज कृष्णचन्द्र  
 विशेष राजे है । अर्थात् सत्यभामा के प्रागन में कल्पवृक्ष  
 है ताके नीचे कृष्णचन्द्र बैठे है । इहा भावसिंह उपमेय,  
 कल्पद्रुम उपमान में भेद नहीं यातें अभेद । सिधु शत्रुसाल

बिबुध मनोरथ दानि गुन सुमन वजराजादि पदन करि कै  
समता है यातैं समोक्ति भिन्न रूपक है ॥ १०८ ॥

हीनोक्ति अभिन्नरूपक उदाहरण दोहा ।

महादानि जाचकन कौ भाऊ देत तुरग ।  
पच्छनि विगिर विहग हैं सुगडन विगिर मतग ॥

महादानी भावसिद्ध जाचकन कौ तुरग देत है सो  
बिना पाखन के पत्नी हैं, और बिना सुडन के हाथी हैं ।  
इहा तुरग विहग मतगन में भेद नहीं, पक्ष सुड हीन हैं  
यातैं हीनोक्ति अभिन्नरूपक है ॥ ११० ॥

अधिकोक्ति अभिन्नरूपक उदाहरण सबैया ।

जग में अग कठोर महा मदनीर भरै भरना  
सर से हैं । भूलनि रग घने मतिराम महोरुह  
फूल प्रभा निकसे हैं ॥ सुन्दर सिन्दूरमण्डित कु-  
म्भनि गैरिकशृङ्ग उतग लमे हैं । भाऊ दिवान  
उदार अपार सजीव पहार करी वकसे हैं ॥

सग्राम में अग महा कठोर है, मदजन गिरै है सो  
भरना समान है । मतिराम कहे है भूलनि में घने रग है,  
सो हृद्यन के फूलनि की प्रभानि से कसे हैं, कुम्भनि में सु-  
न्दर सिन्दूरमण्डित है सो गेरुन के मिखर लसे है ।  
दोवान भावसिद्ध उदार ने बहुत हाथी

हैं । इहाँ हाथी पहारन में भेद ॥

अधिकोक्ति अभिन्नरूपक है ।

पहार व  
कम  
कता  
है यातैं

समोक्ति तद्रूपक उदाहरण सवैया ।

छाँह करै छितिमण्डल कौं सब ऊपर यौं  
मतिराम भये हैं । पानिप कौं सरसावत है स-  
गरे जग के मिटि ताप गये हैं ॥ भूमि-पुरन्दर  
भाज के हाथ पयोदनहीं बर काज ठये हैं । प-  
न्यिन के पथ रोकिये कौ धने वारिद बन्द ब्रथा  
उनये हैं ॥ ११२ ॥

भूमण्डल कौं छाया करै हैं । मतिराम कहै है याही  
तैं सबके ऊपर भये है, पानिप कौं सरसावते है सगरे ज  
गत के ताप मिटि गये है, भूमि के इन्द्र भावसिंह के हाथ  
है सोइ भये मेघ वनही सैं अच्छे काम हुये है पन्यिन के  
मार्ग रोकिये कौं बहुत मेघन के समूह ब्रथा उमडे है ।  
इहाँ भूमिपुरन्दर वा पुरन्दरहाथ पयोद वा पयोद यह ती  
तद्रूप छाह करिबो सब ऊपर पानिप सरसावतो ताप मि  
टाइवो इत्यादि समता है याते समोक्ति तद्रूप रूपक है ॥

हीनोक्ति तद्रूपरूपक उदा. दोहा ।

विप्रनि के मन्दिरन तजि करत ताप सब ठौर ।

भावसिंह भूपाल को तेज तरनि यह और ॥

वाच्यणन क मकाननि कौं छोड़ि के सब ठौर ताप करै  
है, भावसिंह भूप को प्रताप रवि और है, इहाँ एक तेज  
तरनि एक और तरनि यह ती तद्रूप द्विधरन है ताप  
नहीं करै यह हीनता है याते हीनोक्तितद्रूपरूपक है ॥

अधिकोक्ति तद्रूपरूपक उदा० कवित्त ॥

दूरि भयो अधरम अम्यकार अति सब मुदित  
निहारि द्विज-चक्रमि की गोत है । वैरिवधू वदन  
कलानिधि मलीन भयो सकल सुखानौ परपा-  
निप की सोत है ॥ कहै मतिराम राव शत्रुसाल-  
नन्दन की प्रबल प्रताप पुज आतप उदोत है ।  
भावसिंह भानु बलाबन्ध को दिवान तपै आठऊँ  
पहर दुपहर दिन होत है ॥ ११५ ॥

सब अधर्म रूप अम्यकार है सो अत्यन्त दूरि भयो,  
देखि कै द्विजरूप जो चक्रवाक है तिनकी गन मुदित भयो  
अरि तियन की मुखरूप चन्द्रमा है सो मलीन भयो शत्रु  
रूप पानी की सोत है सो सब सूखि गयो । मतिराम कहै  
है राव शत्रुसाल के सुत की प्रबलप्रतापगन रूप आतप की  
उदोत रवि है बलाबन्ध को दिवान राव भावसिंह तपै है,  
सो आठौँ पहर दुपहर दिन होय है । इहाँ प्रताप को आ-  
तप अथवा आतप उदोत रवि दूसरी आतप रवि यह ती  
तद्रूप आठौँ पहर उदित रहियो अधिकता है याँतँ अधि-  
कोक्ति तद्रूपरूपक है ॥ ११५ ॥

अथ परिणाम लक्षण दोहा ।

विषयी विषय अभेद मौ जहाँ करत कलु काज ।  
वरनत तहँ परिनाम हैं कवि कोविद सिरताज ॥

उपमान उपमेय अभेद सौं जहाँ कछु काम करै तहा  
परिनाम बरनते हैं कवि पंडित सिरताज हैं ॥ ११६ ॥

उदाहरण कवित्त ।

वाजत नगारे जहाँ गाजत गयन्द तहाँ सिंह  
सम कीनो वीर सगर विहार हैं । कहे मतिराम  
कवि लोगनि कौं रीझि करि दीने ते दुरद जे  
चुवत मदधार हैं ॥ शत्रुसासनन्द राव भावसिंह  
तेग त्याग तोसे और औनि तन आजु न उदार  
हैं । हाथिनि विदारिवे कौं हाथ है हथ्यार तेरे  
दारिद विदारिवे को हाथिये हथ्यार हैं ॥ ११७ ॥

जहाँ नगारे वाजते हैं हाथी गाजते हैं, हे वीर तहाँ  
सगाम में सिंह समान विहार किये हैं । मतिराम कहे हैं  
कवि लोगनि कौं रीझि करिके वे हाथी दिये जे मद की  
धारा चुवते हैं, हे शत्रुसास के नन्द राव भावसिंह तेग और  
त्याग में आज तो समान उदार पृथ्वीतल में और नहीं है,  
हाथी के चोरिवे कौं तेरे हाथ में हथ्यार हैं, दारिद दूरि  
करिवे कौं हाथीही हथ्यार हैं । इहाँ हाथी उपमान नै ह  
थियार उपमेय हीय कौं दारिद विदारिवे की क्रिया करी  
यातें परिणाम है ॥ ११७ ॥

अथ द्विविध उल्लेख लक्षण दोहा ।

कै बहुते कै एक जहँ एकहि को उल्लेख ।

बहुत करत उल्लेख तहँ कहत सुकवि सविशेष ॥



जहाँ एकही कौ बहुत जने बहुत करिके बर्नन करे  
 सो प्रथम भेद और जहाँ एकही कौ एक जनो बहुत करि  
 के बरने सो दूसरो उल्लेख ॥ ११८ ॥

प्रथमोदाहरण दोहा ।

कविजन कल्पद्रुम कहैं ज्ञानी ज्ञानसमुद्र ।  
 दुरजन के गन कहत हैं भावसिंह रन-रुद्र ॥

कवि लोग कल्पद्रुम कहते हैं ज्ञानी है सो ज्ञान की  
 समुद्र कहते हैं, दुर्जन के समूह कहते हैं कि भावसिंह स  
 ग्राम में शिव है । इहाँ कवि ज्ञानी दुर्जन बहुतनि नै एक  
 भावसिंह को बडाई करी यातैं उल्लेख है ॥ ११९ ॥

द्वितीयोदाहरण कवित्त ।

सत्ता को सपूत राव सगर को सिंह सोहै जैत-  
 वार जगत करिगी किरवान को । कहै मतिराम  
 अवलम्ब राजै धरम की महोदधि मरजाद मेरु  
 परिवान को ॥ कीरति की कौमुदी सु छार्द छिति  
 छोरनि लौ विमल कलानिधि है कुल चहुवान  
 को । दानि-कल्पद्रुम सुजानमनि भावसिंह भानु  
 भूमितल को दिवान हिटुवान को ॥

शत्रुशाल को सपूत राव है सो सग्राम को सिंह सोहै  
 है, जग की जीतिवेवारो है, कठिन तरवारि को है । मति  
 राम कहै है धर्म की अधार राजै है, मर्यादा को समुद्र है,

प्रमाण को सुमेरु है, कीरति चाँदनी है सो भूमि के औरन  
 तार्ई छाया रही है, चहुवान कुल को निर्मल चन्द्रमा है ।  
 दानोन में कल्पवृक्ष है, सुजाननि में मनि है, भावसिद्ध है  
 सो भूतल को रवि है, हिन्दुस्तान को दिवान है । इहाँ  
 भावसिद्ध एक कौं बहुत भँति करि बन्हीं यातें द्वितीय  
 उल्लेख है ॥ १२० ॥

बनिताभूषण प्रादुर्भूतमनोभवाद्द्वितीयउल्लेख उदा दीडा ।  
 कामकलान भरी तिया रति में रति दरसाय ।  
 कृवि में गिरिजा गुन गिरा पालत रमा लखाय ॥

अथ सुमरन भ्रम सदेह लक्षण दीडा ।

एक वस्तु लखि आन को सुमरन भ्रम सन्देह ।  
 वरनत भूपन तीन विधि जे कविजन भतिगेह ॥

एक वस्तु कौं देखि कै और वस्तु को सुमरन भ्रम स  
 देह होय तथा येही तीन प्रकार अलकार बरनते है जे  
 कवि लोग बुद्धि के मदन है, अर्थात् स्मृति विद्यमान होय  
 सो स्मृतिमान भ्रान्ति विद्यमान होय सो भ्रान्तिमान स  
 देह हाय सो सदेहालङ्कार है ॥ १२१ ॥

सुमरन उदा० दीडा ।

सोय सग सुख जागि दुख लहि समुभ्यौ निरधारा  
 छीन पुन्य सुरलोक ते लेत अभनि अवतार ॥

स्वप्न में पति सग सोय कै सुख पाय कै केरि जागि कै

दुख पाय के नियय समुभयो, छीन पुन्य भए पै स्वर्ग सँ  
भूमि में जन्म लेते हैं, । इहां सयोग सुख, वियोग दुख सँ  
स्वर्गवास श्री भूमिवास को सुमरन भयो, यातैं सुमरन है ।

भ्रम उटा० दोहा ।

उँजियारी मुख द्रु की परी उरोजनि आनि ।  
कहा अँगोछति मुगुध तिय पुनिर चन्दन जानि॥

मुखचन्द की घादनी कुचनि पै आनि परी है । है  
अजान तिया चन्दन जानि के बारवार काँई पोंछै है ? इहा  
उजियारी को देखि के चन्दन को भ्रम भयो यातैं भ्रमा  
लहार है ॥ १२४ ॥ पुन दोहा ।

आभा तरिवन-लाल की परी कपोलनि आनि ।  
कहा छपावति चतुर तिय कन्त-दन्त छत जानि॥

तरौना के लाल की प्रभा गालनि पै आनि परी है,  
है चतुर तिय पति के दन्तन का घाव जानि के काँई दु  
रावै है? । इहा लाल की आभा देखि के दन्तछत को भ्रम  
भयो यातैं भ्रम है ॥ १२४ ॥

सवैया ।

गान कियो सपने में सुहागिन भौंहे चढीं  
मतिराम रिसौहे । बातैं वनाय मनाय लई मन-  
भावन कण्ठ लगाय हसौंहे ॥ येते अचानक जागि  
परी सुख ते अँगिरात उठी अलसौंहे । लालन

के लखि लोचन लाज ती हीत न बाल के लोचन  
सौहैं ॥ १२५ ॥

सुहागनि ने सपना में मान कियो, मतिराम कहे है  
रिसौहे भौहैं चढो मनभावन नै बात बनाय के मना करि  
के हँसिके कठ से लगा लोनी इतने में अचानक हो जागि  
के मुख से अलसाई हुई अगसाई लेती ठो, कृष्ण के नैन  
लाजते हुए देखि के बाल के लोचन समुख नहीं होते हैं।  
यहा स्वप्न में नायक को सापराध देखि जागे पै भी भ्रम  
भयो, यातें भ्रम है अथवा उत्तमा नायिका ने स्वप्न के मान  
को जागिबे को मान मान्यो यातें भ्रम ॥ १२५ ॥

सदेह उदा० दोहा ।

परचि परै नहि अरुण रँग अमलअधरदलमाभ ।  
कैधौं फूली दुपहरी कैधौं फूली साभ ॥१२६॥

लाल रंग पहिचानि नहीं परै निर्मल अधर रूपी पक्ष  
में, कै जानै दुपहरी फूली है, कै सभ्या फूली है, इहा दुप  
हरी सभ्या में सदेह रह्यौ, यातें सदेहालहार है ॥१२६॥

कविस ।

वानी को बसन कैधौं वात के विलास डोलै  
कैधौ मुखचन्द-चारु-चन्द्रिका प्रकास है । कवि  
मतिराम कैधौ काम को सुजस के पराग पुत्र  
प्रफुलित सुमन सुवास है ॥ नाक नधुनी के गज-

मोतिन की आभा कैधों टेहवन्त प्रगटित हिं  
को हुलास है । सीरे करिवे कौं पियनेन घनसा  
कैधों वाल के वदन विलसत मृदुहास है ॥

कै जानै सरस्वती की वक्ष पवन के जोर से डोने है  
कैधों मुखचन्द्रमा की मुन्दर चादनी को उजास है, मति  
राम कहे है कैधों कामधेव को सुजस है कै पुष्परज को  
पुञ्ज है, तामें फूले फूलनि की सुवास है, नासिका की नय  
के गजमोतीन की आभा है, कैधों हिया को हर्ष टेहवन्त  
प्रगट भयो है कै जानै पीतम के नेत्र सीरे करिवे कौं घन  
सार है, कै नायिका के मुख में कोमल हासी विशेष लसे  
है, इहा हासी है कि और वस्तु है, निश्चय नहीं भयो, यातें  
संदेहालकार है ॥ १२७ ॥

वनिताभूषण गाढ तारुण्या सदेह उदा० दोहा ।

वक दीठि दृग मद्भरे कुच नितम्ब लखि पीना।  
अलि मानत यह रति रमा उमा गिरा कि प्रवीन॥

अथ शुद्धापद्धति लक्षण दोहा ।

औरै को आरोप करि साँच छपावत धर्म ।  
शुद्धापद्धति कहत हैं जे प्रवीन कविकर्म ॥

और कौं ठहराय कै साध धर्म कौं छपावे, तहा शुद्धा  
पद्धति कहते हैं । जे कवि काम में प्रवीन हैं ते ॥ १२८ ॥

उदाहरण कवित्त ।

पारावार पीतम कों प्यारी छै मिली है गंग  
वरनत कोऊ कवि कोविद् निहारि कै । सो तो  
मतो मतिराम के न मनमानै निजमति सो क  
हत यह बचन विचारि कै । जरत वरत बडवा-  
नल सौं वारिनिधि बीचिनि के सोर सौं जनावत  
पुकारि कै । ज्यावत बिरचि ताहि प्यावत पियूष  
निज कलानिधि मण्डल कमण्डल तै टारि कै ॥

समुद्ररूपी पीतम को गंगा है सो प्यारी होय कै मिली  
है कोई पंडित देखि कै वरनत है, सो मत तो मतिराम के  
मन में नहीं आवै अपनो बुद्धि सौं विचारि करि कै यह ब  
चन कहत है वा बडवाग्नि सौं जलती दुखित होय कै स  
मुद्र है सो तरगनि के शब्द सौं पुकारि कै जनावै है । ताको  
ब्रह्मा है सो जिवावै है और प्यावै है, असृत अपने चन्द्रम  
डल रूप कमडल सै गैरि कै । इहा सत्य गंगा को असृत  
ठहरायो यातैं शुद्धापद्मति ॥ १२९ ॥

अथ हेत्वपद्मति लक्षण दोहा ।

युक्ति सहित मतिराम जँह शुद्धापद्मति होय ।  
हेतु अपद्मति कहत हैं तहा सुकवि सब कोय ॥

मतिराम कहे है यह शुद्धापद्मति युक्ति समेत होय तहा  
हेतुअपद्मति कहते हैं । सुकवि सब कोई ॥ १३० ॥

एदाहरण दोहा ।

घालवदन-प्रतिबिम्ब विधु उयो रघौ तिहि संग ।  
उयो रहत भव रजनि दिन तपन तपावत अग ॥

चन्द्रमा बाल के मुख की प्रतिबिम्ब ही सो ताही बिम्ब  
के साथ रघौ, भय राति दिन रवि उयो रहे हे सो भगनि  
को तपावै हे । इहा सत्य चन्द्रमा को प्रतिबिम्ब युक्ति सो  
तपन ठहरायो, यातैं हेतपन्हुति हे ॥ १३१ ॥

परयस्तापन्हुति लक्षण दोहा ॥

धर्म और मैं राखिये धर्मो साचु कपाय ।  
परयस्तापन्हुति कहत ताहि बुद्धि सरमाय ॥

साचो धर्मो को धर्म कपाय के और मैं राखिये ताको  
परयस्तापन्हुति कहते हैं बुद्धि बढाय के ॥ १३२ ॥

उटाहरण दोहा ।

कीमल कमलन से कहै तिन्है न नैक सयान ।  
होत पार लागत हिये नैन मैन के वान ॥ १३३ ॥

कमल से नरम कहते हैं, तिनको कुछ स्यानप नही  
हे लगतेंही हिया में पार हो जाते हैं, सो नैन तो मैन के  
तीर हैं । इहा सत्य नैनन को हिया में पार होबो धर्म,  
कामवान में ठहरायो यातैं परयस्तापन्हुति हे ॥ १३३ ॥

भ्रान्तापन्हुति लक्षण दोहा ।

जहाँ और शङ्का भये करत भूठ भ्रम दूरि ।  
भ्रान्तापन्हुति कहत है तहा सुकवि मतिभूरि ॥

जहा और कौ शका भये पै झूठे भ्रम कौ दूर करै तथा  
भ्रातापद्भुति कहते हैं बड़ी मतिवारे सुन्दर कवि ॥

सदाहरण सबैया ।

सेवत हैं विबुधै मतिराम सदा गुरु-वैन प्र-  
मान कौ मान्यौ । कोप किये सब भूतल के अरि  
भूभृत पक्षिनि को गन भान्यौ ॥ पानिप पूरत वा-  
रिद हाथनि ताप हग्यौ जग में जस ठान्यौ । तै  
समुझे पुरहूत के रूपहि में प्रभु भाऊ दिवान व-  
खान्यौ ॥ १३५ ॥

कोई ने कोई सौ भावसिद्ध के गुणवर्णन कछो, सुनने  
वाले नै इन्द्र के गुण समुझ्यो । इन्द्रपक्ष अर्थ यों है, मति  
राम कहै है सदा विबुध देवता ही सेवते है, सदा गुरु ह  
हृष्टति को बचन सत्य करिकौ मान्यो है रोस करे पै सपूर्ण  
पृथ्वीतल के बैरो भूभृत पर्वत तिनको पाखन को समूह  
काटनो, वारिद मेघ रूप हाथभ सौ पानी गेरै है ताप दूर  
करै है, जगत में जस रोष्यो है या भाति अर्थ समुझि के  
सुननेवाले नै इन्द्र जान्यो, तब कहनेवाला कहै है तैने  
इन्द्र के रूपन कौ समुझे मैने समर्थ भावसिद्ध दिवान ब्रह्म्यो  
है, भावसिद्ध पक्ष मै अर्थ यों है मतिराम कहै है । सदा  
विबुध पंडित सेवते है, सदा गुरु जो मन्त्रविद्यादातादि को  
बचन सत्य करि कौ मान्यो है कोप करे पै सपूर्ण पृथ्वीतल



को बैरी भूभृतः जो राजा तिनके पक्षीन को समूह काटनी  
सकल्पदाता है सो हाथन से सकल्प पानी कौं पूरे है अर्थात्  
दान बहुत करे है, ताप जो कष्ट है सो दूर करे है जगत  
में जप्त करे है इहा इन्द्र कौं समुझने वाले को भ्रम दूर  
कखो यातें आत्मापन्हुति है ॥ १२५ ॥

छेपकापन्हुति लक्षण दोहा ।

जहाँ और की शक ते साँच छपावत बात ।

छेकापन्हुति कहत है तहाँ बुद्धि अवदात ॥ १२६ ॥

जहा और की शका से साँची बात कौं दुरावे, तथा  
छेकापन्हुति कहते हैं, उज्ज्वल मतिवाले ॥ १२६ ॥

उदाहरण दोहा ।

ओठ खडिबे कौं अस्थी मुख सुवाम रस-रत्त ।

स्यामरूपनंदलालअलि नहि अलिअलि उनमत्त ॥

अधर खडित करिबे कौं अडि रछी है, मुख की सु  
गन्ध क रस मै लीन होय के स्यामरूप है तब और सखी  
नै सुनि के कही, है अलि नन्दलाल है नहि सखि उनमत्त  
भ्रमर है । यहा सखी की शका से साँची बात दुराई यातें  
छेकापन्हुति है ॥ १२७ ॥

पुन सबैया ।

पावस भीति वियोगिनी वालनि यौ समुभाय  
सखी सुख साजैं । जेति जवाहिर की मतिराम

नही सुर चाप छिनौछवि छाजै ॥ दन्त लसै वक  
पांति नही धुनि दुन्दुभी की न घने घन गाजै ।  
रीभि कै भाऊ नरिन्द दिये कविराजनि के गज-  
राज विराजै ॥ १३८ ॥

वर्षा सें डर्पी हुई विरहिनी नायिकान कौं ऐसे समु-  
भाय कै सखी हैं सो सुख भाजै हैं भरतिराम कहै है । हा-  
थीन के लगे हुई जवाहिरन की जोति है, मुरचाप और  
छिनौछवि बीजुरी नहीं छाजै हैं, हाथीन के दन्त लसै है,  
बकुलान की पक्ति नहीं है धुनि दुन्दुभी की है घने मेघ  
नही गाजै हैं अर्थात् कविराजन कै भावसिद्ध के दिये घने  
हाथी है जिनमें कितने ही हाथीन पर लगारे बजते हैं,  
रीभि कै भावसिद्ध राजाजै दिये ते कविराजन के गजराज  
विराजै हैं । इहा सत्य पावस कौं हाथी ठहराये यातै के  
कापन्दुति है ॥ १३८ ॥

छलापन्दुति लक्षण दोहा ।

जहँ छल आदिक पदनि सौं साँच छपावत वाता  
तहँ छलपन्दुति कहत है कविजनमति अवदात ॥

जहा छल व्याज कौतवादि पदनि सौं साँची बात कौं  
छपावै तहा छलापन्दुति कहते हैं उज्जल मति के कवि  
सोम जै हैं ते ॥ १३९ ॥

उदाहरण कवित्त ।

सुन्दरवदनि राधे सोभा की सदन तेरो व-  
दन बनायो चारिवदन बनाय कै । ताकी रुचि  
लैन कौ उदित भयो रैनपति मूढमति राख्यो  
निज कर वगराय कै ॥ मतिराम कहै निसिचर  
चोर जानि याहि दीनी है सजाइ कमलासन  
रिमाय कै । रातौं दिन फेरै अमरालय के आस  
पास मुख में कलक मिसि कारिख लगाय कै ॥

हे सुन्दरवदनी राधे चतुर्मुख नै छवि को घर सुधारि  
कै तेरो मुख बनायो ताकी कांति लेवा कौ निसानाय  
उदित भयो, मूढमति नै अपने कर फेलाय राखे मतिराम  
कहै है, याकौं रात्रिचर चोर जानि कै कमलासन नै रोस  
करि कै सजा दीनी है, रात दिन देवालय कै भोर पास  
फेरै है मुख में कलक के मिस करिके कासौष लगाय कै ।  
इहा मिस पद करि कै कलक कौ कारिख उहरायो यातै  
छलापहुति ॥ १४० ॥

अथ उत्प्रेक्षा लक्षण दोहा ।

जहँ कीजे सभावना सी उत्प्रेक्षा जानि ।

वस्तु हेतु फल रूप ते ताकी त्रिविधि वखानि ॥

जहाँ सभावना करिये सो उत्प्रेक्षालकार जानो, वस्तु  
हेतु फल रूप सँ ताको तीन प्रकार की वखानो अर्थात्

सभावना नाम तर्क और डील बनायवे को है वस्तु में वस्तु को तर्क करै सो वस्तुप्रेक्षा अहेतु कौं हेतु ठहराय सभा बना करै सो हेतुप्रेक्षा अफल कौं फल ठहराय सभावना करै सो फलोप्रेक्षा ॥ १४१ ॥

दोहा ।

एक उक्तविषया कही अनुक्तविषया और ।  
बहुरि भेद द्वै वस्तु में जानहु कवि सिंग मौर ॥

फेरि एक उक्तविषया कही है और अनुक्तविषया कही है ये दोय भेद वस्तुप्रेक्षा में है कविन के मिरमौर तुम समुझो अर्थात् जाको तक करी होय जामैं तर्क करी होय ये दोनों हीय सो उक्तविषया वस्तुप्रेक्षा, जाको तर्क करी सो तौ होय जामैं तर्क करी सो न होय, यह अनुक्तविषया वस्तुप्रेक्षा है ॥ १४२ ॥

दोहा ।

एक सिद्धविषया कही असिद्धविषया और ।  
भेद हेतु फल दुहुनि मैं द्वै कहियत मति दौर ॥

एक सिद्धविषया कही है और असिद्धविषया कही है, हेतु फल दोनोन में ये द्वै भेद मति की दौड से कहिये है, अर्थात् अहेतु कौं हेतु ठहरावे सो सिद्ध होय तो सिद्धविषया हेतुप्रेक्षा असिद्ध होय तो असिद्धविषया हेतुप्रेक्षा अफल कौं फल ठहरावे सो सिद्ध होय तो सिद्धविषया फलोप्रेक्षा, असिद्ध होय तो असिद्धविषया फलोप्रेक्षा जाकी

सभावना करिये सो सभाव्यमान, जामें सभावना करिये  
 सो विषय, और आस्यद कहिये नामार्थ यह है कही है  
 विषय जिसमें सो उक्त विषया, नहीं कही विषय जिसमें  
 सो अनुक्तविषया, सिद्ध है विषय जिसमें सो सिद्धविषया,  
 असिद्ध है विषय जिसमें सो असिद्धविषया, इसी तरह  
 उक्तास्यदा अनुक्तास्यदा सिद्धास्यदा असिद्धास्यदा जानिये ।

उक्त विषयावस्तुप्रेक्षा उदाहरण - कवित्त ।

वासव की राजै रुचि ललित वसन्त खेल खि-  
 लत दिवान बलाबन्ध सुलतान मै । कहै मतिराम  
 कवि मृगमद पङ्क छवि छावत फुलेल औ गुलाब  
 आपगान मै ॥ कुकुम गुलाल घनसार औ अवीर  
 उडि छाव रहे सघन अवनि आसमान मै । मेरे  
 जानि रावभावसिंह की प्रताप जस रूप धरें फैलि  
 रह्यौ दशरू दिसान मै ॥ १४४ ॥

इन्द्र की सो कान्ति सोहे है सुन्दर वसन्त को च्याल  
 खेलत दिवान बलाबन्ध का पातसाह मै मतिराम कवि  
 कहै है कस्तूरीका कीच को छवि छावै है फुलेल और  
 गुलाब की नदीम मै केसर गुलाल कपूर और अवीर उडि  
 के बहुत छाव रहे हैं भूमि आकास मै मेरी जानि मै राव  
 भावसिंह की प्रताप जस है ते रूप धरें हुये दशौ दिगान  
 मै फैलि रहे हैं इहा कुकुम गुलाल और कपूर अवीर मै

प्रताप जस को तर्क है और दोनों विद्यमान हैं यातें उक्त विषया वस्तुप्रेक्षा है ॥ १४४ ॥

अनुक्तविषया वस्तुप्रेक्षा उदाहरण— कविता ।

जगमग जीवन अनूप तेरो रूप चाहि रति ऐसी रम्भा सी रमा सी विसराइये । देखिवे कौं प्रानप्यारी पास प्रानप्यारी खरो घूँघट उघारि नैकु बदन दिखाइये ॥ तेरे अंग अंग में मिठाई औ लुनाई भरी मतिराम कहत प्रगट यह पाइये । नायक के नैननि में नाइये सुधा सो सब सौतिन के लोचननि लौन सो लगाइये ॥ १४५ ॥

जगमगाते हुये तेरे जीवन रूप कौं देखि के रति सो, रमा सो, लक्ष्मी सो भूलिये है, प्रानप्यारी प्रानप्यारी है सी देखिवे कौं नजोक जमो है घूँघट खोलि के नैक मुख दिखाइये तेरे अंग अंग में मिठाई और नमकीनी भरो है । मतिराम कहे है यह प्रगट पाइये है, नायक के नैननि में अमृत सो गेरिये है, सब सौतिन के नैननि में स्वप्न सो लगाइये है । यहा निकाई वस्तु में मिठाई खारापन को तर्क है और निकाई नहीं कही यातें अनुक्तविषयावस्तुप्रेक्षा है। अथवा नायक के नैननि को सुख हो वामें सौतिन के नैननि को दुख हो वामें सुधा नावा लौन समावा को तर्क है और सुख दुख होवो नहीं है । यातें अनुक्तविषया वस्तुप्रेक्षा ॥ १४५ ॥

सिद्धविषया हेतुत्वे चा उदाहरण कथित ।

प्रवल विलन्द वर वारन के दन्तनि सौ वैरिन के वाँके वाँके टुरग विदारि हैं । कहै मति राम दीने दीरघ दुरद्वन्द मुदिर से मेदुर मुदित मतवारे हैं ॥ तेग त्याग राजत जगतराव भावसिह मेरे जान तेरे गज याही ते पियारे हैं । दुज्जन के दल कविलोगनि के दारिदनि नीकै करि गजन की फौजनि सौं मारे है ॥ १४६ ॥

बलवान लँचे सुन्दर हाथीन के दाँतनि सौ रिबूनि के टेढे टेढे गट टहाये हैं । मतिराम कहै है बडे हाथीन के गम दिये, जे मेघ से सचिह्नन पसव मस्त हैं हे राव भावसिह तेग त्याग जगत मे राजै है, मेरो जानि में तेरा हाथी इसी से प्यारा है, वैरिनि की फौजनि को कविजननि के दारिदन को अच्छे करि के हाथीन की फौजनि सौं मारे हैं । इहाँ गज प्यारे होधा की हेतु दल दारिद मारिवो नहीं, ताको हेतु कियो, और दलदारिद मारिवो सिह है, यातै सिद्धविषयाहेतुत्वेचा है ॥ १४६ ॥

अथ सिद्धविषया उदाहरण सबैया ।

मोचन लागी भुराई की वातनि सौतिनि सोच भुरावन लागी । मजन के नित न्हाय के अग अँगोछि के वार भुरावन लागी ॥ मोरि मुखै

मुसकाय के चारु चित्तें मतिराम चुरावन लागी।  
ताड़ी सकोच मनो मृगलोचनि लीचन लोल दु-  
रावन लागी ॥ १४७ ॥

भोलायन की बातनि कौं छोडया लगी सीतिनि की  
तरफ का सोच कौं भूलने लगी, मसलि के रोजीनः न्हाय  
के अगनि कौं अँगोछि के केस सुखाने लगी है । मजन को  
अर्थ मसलिवो अथवा मजन न्हाय पुनिरुक्त भासै तौ नाय  
पाठ रहै तब यौ अर्थ करिये रोजीनः अगनि कौं नवाय के  
मजन खान करि के वारनि कौं पीछि के सुखाने लगी है,  
अर्थात् पहिले शुकु के नहीं न्हायै ही अब आज से नय  
के न्हाती है पहिले वार नहीं पीछती अब पीछती, जोव  
नागम से मुख मोरि के मुसकाय के मतिराम कहै है सु-  
न्दर चित्त कौं चोरने लगी है मानौ ताड़ी सकोच से मृग  
नैनो है सो चचल नैननि कौं छिपाने लगी है । इहाँ नेन  
दुरावा को हेतु चित्त चोरिवो मही ताकौं हेतु ठहरायौ  
और चित्त चोरिवा असिद्ध है यातै असिद्धविषया हेतुप्र-  
सा है ॥ १४७ ॥

अथ सिद्धविषया फलोपेक्षा सदाहरण सबैया ।

वारनि धूपि अगारनि धूपि के धूम अंध्यारी  
पसारी महा है । माननचन्द्र समान उग्यौ मृदु  
मजु हँसी जनु जौन्ह-छटा है ॥ फैलि रही मति-



राम जहाँ तहाँ दीपनि दीपनि की परभा है ।  
लाल तिहारे मिलाप कौं बाल सु आज करी  
दिनही मै निसा है ॥ १४८ ॥

दारनि कौं अथवा ( वारनि कौं ) धूपि कै महसनि  
कौं धूपि कै, धुवां को अंधियारी बहुत फेलाई है, मुख है  
सो चन्द्रमा के समान उज्ज्वी, कोमल और निर्मल हांसी है  
सो मानौ चांदनो की छवि है मतिराम कहे है जहाँ  
तहाँ जगता दियान की प्रभा फैलि रहो है । हे लाल तु  
न्हारे मिलाप कौं बाल ने सुन्दर आज दिनही मै राति  
करी है । इहाँ दिन को राति करि वाको फल पति की  
मिलाप नहीं, ताकौं फल ठहरायो, और राति करिवो  
सिंह है यातैं सिंहविषयाफलोत्प्रेक्षा है ॥

असिंहविषया फलोत्प्रेक्षा उदाहरण दोहा ।

मनौ भजी अरिः तियनि कौं पकरन को दृढदाप ।  
भावसिंह की दिसनि मै फैलत प्रबल-प्रताप ॥

मानो भागी हुई रिपुन की स्त्रीनि को पक्षडवा को  
मजबूत गर्ब करि कै भावसिंह को प्रबल प्रताप दिसान मै  
फैले है । इहाँ प्रताप के फैलवा की फल रिपु स्त्रीन को  
पकरिवो नहीं ताकौं फल ठहरायो और पकरिवो असिंह  
है, यातैं अमिंहविषया फलोत्प्रेक्षा है ॥ १४९ ॥

● हमसौगों की समझ में अथवा स्त्रियों के पकड़ने के  
लिये महाराज के प्रबल प्रताप का फैलना ठीक नहीं जान  
पड़ता ।  
रामकृष्ण वर्मा ।

गुप्तोत्प्रेचा लक्षण दोहा ।

उत्प्रेचा वाचक जहाँ शब्द कस्यो नहि होय ।

गुप्तोत्प्रेचा कहत हैं तेहाँ सुकवि सब कोय ॥

जहाँ उत्प्रेचा को वाचक शब्द नहीं कस्यो होय तहाँ गुप्तोत्प्रेचा कहते हैं सब कोइ सुकवि । मनी, शक, धुब, प्रायनून इव इत्यादि वाचक हैं ॥ १५० ॥

गुप्तोत्प्रेचा उदाहरण दोहा ।

वाल रही डुकटक निरखि ललित लालमुखइन्दु ।

रोझ भार अखियाँ यकीं झलके श्रमजलविन्दु ॥

नायिका है सो सुन्दर लाल के मुख चन्द को अनमिख देखि रहो सो रोझ के बोझ सैं आँखि यकि गई ताही परिश्रम सैं जल के बिन्दु झलके हैं । इहाँ आँसू सात्विक सैं श्रम जलविन्दु को तर्क है आँसू अनुक्त हैं । यातैं अनुक्तविषयावस्तुत्प्रेचा । मानीं नहीं है यातैं गुप्तोत्प्रेचा है अथवा रोझ भार सैं आँखें यकीं इसी सैं डुकटक रही । इहाँ यकिबो डुकटक को हेतु नहीं ताको हेतु ठहरायो और यक्या को सिथिल होबो सिद्ध है यातैं सिद्धाश्रयदा है तूत्प्रेचा है और वाचक नहीं कस्यो यातैं गम्योत्प्रेचा है ॥

अथ रूपकातिशयोक्ति लक्षण दोहा ।

जहँ केवल उपमान ते प्रगट होत उपमेय ।

रूपकातिशयउक्ति तहँ वरनत सुकवि अजैय ॥

जहाँ फल उपमान सैं उपमेय प्रगट होय तहाँ रूपकातिशयोक्ति अजोत सुकवि वरनते हैं ॥ १५२ ॥

उदाहरण दोहा ।

इन्द्रजाल कन्दर्प को कहे कहा मतिराम ।  
आगि लपट वर्षा करै ताप धरै घनस्याम ॥

कामदेव के इन्द्रजाल को मतिराम कौं कहे भक्ति को जल वर्षा करै है, घनस्याम ताप को धारण करै है । इहा आगिलपट उपमान सैं विरहिनी नायिका उपमेय प्रगटी वर्षा सैं आसू घनस्याम सैं लया ताप सैं विरह को दु ख जान्यो यातै रूपकातिशयोक्ति है ॥ १५३ ॥

पुनः उदाहरण दोहा ।

चली लाल या वाग में लखी अपूरव केलि ।  
आलवाल घन समय को शीघ्रमकतु की बेलि ॥

हे लाल या वाग में चली और अद्भुत क्रीडा देखी वर्षा काल को थावलो है शीघ्रमकाल की बेलि है । इहाँ घन समय के आलवाल उपमान सैं छिरक्यो स्थान उपमेय प्रगटी शीघ्र मकतु की बेलि सैं विरहिनी नायिका उपमेय कही यातै रूपकातिशयोक्ति है ॥ १५४ ॥

इहदुष्यव्यार्थचन्द्रिका । मध्या अधोरा रूपकातिशयोक्ति  
उदाहरण सवैया ।

जन्म लियो जव तैं इहि ठौर निरन्तरही अति  
जोर जमायो । देखि हमेस रही इहि देशन काक  
प्रधेस गुलाब लखायो ॥ सन्ततही सहवासिन कै  
तिहि सगति तै सुखहो सरसायो । आज भई

विपरीत सखी लखि कोकिल को घर काक खु-  
सायो ॥ १ ॥

दोहा ।

कटु बोलत तिय पीय सैं लखि सखि कहत बनाय।  
गलघर' कोकिल काक को आन सखिन समुभाय  
विषयी कोकिल काक बच विषयमधुरकटुउक्ति।  
बोध भये तैं ह्या लखी रूपकातिशय उक्ति ॥

बनिताभूषण ॥ लीला कनिष्ठा रूपकातिशयोक्ति उ० दोहा ।

कनकलता जुग में कमल अमल प्रफुल्लित पाया  
अली रली दूक सैं करत दूक सैं दीठि दुराय ॥

सापन्हवातिशयोक्ति लक्षण दोहा ।

जहाँ अपन्हुति सहित सो बरनैत मति अभिराम ।  
सापन्हव अतिशय उक्ति तहाँ कहत मतिराम ॥

जहा सुमति है सो अपन्हुति सहित रूपाकातिशयोक्ति  
को बरनै तहा मतिराम सापन्हवातिशयोक्ति कहते हैं ॥

उदाहरण दोहा ।

भूठ इन्दु अरविन्द में कहत सुधा मृदुवास ।  
तो मुख मजुल अधर में तिनको प्रगट प्रकास ॥

चन्द्रमा कमल में भूठैही सुधा और मृदुवास कहत  
है, तेरे मुख में और सुन्दर अधर में तिन दोनूनों को जाहर  
उजासो है । इहा सुधा सुगंध दोनू उपमाननि सैं अग की

सधुरता सुगध उपमेय जाने यातें रूपकातिशयोक्ति चन्द्र  
अरविन्द सैं वरजि कै मुख अधर में स्थापित है यह अप  
नुति यातें सापन्धवातिशयोक्ति है ॥ १५६ ॥

भेदकातिशयोक्ति लक्षण दोहा ।

औरै यौं करिकै जहाँ वरनत सोई तवत ।

भेदकातिशयउक्ति तहँ कहत बुद्धि-अवदात ॥

जहा सोई बात कौं औरही है यौं करि कै बनें तहा  
उज्वल मतिभेदकातिशयोक्ति कहत हैं ॥ १५७ ॥

उदाहरण दोहा ।

औरै कछु चितवनि चलनि औरै मृदु मुसकानि।

औरै कछु सुख देति है सकै न वैन बग्वानि ॥

याकी नजर चाल कछु औरही है कोमल हांसो और  
ही है कछु औरही सुख देती है बचन कहि नहि सकै अ  
र्यात लोकोत्तर है । इहा चितवनि आदि उनहीं कौं और  
वरने यातें भेदकातिशयोक्ति है ॥ १५८ ॥

अथ द्विविधि सम्बन्धातिशयोक्ति लक्षण दोहा ।

जहँ अजोग है जोग मै जहँ अजोग सैं जोग ।

सम्बन्धातिशयोक्ति कहि भाषत सब कविलोग ॥

जहा अजोग वस्तु जोग मै है अर्थात् अजोग कौं जोग  
करे जहा जोग वस्तु कौं अजोग मै करे, तहा सम्बन्धाति  
शयोक्ति कहि कै सब कवि लोग वर्नन करते हैं ॥ १५९ ॥

प्रथम उदाहरण कविता ।

सुरजनवंश राव भावसिंह सूरज तू तोते आज  
जगै जग जप तप जाग हैं । भलकै ललाई मुख  
अमल कमल तेरे हिये हरिचरन कमल अनुराग  
हैं ॥ सत्ता के सपूत तैं जगाई मतिराम कहै ल-  
हलही कोरति कल्पवेलि वाग हैं । ऊँचे मन  
ऊँचे कर ऊँचै ऊँचै करी दैकै ऊँचे करे भूमि  
के भिखारिन के भाग हैं ॥ १६० ॥

सुरजन के वंश में हे राव भावसिंह तू सूरज है । तो मैं  
भाज जगत में जप तप यज्ञ जगै है अर्थात् धर्म को रक्षक  
है । तेरे निर्मल मुख कमल में ललाई भलकै है । हिया में  
हरि को चरनकमल को प्रेम है मतिराम कहै है हे शत्रु-  
शाल के सपूत तैंने डहडही कल्पवेलि के वाग से कोरति  
जगाई है । ऊँचा मन ऊँचा हाथ से ऊँचा ऊँचा हाथी देय  
को सब पृथ्वी के मँगननि के भाग ऊँचे किये । इहाँ भि-  
खारिन के भाग सत्ता जोग नहीं तिनको जोग किये  
यातें सम्बन्धातिशयोक्ति है ॥ १६० ॥

पुन कविता ।

सजल जलट जिमि भलकत मटजल छिति  
तल हलत चलत मन्दगति में । कहै मतिराम  
बल विक्रम विहद सुनि गरजनि परै दिगवारन

विपति में ॥ सत्ता के सपूत भाऊ तेरे दिये ह  
लकानि वरनी उँचाई कविराजन की मति में ।  
मधुकरकुल करटीनि की कपोलनि तैं उडि र  
पियत अमृत उडपति में ॥ १६१ ॥

जलसहित मेघ णीं मट का जल झलकता है । चलते  
मन्दगति से भूतल छले है । मतिराम कहै है इद रहित  
बल भीर पराक्रम कौं मुनि कौं भीर गरजनो कौं मुनि के  
दिग्गज विपति में परै है, दिग्गज के भय होय है शत्रुसाल  
के सपूत भावसिंह तेरे दिये हलकानि की उँचाई कवि  
राजन की बुद्धि में वरनी है, अमरनि के समूह हाथीन के  
कपोलनि से उडि उडि के चन्द्रमा की अमृत पीते है ।  
इहाँ करटो अजोगनि कौं उडपति के लोग किये यातैं  
सबधातिशयोक्ति है ॥ १६१ ॥

अथ द्वितीय सबधातिशयोक्ति उदाहरण कवित्त ।

चरन धरै न भूमि विहरै तहार्द्र जहाँ फूले  
फूले फूलन विद्यायो परजंक है । भार के डरनि  
सुकुमारि चारु अग्नि में करत न अंगराग कुकुम  
को पक है ॥ कहै मतिराम देखि वातायन बीच  
आयो आतप मलीन होत वदनमयक है । कैसें  
वह बाल लाल वाहरि विजन आवै विजन-बयार  
लागे लचकत लक है ॥ १६२ ॥

भूमि में पग नहीं धरै है तहाही डोली है जहा फूले  
 फूले फूलनि सों पलग विछायो है । बोझ के डर से सुकु  
 मारी है सो अगनि में केसर के पक को अगराग नहीं  
 करै है । मतिराम कहै है भरोखान के बीच सैं तावडो  
 आयो देखि कै मुख चन्द्रमा मलोन होय है हे लाल बह  
 वाल एकली बाहिर कैसे आवै बिजना को पवन लगने सैं  
 कमरि लचकति है । इहा लक पखा को पवन सहन जोग  
 है ताको अजोग करो यातैं दूसरो संबधातिशयोक्ति है ॥

पुन कबिल ।

अगनि उतग जग जैतवार जोर जिन्हें चि-  
 क्करत दिक्करि हलत कलकत हैं । कहै मतिराम  
 सैन सोभा के ललाम अभिराम जरकस भूल  
 भाँपे भलकत हैं ॥ सत्ता को सपूत राव भाव  
 सिंह रीझि देत छहू ऋतु छके मदजल छलकत  
 हैं । मगन की कहा है मतगनि के माँगिये को  
 मनसवदारनि के मन ललकत हैं ॥ १६३ ॥

जबे अगनि के, जगनि के जीतिवेवारे, जोरवारे जिनके  
 चिक्कार तैं दिगज हैं सो हलते हैं, कलकते है प्रभुशास  
 को सपूत राव भावसिंह है सो रीझि कै देत है जो छह  
 ऋतु में मस्त हुये मद के जल को पटकै है तिन २।  
 माँगिये को मागवेवारेन की कहा चली है,



के मन ललचावे है । इहा दिमाज हाथीन की बराबरी नहीं पावे और मनसबदार जाचकन की बराबरी नहीं पावे, यह जोग कौं अजोग कियो यातैं संघातिशयोक्ति है।

अक्रमातिशयोक्ति लक्षण दोहा ।

जहाँ हेतु अरु काज मिलि होत एकही अंग ।  
अक्रमातिशयउक्ति तहँ वरनत कवि रसरग ॥

जहा कारण और कारण मिलि के एकही अंग होय तहा अक्रमातिशयोक्ति रसरग कवि वरनते हैं ॥ १६४ ॥

उदाहरण कवित्त ।

जूथपति पैठ्यौ पानी पोषत प्रबलमद क  
लभ करेनुकनि लीनैँ सग सुख ते । याह गह्यौ  
गाढे बैर पीछले के बाढे भयो बलहीन विकल  
करन दीह दुख ते ॥ कहै मतिराम सुमरतही स-  
मीप लखे अैसी करतूति भई साहिव सुख ते ।  
दोज वातैँ छूटी गजराज की बराबरही पाँव याह-  
मुख ते पुकार निजमुख ते ॥ १६५ ॥

जूथनाथ है सो पानी में घस्यो प्रबल मद सो पुष्ट भयो वहा हथनीन कौं सुख सैं साथ लिये गाढे याह नैँ पकस्यो पीछसे बैर के बढ़ने सैं विकल करबेदारे दुख सैं बलहीन भयो, मतिराम कहे है सुमरते ही नञीक देखे ऐसी क रतथ्यता भई सामी की सुष्ट नजर सैं गजराज की दोनू

वात बराबरि ही छूटो पाह के मुख सँ पग निज मुख सँ  
पुकार, यहाँ पुकार कारन है छूटियो कारज है सो सग  
भये यातै अकमातिशयोक्ति है ॥ १६५ ॥

चक्षुजातिशयोक्ति लक्षण - दीहा ।

वरनत हेतु प्रसक्ति ते उपजत है जहँ काज ।  
चक्षुलातिशयउक्ति तहँ वरनत हैं कविराज ॥

कारन को प्रसङ्ग बरा तँ जहाँ काज उपजे तहाँ कवि  
राज हैं सो चक्षुजातिशयोक्ति वरनते है ॥ १६६ ॥

उदाहरण कवित्त ।

वारि के विहार बरवारन के वीरिवे कौं वारि  
चर विरची इलाज जय काज की । कहै सतिराम  
बलवन्त जलजन्तु जानि दूर भई हिम्मति दुरद  
सिरताज की ॥ असरन-सरन के चरन सरन तके  
त्यौंही दीनबन्धु निज नाम की सुलाज की । धाये  
रति मान अति आतुर गुपाल मिली बीचि ब्रज-  
राज की गराज गजराज की ॥ १६७ ॥

जन के विहार में सुन्दर हाथी के डुमायवे कौं पाह  
नै जय काज की उपाय रची सतिराम कहै है जस जीव  
कौं बनयान जानि के हाथीन के सिरताज की सु रति दूरि  
भई असरनसरन के चरनि कौं सरन विचारि तैसेही  
दीनबन्धु नै अपने नाम की सुष्ट लाज कीनी गुपाल इतने

अति अलदी टोहे बजराल की अध बोधि मैं गजराल की  
अवाज मिली । इहाँ पुकार कारन के प्रसङ्ग सेही कृष्ण की  
चलियो कारज भयो यतैं चञ्चलातिशयोक्ति है ॥ १६० ॥

दोहा ।

सतरौहीं भौंहनि नहीं दुरत दुराये नेह ।

होत नाम नन्दलाल के नीपमाल सी देह ॥ १६१ ॥

करहो भौंहनि से छिपाये से नेह नहीं छपे, नन्दलाल  
के नाम से कदम्ब के फूलन को माला सी देह होत है  
अर्थात् रोम सहित होय हैं इहाँ नन्दलाल कारन के नाम  
से ही रोम हर्य कारज भयो यतैं चञ्चलातिशयोक्ति है ॥ १६१ ॥

अत्यन्तातिशयोक्ति सप्तम — दोहा ।

होत हेतु पीकै जहाँ होत प्रथमही काज ।

अत्यन्तातिशयोक्ति तहँ वरनत सब कविराज ॥

जहाँ कारन पाकै होय कारज पहिले होय तहाँ सब  
कविराज अत्यन्तातिशयोक्ति बर्नते है ॥ १६२ ॥

उदाहरण कवित ।

जीते जोर जङ्ग अति अतुल उतङ्ग तन दूनी  
श्यामरङ्ग छवि छपदनि छाये तैं । कहै सतिराम  
नभ-नदी के कुसुम सम उडै उडगन सुण्ड अ  
निल उडाये तैं ॥ मद्जल-धार वरषत जिमि  
धाराधर धक्कनि सौं धुक्करैं धरनि धर धाये तैं ।

आवैं कविराज ऐसे पावैं गजराज राव भाव सता-  
सुत सौं अगार गुन गाये तैं ॥ १७० ॥

अति लवर सग्राम के जीते हुये अमित लंचे तन के  
श्यामरग को दूनो छवि है भौरानि के छाये से मतिराम  
कहे है नम को नदी के सुमनन की समान तारा उडे है  
सुण्ड को पवन के उहाये से मट काजल की धार कौं प  
टके है धाराधर की तरह धकान सौं और दौडवासौं धरनी  
धर पर्वत और धरनी धुकें है अथवा श्रेयादिक धुकें है कवि  
राज आवैं ते ऐसे हाथो पावैं शत्रुशाल के सुत राव भावसिद्ध  
के गुन गाये से पहिले इहाँ गुन गायबो कारन पीछे है  
गज पादबो कारज पहिले है यतैं अत्यन्तातिशयोक्ति है ॥

अथ तुल्ययोगिता लक्षण - दोहा ।

जहाँ अवर्णन को धरम कौ वर्णन को एक ।  
तुल्ययोगिता कहत हैं तहाँ सुबुद्धि विवेक ॥ १७१ ॥

उपमाननि को धर्म अथवा उपमेयनि को एक होय  
तहाँ तुल्ययोगिता कहते हैं समति है सो ज्ञान से ॥ १७१ ॥

अवर्णन को उदाहरण - कवित्त ।

सूचनि कौं मेटि दिल्ली देश दलिवे कौं चमू  
सुभट समूह निशि वाकी उमहति है । कहै म-  
तिराम ताहि रोकिये कौं सगर में काह्न के न  
हिम्माति हिये में उलहति है ॥ शत्रुशाल नन्द के

प्रताप की लपट भव गरवी गनीम वग्गीन की  
दृष्टि है । पति पातसाह की इच्छति उमरावन  
की राखी रैया राव भावसिंह की रहति है ॥ १७० ॥

सूदान की बिगाहि के टिन्नी का देश बिगाह वाकी  
छोधान कागन की फीज सेवा राजा की उमगी है मतिराम  
कहे है ताके रोखिवे की सघाम में कोइ के हिया में सा  
हस नही बटे है । शत्रुग ल के सुत के प्रताप की फल सब  
गर्ववारि बैरी समूहति की जनावै है पातसाह की आवरु  
उमरावन की आवरु राजान के राजा भावसिंह की राखी  
रहे है । इहाँ पातसाह उमराव सघाम में योग्य नही यातें  
अवर्ण्य है तिनकी पति राखिवो एक धर्म है यातें प्रथम  
तुल्ययोगिता है अथवा पातसाह के पति उमरावन की  
इच्छति अवर्ण्य है भावसिंह वर्ण्य है पति इच्छति को राखिवो  
एक धर्म है यातें तुल्ययोगिता है ॥ १७१ ॥

वर्णन को उदाहरण - दोहा ।

अभिनव जीवन जोति सौ जगमग होत बिलास ।  
तिय के तन पानिप बटै पिय के नैननि प्यास ॥

सब तरह नवीन जीवन की जोति सौ बिलास जगमग  
होते है तिय के शरीर से जोति बटै है पिय के नैननि में  
प्यास बटै है इहाँ तन पानिप नैन प्यास वर्ण्य है तिनकी  
बटिवो एक धर्म है यातें तुल्ययोगिता है । १७२ ।

बनिताभूपन, लखिता प्रथम तुल्ययोगिता उदा० दोहा ।

नैन वैन विकलात हैं आली तेरे आज ।

क्यों मुकरत मुखलखि लगत शशिकञ्जन मनलाज ॥

अथ हितोय तुल्ययोगिता लक्षण - दोहा ।

जहँ हित में अरु अहित में वरनत वन्यहि तूल ।

तुल्ययोगिता और तहँ कहत मुकवि मति मूल ॥

जहाँ हितू में और अहितू में वन्य कौ वरावरि वरनै  
तहाँ तुल्ययोगिता और कहत है मति के मूल मुकवि है  
ते ॥ १७४ ॥

उदाहरण दोहा ।

जे निशि दिन सेवन करै अरु जे करै विरोध ।

तिन्हें परम पद देत हरि कही कौन यह बोध ॥

जे राति दिन सेवा करै है और जे बैर करते है तिन  
कौ हरि परम स्थान देते है कही यह कौन ज्ञान है इहाँ  
सेवक शत्रु में हरि वन्य कौ समान वरने यातै तुल्ययोगिता  
याको एक भेद और भी है ॥ १७५ ॥

अथ दीपक लक्षण - दोहा ।

वन्य अवन्यनि को जहाँ धरम होत है एक ।

वरनत हैं दीपक तहाँ कवि करि विमल विवेक ॥

जहाँ वन्य अवन्यन को धर्म एक होय तहाँ दीपक  
वरनते है कवि है सो निमल ज्ञान करिके ॥ १७६ ॥

उदाहरण—दोहा ।

चञ्चल निशि उद्वस रहैं करत प्रात वसि राव ।  
अरविन्दनि में इन्दिरा सुन्दर नैननि लाज ॥ १७७ ॥

दोनों चञ्चल होय की राति में उजही रहे हैं प्रात होती ही वसिकै राज करती हैं । कमलनि में सखी नायिका के नैमनि में लजा इहाँ इन्दिरा अवर्ण्य साज वर्य को उद्वस रहयो वसियो एक धर्म है यातैं दीपक है ॥ १७७ ॥

अथ दीपकावृत्ति लक्षण - दोहा ।

जहैं दीपक में होत है आवर्तन को जोग ।  
त्रिविधि कहत आवृत्तिचुत दीपक सब कवि लोग ॥

जहाँ दीपक में आवर्तन को जोग होत है तहाँ सब कवि लोग तीन तरह आवृत्तिदीपक कहत हैं अर्थात् शब्द की अर्थ की शब्दार्थ की ॥ १७८ ॥

शब्दावृत्ति उदाहरण—दोहा ।

जागत हो तुम जगत में भावसिंह की वान ।  
जागत गिरिवर कन्दरनि अरिवर तजि अभिमान ॥

हे भावसिंह दीवान तुम जगत में जागते हो तुम्हारे बैरो सुन्दर अभिमान छोड़िकै गिरिनि की सुन्दर कन्दरान में जागते हैं इहाँ जागत जागत शब्द दीय वार है तिनको अर्थ सचेत शोभित और निद्रा त्याग न्यारो न्यारो है यातैं शब्दावृत्ति है ॥ १७८ ॥

अर्थात्तत्ति उदाहरण - दोहा ।

लखौ लाल तुमकोँ लखत यौँ विलास अधिकाता  
विहँसत ललित कपोल हैं मधुर नैन मुसकात ॥

देखी लाल आपकी देखते ऐसे आनन्द अधिकाते हैं  
सुन्दर कपोल विहसते हैं मधुर नैन मुसकाते हैं इहा विह  
सत मुसकात अर्थ की आहृति है यतै अर्थात्तत्तिदीपक है ॥

अथ शब्दार्थात्तत्ति उदाहरण - कविता ।

मन्दर विलन्द मन्दगति की चलैया एक पल  
में दलैया पर दल बलखानि के । मदजल भर  
रत भुक्त जरकस भूल भालरिनि भलकत भुड  
मुकुतानि के ॥ ऐसे गज बकसे दिवान दुहू दी-  
ननि कोँ मतिरोम गुन वरनैँ उदार पानि के ।  
फौज के सिँगार हाथी और महीपालन के मौज  
के सिँगार भावसिह महादानि के ॥ १८१ ॥

मन्दराचल से लचे हैं मन्द चाल के चलनेवाले हैं एक  
पलक में बल की खानि शत्रुन के दलन के दलनेवाले हैं  
मद का लल भरै है जरी को भूल सुके है तिनको भाल  
रिनि में मोतिन के समूह भलकेँ है ऐसे हाथी दीवान ने  
हिन्दू मुसलमान कोँ दीने मतिराम कहे है दानी हाथ के  
गुम गाये से और राजान के हाथी फौज के सिँगार हैं  
भावसिह महादानी के हाथी मौज के सिँगार हैं यहाँ



सिंगार सिंगार शब्द अर्थ की आशक्ति है यातैं दीपकाशक्ति है ॥ १८१ ॥

कवित्त ।

सकल सहेलिन के पीछे पीछे डोलति है मन्द मन्द गौन आजु आपुही करत है । सनमुख होत मुख होत मतिगम जब पौन लागे घूँघट के पट उघरत है ॥ जमुना के तट बशीवट के निकट नन्दलाल पै संकोचन से चाह्यो ना परत है । तन तौ तिया को वर भाँवरे भरत मन साँवरे वदन पर भाँवरे भरत है ॥ १८२ ॥

सम्पूर्ण सहेलिन के पाछे पाछे डोलै है मन्द मन्द गौन आजु आपुही करती है श्याम के समुख होत मुख होय है जब वायु लगने से घूँघट को वल उघरै है जमुना के तट पै बशीवट के निकट नन्दलाल पै संकोच से देख्यो नहीं परै है तिया को शरीर तौ वह की भाँवरि भरै है मन है सो साँवरे मुख की भाँवरि भरै है इहा भाँवरे भरत भाँवरे भरत शब्द अर्थ की आशक्ति है यातैं दीपकाशक्ति है ॥ १८२ ॥

अथ प्रतिवस्तूपमा लक्षण—दोहा ।

पद समूह जुग धर्म जहँ भिन्न पदनि सो एक ।  
परगट प्रतिवस्तूपमा तहँ कवि कहत अनेक ॥

जहा दीय पदसमूह नाम वाक्यन की एक धर्म होय

। न्यारे न्यारे पदनि सौं तहा प्रगटहो प्रतिवस्तूपमा वहुत  
कवि कहते हैं ॥ १८१ ॥

उदाहरण कवित्त ।

शङ्कर कौं ध्याय सरस्वती कौ रिभाय सीस श्रे-  
षद्ध की पाय मति अति सरसाय कै । कहै मति-  
राम शत्रुशालनन्द भावसिंह तव कोऊ सकै तेरे  
गुननि गनाय कै ॥ औरनि के औगुननि तचि  
कविजन राव होत है सुखित तेरी किर्ति वर न्हाय  
कै । खाय कै अंगार अंच औटि कै चकोरगन  
होत है मुदित चन्द चांदनी कौं पाय कै ॥१८४॥

शिव कौं ध्याय के सरस्वती कौं रिभाय कै शेषनागह  
की सीख कौं पाय कै बुद्धि कौं अत्यन्त बढाय कै मतिराम  
कवि कहै है है शत्रुशाल के सुत भावसिंह तव कोइ तेरे  
गुनन कौं गनाय सक अर्थात् शिव गिरा शेष का छपा होय  
तव गुन गिनि सकै है राव भावसिंह कवि लोग है सो और  
के औगुनन सो तचि के नाम दुखित होय कै तेरी कीर्ति  
में भलो प्रकार न्हाय कै सुखी होते है अथवा किर्ति सर  
पाठ होय ती कीतिरूपी तलाव में स्नान करिकै सुखी होते  
हैं भग रखाय कै ताकी अंच में सोभि कै चकोरगन है  
सो चन्द की चांदनी कौं पाय कै प्रमद होते हैं यहा तीसरी  
तुक में उपमेय वाक्य है चौथी तुक में उपमान वाक्य है  
तिनको सुखित मुदित हा वो धर्म एक है, पद न्यारे न्यारे  
हैं यात प्रतिवस्तूपमा है ॥ १८४ ॥

दोहा ।

पिसुन वचन सज्जन चितै सकै न फोरि न फारि ।  
कहा करै लगि तौय में तुपक तीर तरवारि ॥

नीचन को वचन सज्जन को चित्त कीन फोरि सकै न फारि सकै बन्दूक सर खड्ग जन में लगि कै कोई करै दोहा को पूर्वार्ध में उपमेय वाक्य है तामें फोरि फारि न सकै यह धर्म है और उत्तरार्ध में उपमान वाक्य है तामें कहा करै यह धर्म है अर्थात् फोरि फारि न सकै यह अर्थ एक है पद न्यारे न्यारे हैं यातें प्रतिवस्तूपमा है । १८५ ।

भूषण चन्द्रिका ।

अर्थात्प्रतिदीपक प्रस्तुत प्रस्तुत को अथवा अप्रस्तुत अप्रस्तुत को होय । प्रतिवस्तूपमा प्रस्तुत अप्रस्तुत को होय यह विशेष है आहत्तिदीपक वैधर्म्य करि न होय प्रतिवस्तूपमा वैधर्म्य करिके भी होय ताके —

उदाहरण—दोहा ।

बुधही जानत बुधन को परम परिश्रम ताहि ।  
प्रबल प्रसव की पीर को बन्ध्या जाने नाहि ॥१॥  
गुणी वंश भवहू मनुज पुजै सुसगति पाय ।  
तुम्बी विन जग मान नहि वीणा दण्ड लहाय ॥

अथ दृष्टान्त लक्षण—दोहा ।

पदसमूह जुग धर्म जहँ जिमि विम्बहि प्रतिविम्ब ।  
सुकवि कहत दृष्टान्त है जे मन दर्पन विम्ब ॥

जहा दीय पदसमूहनि को धर्म बिम्ब प्रतिबिम्ब होय  
तहां मन दर्पन के बिम्ब सुकवि दृष्टान्त कहत हैं ॥१८६॥

सदाहरण—दोहा ।

पगी प्रेम नन्दलाल के हमें न भावत जोग ।

मधुप राजपद पाय कै भीख न मागत लोग ॥

नन्दलाल के प्रेम में पगी हैं हमको जोग नहीं भावे  
हे मधुप जघो राजपद पाय कै लोग भीख नहीं मागै इहाँ  
पूर्वार्द्ध दोहा को बिम्ब है उत्तरार्द्ध प्रतिबिम्ब है यार्ते दृ-  
ष्टान्त है । १८७ ॥

सवैया ।

भोज बली रतनेश भये मतिराम सदा जस  
चाडनही मैं । नाथ सता समरत्य दुहनि दले  
अरि तेज सौं ताडनही मैं ॥ भाऊ नरिन्द की  
धाक धुके अरि जाय गिरे गिरि गाडनही मैं ।  
जोति महीपति हाडनिही महँ जोति दधीच के  
हाडनही मैं ॥ १८८ ॥

भोज और बली रतनेश हैं सो मतिराम कहै है सदा  
जस के चढावही मैं भये गोपीनाथ और शत्रुशास दोनों  
समर्थनि ने बैरो मारे तेज सौं ताडना नहीं मैं राजा भाव  
सिंह की धाक से धुके हुये रिपु गिरिन का खडान मैही  
जाय गिरे जोति हाड़ा राजान।मैही है जोति है सो दधीच

का हाडनही मैं है इहा जोति महीपति हाडनिही मरि  
बिम्ब है जोति दधोच के हाडनिहो मैं यह प्रतिबिम्ब है  
यातैं दृष्टान्त है ॥ १८८ ॥

भूपनचन्द्रिका ।

यह ह वैधर्म्य करिके होय है ताकी—

उदाहरण - दोहा ।

गर्व समुख मन करत तुव अग्निगन सकल नसात ।  
जबलौं रवि की उदय नहि तबलौ तम ठहरात ॥

अथ निदर्शना लक्षण - दोहा ।

सदृश वाक्य जुग अर्थ को जहाँ एक आरोप ।  
बरनत तहाँ निदर्शना कविजन मति अति शोप ।

समान होय वाक्यन का अर्थ को जहा एक आरोप  
होय तहा निदर्शना वर्णते है अति मति की शोप के कवि  
लोग है ते ॥ १८९ ॥

उदाहरण - मवैया ।

जो गुन वृन्द सतासुत मैं कलपद्रुम मैं सो  
प्रसून समालै । कौरति जो मतिराम दिवान मैं  
चन्द्र मैं चाँदनी सौ छवि छाजै ॥ राव मैं तेज  
को पुञ्ज प्रचण्ड सो आतप सूरज मैं रुचि साजै ।  
जो नृप भाऊ के हाथ कृपाम सो पागथ के कर  
वान विराजै ॥ १९० ॥

जो शत्रुमाल के सुत में गुननि के समूह है सो कल्प  
 वृक्ष में फूलनि के समूह है मतिराम कहे है जो दिवान में  
 कीर्ति है सो चन्द्रमा में चाँदनी छवि छाजै है राव में जो  
 प्रचण्ड तेल की पुज है सो सूरज में घाम रुचि छाजै है जो  
 राजा भावसिंह का हाथ में छपान है सो पारथ के हाथ में  
 बान विराजै है इहाँ चारोंतुकनि के पूर्वाह्न में उपमेय याच्य  
 है उत्तराह्न में उपमान वाक्य है तिन दोनून की गुन प्रसून  
 की रति चादनी तेलभातप छपानवान पदनि करि एकता  
 है यातैं निदर्शना है ॥ १८० ॥

द्वितीय निदर्शना लक्षण — दोहा ।

जहँ वरनन पद अर्थ की वरनत हैं कविराज ।  
 निटरसना यह दूसरी वगनत विबुधसमाज ॥

जहा पद अर्थ की वरनन कविराज वरनते हैं तहाँ दू  
 सरी निदर्शना पण्डित के गन वरनते हैं अर्थात् और को  
 अर्थ और में कहे ॥ १८१ ॥

उदाहरण — दोहा ।

जब कर गहत कमानसर देत परनि को भीति ।  
 भावसिग में पाइये तब अर्जुन की रीति ॥१८२॥

जब हाथ में कमान सर पकड़े है और बैरीन की भय  
 देत है तब भावसिंह में अर्जुन की रीति पावै है, इहाँ अ  
 र्जुन की वान विद्या भावसिंह में ठहराई यातैं द्वितीय नि-  
 दर्शना है ॥ १८२ ॥

द्वितीय निदर्शना लक्षण—दोहा ।

करत असत सत अर्थ की एक क्रिया सौ बोध ।  
निदरसना यह औरह कहत सुकवि मतिसोध ॥

बुरा भला अर्थ की एक क्रिया सौ बोध करे यह और  
भी निदर्शना कहते हैं सुकवि मति के सोध हैं ते ॥ १८१ ॥

असत दोहा ।

मधुप त्रिभगो हम तजो प्रगट परम करि प्रीति ।  
प्रगटकरत सब जगत मै कटु कुटिलनि की रीति ॥

गोपीन की उल्लि, उल्लि उषव सैं हे मधुप त्रिभगो ने हम  
को तजो प्रगट हो परम प्रीति करिके सब जगत मै कहुवा  
कुटिलन की रीति प्रकट करत है इहाँ प्रीति करिके छोड  
वो असत अर्थ है ताको कुटिलन की रीति कहिके बोध  
कियो यातें निदर्शना है ॥ १८४ ॥

सत दोहा ।

हरिमुख लखि लोचनसखी मुख में करतविनीट ।  
प्रगट करत कुवलयन की चद्रोदय तैं मोद १८५

हे सखी हरि का मुख को देखि कै लोचन हैं सो मुख  
में विनीट करते हैं सैं चन्द्रमा के उदय सैं कुमोदिनीनि को  
अर्थ प्रगट करत हैं इहाँ लोचन मुख सत अर्थ को कुमोदिनी  
नि के मोद सैं प्रगट कियो यातें निदर्शना ॥ १८५ ॥

अथ व्यतिरेक कवचण—दोहा ।

जहाँ होत उपमान ते उपमेय मै विशेष ।

तहा कहत व्यतिरेक हैं कविजन मति उल्लेख ॥

जहाँ उपमान से उपमेय में विशेष होय तहाँ व्यतिरेक कहते हैं कवि लोग मति के अधिक है तें ॥ १८६ ॥

उदाहरण कवित्त ।

बड़े-बस-अवतस रावभावसिंह तेरे बड़े तेज  
तये गये देशपती दवि हैं । कहे मतिराम बड़ी  
कित्ति उमडाई यातै सकल बडाई आज तो मैं  
रही फवि हैं ॥ सुनिये पुराननि मैं जबू दीप बडो  
एक जंबू-तरु जामैं फल हाथिन की छवि है ।  
ताहू ते बडो है तेरो कर काम तरु जासो बडे  
करिवर फल पावत सुकवि है ॥ १८७ ॥

हे बड़े बस के सिरोमणि राव भावसिंह तेरे बड़े तेज  
से तये हुये देशपति दवि गये है मतिराम कहे है बड़ी  
कीर्ति फैलाई जासी आज सपूर्ण तोमै सोमै है पुरानन में  
एक जबू दीप बडो सुनिये है जामैं एक जाम्बूनि की छवि है  
जामैं हाथीन की नमान फल है । तास भी तेरो कर कछ  
छवि बडो है जामों बडे हाथो फल सुकवि पावे है, इहा जबू  
तरु उपमान से हाथ उपमेय बडो है यातै व्यतिरेक है ॥ १८७



यनिताभूषण दोहा ।

उपमान रु उपमेय में वै लक्षण व्यतिरेक ।

अधिकन्यून समभाव करि ताको त्रिविधिविवेक ।

अथ अक्रोया मानिनो अधिक व्यतिरेक उदाहरण दोहा ।

लखि पियविनती रिसभरी चितवै चचल भाय ।

तव खंजन से दृगन में लाली अति कृवि छाय ॥

अथ परक्रोय मानिनो न्यून व्यतिरेक उदाहरण दोहा ।

सापराध लखि पियहि तिय जब दृग देत नवाय ।

तव खलन से चखन मै चचलता न रहाय ॥३॥

अथ गनिका मानिनो सम व्यतिरेक उदाहरण दोहा ।

साग सलखि धनदानि कौं मौन गहै मन सारि ।

तव शशि सी मुखवाल को लखि सोचै सदि हारि ॥

अथ सहोक्तिनक्षण दोहा ।

काज हेतु को छोडि जहँ औरनि के सह भाव ।

वरनत तहाँ सहोक्ति हैं कविजन बुद्धिप्रभाव ॥

जहा कारज कारन कौं छोडि कै औरनि के साथ ही

होय तहा सहोक्ति वरनते हैं कवि लोग है सो बुद्धि के

प्रभाव से अर्थात् कारज कारन को साथ होय तो सहोक्ति

सहि ॥ १८८ ॥

उदाहरण कविस ।

महावीर राव भावसिंह को प्रताप साथ जस

के पहुँच्यौ शोर दसहू दिशानि के । दल के च-  
 ठत फनमडल फनीपति को फूटि फाँट जात  
 साथ सैल की सिलानि के ॥ दुज्जन के गन कल्प-  
 द्रुम के वागनि में करत बिहार साथ सुर-प्रसे-  
 दानि के । संपति के साथ कवि सौधनि वसत वन  
 दारिद वसत साथ बैरी-बनितान के ॥ १८६ ॥

महा सुर राव भावसिद्ध को प्रताप है सो जस के साथ  
 देशों दिशान के शोर में पहुँच्यौ फौज के चले तैं नागपति  
 की फनमडल है सो फूटि फाँट जाय है पर्वत की सिलान  
 के साथ दुर्जनन के समूह कल्पवृक्षन के वागने में बिहार  
 करते हैं देवागनानि के साथ, कवि है सो संपति के साथ  
 महलनि में बसते हैं दारिद है सो रिपु श्चीन के साथ वन  
 में बसे है इहाँ प्रताप जस के साथ पहुँचने से फनसिम्भान  
 के साथ फूटने से दुर्जन सुर श्चीन के साथ बिहार से संपति  
 के साथ कविन के वसने से दारिद रिपु श्चीन के साथ व  
 सने से राजा भावसिद्ध को मनोहर वर्नन है यातैं सञ्चोक्ति  
 है ॥ १८६ ॥

अथ विनोक्ति लक्षण दोहा ।

जहँ प्रस्तुत कछु बात विन की नीकी कौ हीन ।  
 वरनत तहाँ विनोक्ति है कवि मतिराम प्रवीन ॥

जहा प्रासंगिक कछु बात बिना हीन होय कौ कछु बिना

हो न विना तद्वा विनोक्ति बरनते हे कवि मतिराम कहे  
प्रवीन हे ते ॥ २०० ॥

उदाहरण दोहा ।

विषयनि ते निर्वेदवर ज्ञान योग व्रत नेम ।

विफल जानिये ये विना प्रभुपदपकजप्रेम ॥२०१॥

विपै न सौं निर्वेद सुदर ज्ञान योग व्रत नेम ये सब वि  
फल जानिये प्रभु के चरणकमलन के प्रेम विना इहा निर्वे  
टादि प्रसृत हे ते हरिपदप्रेम विना हीन हे यातै विनोक्ति  
हे ॥ २०१ ॥

द्वितीय विनोक्ति दोहा ।

देखत दीपति दीप की टेत प्रान अस देह ।

राजत एक पतग मै विना कपट को नेह ॥२०२॥

दीप की दीपति देखतै ही प्रान और देह टेत हे एक  
पतग मै विना कपट को नेह राजै हे । इहाँ पतग प्रसृत  
कपटहीन शोभित हे यातै दूजी विनोक्ति हे ॥ २०२ ॥

समासोक्ति लक्षण दोहा ।

जहँ प्रस्तुत मै होत है अप्रस्तुत को ज्ञान ।

समासोक्ति तहँ कहत है कविजन परम सयान ॥

जहा प्रासंगिक मै अप्रसग को ज्ञान होय तहा समा  
सोक्ति कहते है कवि लोग अति सयाने है ते ॥ २०३ ॥

उदाहरण कविन ।

चिन्ता मै चितै कै सब सुधि विसरावत है

महल विमल तेरे मुख द्विजराज को । सोयवे कौं  
साजत सरस परजक तेरी स्यामअंग कवि इन्दी-  
वर कौं समाज को ॥ कवि मतिराम काम वा-  
ननि सौं वेधो यौं जु दुःख भयो सकल समूह  
सुख साज को । कहा कहौं लाल तलावेली की  
तलफ पखौं बाल अलबेली को वियोगी मन  
लाज को ॥ २०४ ॥

तेरे मुख चन्द्रमा के निर्मल मडल कौं देखि कै चिन्ता  
में सब सुधि कौं विसरावै है सो वाके वास्तै तेरी स्यामाग  
कवि समान नील कमननि की समाज को परजक साजतै  
मतिराम कवि कहै है कामदेव नै वाननि सौं यौं वेधो  
जो सुख का साज को समूह सब दुःख रूप भयो है लाल  
में काँई कहौं अलवेली बाल को लाजवानो वियोगी मन  
तला वेली की तलफ में पड्यो है इहँ कृष्ण का मुख श्या  
माग शोभा की बडाई प्रासगिक है तामें बाल वियोग सैं  
दुखी है यह अप्रासगिक त्यों यातें समासोक्ति है ॥२०४॥

बनिता भूपन, परकीया प्रोपितपतिका समासोक्ति

उदाहरण टोहा ।

उद्वं देखहु धलि यन्त्रै है कपटी बे वीर ।  
धलि वर विमला मालती सेवत कली कानोर

अथ परिकर तथा परिकरांकुर लक्षण दोहा।

साभिप्राय विशेषननि सो परिकर मतिराम ।

साभिप्राय विशेष्य तें परिकर-अंकुर नाम ॥२०६॥

विशेषण पद अभिप्राय सहित हैं मतिराम कहै है सो परिकर है, विशेष्य पद अभिप्राय सहित हैं परिकरांकुर नाम है ॥ २०६ ॥

परिकर उदाहरण कवित्त ।

समर कै सिह शत्रुशाल के सपूत सहजहि व  
कसैया सदसिधुर मद्ध के । मतिराम चारिहूँ  
समुद्रनि के कुलनि लौं फैलत समूह तेरे सुजस  
मुगध के ॥ जगत बखानी चहुवानी सुलतानी  
और नही अवनौ मै अवनौप समकध के । ती  
में दोऊ देखिये दिवान भावसिह चहुवान कुल-  
भानु सुलतान बलाबध के ॥ २०७ ॥

हे सयाम के सिह शत्रुशाल के सपूत सहजही में मद के अध सो नवोन हाथोन के बकसैया मतिराम कहै है चारों समुद्रनि के किनारान ताई तेरे सुजस की मुगध के समूह फैलै है जगत में चहुवानी और सुलतानी बखानी है और पृथ्वी में राजा तेरे समान कध के नहीं है हे दिवान भावसिह तो मै दोनू देखिये हैं, हे चहुवान कुल के भानु बलाबध के सुलतान यहा चहुवानी सुलतानो दोनू विशेष

पण पद हैं जिनमें चहुवानो चार भुजावानी सुलतानी वा  
टमाही ये दो आशय है जिनसे और राजा भावसिंह की  
बराबरी के नहीं अर्थात् चहुवान जी यज्ञकुंड में भी चार  
भुजा वान निकसे जाते उनके वश के चहुवान बाजे और  
ये बला बध पर्वत के बाटमाह हैं याते परिकर ॥ २०७ ॥

पुन दोहा ।

क्यों न फिरै सब जगत मै करत दिगविजै मार ।

जाके दृग-सामत हैं कुवलय जोतनहार ॥ २०८ ॥

काम है सो सब जगत में दिगविजय करती क्यों नहि  
फिरै जाके नैन सामत है सो कुवलयन की जीतिवेवारे हैं  
इहा कुवलय विशेषण पद में पृथ्वीमंडल को जीतिवो अ  
भिप्राय निकसी याते परिकर है ॥ २०८ ॥

बनिता भूपन गनिका प्रोषित पतिका परिकर  
उदाहरण दोहा ।

पाती पीतम धनद की बाँचत प्रिया प्रवीन ।

लखि २ हिमकर वदन सैं सखिगन सीतल कीन ॥

परिकराकुर उदाहरण दोहा ।

देखें वानिक आजु की वारों कीटि अनग ।

भलो चलौ मिलि साँवरे अग-रग प्रट-रंग ॥ २०९ ॥

चलो नायिका देखि कै प्रसन्न होयगी खडिता को  
सखी को वलि । हे साँवरे आज को वानिक देखेसैं कीटि

अथ परिकर तथा परिकरांकुर लक्षण दोहा ।

साभिप्राय विशेषननि सो परिकर मतिराम ।

साभिप्राय विशेष्य तें परिकर-अंकुर नाम ॥२०६॥

विशेषण पद अभिप्राय सहित हैं मतिराम कहे है सो परिकर है, विशेष्य पद अभिप्राय सहित हैं परिकरांकुर नाम है ॥ २०६ ॥

परिकर उदाहरण कवित्त ।

समर के सिह शत्रुशाल के सपूत सहजहि व-  
कसैया सदसिधुर मद्ध के । मतिराम चारिहूँ  
समुद्रनि के कुलनि लौं फैलत समूह तेरे सुजस  
सुगध के ॥ जगत बखानी चहुवानी सुलतानी  
और नही अवननी मै अवननीप समकध के । तीरे  
में दोऊ देखिये दिवान भावसिह चहुवान कुल-  
भानु सुलतान बलावध के ॥ २०७ ॥

हे सग्राम के सिह शत्रुशाल के सपूत सहजही में मद के अथ सो नयोन हाथोन के वकसैया मतिराम कहे है चारों समुद्रनि के किनारान ताई तेरे सुजस की सुगध के समूह फैलै है जगत में चहुवानी और सुलतानी बखानी है और पृथ्वी में राजा तेरे समान कध के नहीं है हे दिवान भावसिह तो मैं दोनू देखिये है, हे चहुवान कुल के भानु बलावध के सुलतान यहा चहुवानी सुलतानी दोनू विशेष

एष पद है जिनमें चहुवानो चार भुजावानी सुनतानी बा  
टसाही ये दो आशय हैं जिनसे श्रीर राजा भावसिंह की  
बराबरी के नहीं अर्थात् चहुवान जी यज्ञकुंड में भी चार  
भुजा वान निकसे जाते उनके बश के चहुवान बाजे श्रीर  
ये बला बध पर्वत के बाटसाह हैं याते परिकर ॥ २०७ ॥

पुन दोहा ।

क्यौ न फिरै सब जगत मै करत दिगविजै मार ।  
जाके दृग-सामत है कुबलय जोतनहार ॥ २०८ ॥

काम है सो सब जगत में दिगविजय करती क्यौ नहि  
फिरै जाके नैन सामत है सो कुबलयन की जोतिबेवारे है  
इहा कुबलय विशेषण पद में पृथ्वीमडल को जोतिवो अ  
भिप्राय निकस्यो याते परिकर है ॥ २०८ ॥

बनिता भूपन गनिका प्रोपित पतिका परिकर  
उदाहरण दोहा ।

पाती पीतम धनद की वांचत प्रिया प्रवीन ।  
लखि २ हिमकर बदन सै सखिगन सीतल कीन ॥

परिकराकुर उदाहरण दोहा ।

देखे बानिक आजु की वारीं कोटि अनग ।  
भलो चलौ मिलि सावरे अग-रग प्रट-रग ॥ २०९ ॥

चलो नायिका देखि कै प्रसन्न होयगी खडिता को  
सखी की उक्ति । हे सावरे आजु को बानिक देखेसैं कोटि



काम देव वारों अंग के रंग में पट को रंग मिलि गयो भनो  
 यहा अंग रंग पटरंग विशेष पदन में आशय है पर स्त्री  
 को नीलपट यातै परिकराकुर है ॥ २०६ ॥

बनिताभूपन मुग्धा खडिता परिकराकुर उदाहरण दोहा ।  
 प्रात आय निशिवास को आन बतायो धाम ।  
 भाल लाल लखि लाल को वात न मानी वाम ॥

अथ श्लेष लक्षण दोहा ।

श्लेष कहावत है जहाँ उपजत अर्थ अनेक ।  
 प्रकृत अप्रकृत मिलिनिविधि प्रकृता प्रकृत विवेक  
 अनेक अर्थ पैदा होय जहा श्लेष कहावै है प्रकृत अप्रकृत  
 मिलि अप्रकृत अप्रकृत को प्रकृता प्रकृत को तीन तरह की  
 ज्ञान है ॥ २११ ॥

प्रकृत को उदाहरण दोहा ।

ललित राग राजत हिये नायक जोति विशाल ।  
 बाल तिहारे कुचन विच लसत अमोलिक लाल ॥

आलिगन करती नायिका सैं सखी की उक्ति है बाल  
 तुम्हारे कुचन के बीच मैं अमोलक लाल लसै है कृष्ण और  
 रत्न, कृष्ण कैसी है हिया मैं सुन्दर अनुराग राजै है स्वामी  
 है विशाल जोति है रत्न कैसी है सुन्दर रंग भीतर राजै है  
 हार के बीच मैं लग्यौ है बही जोति है इहा दोय अर्थ हैं  
 और कृष्णलाल दोनू प्रासंगिक हैं यातै प्रथम श्लेष है ॥ २१२ ॥

अथ अप्रकृतज्ञेय उदाहरण दोहा ।

कहा भयो जग मैं विदित भये उदित छविलाल ।  
तो ओठनि की रुचिर रुचि पावत नही प्रवाल ॥

जगत में प्रगटही लाल छवि के उदय भये तो काई  
भयो तेरे अधरन की सुन्दर रुचि कौं मूगा और नवीन पत्र  
नही पाते है इहा प्रवाल के दोय अर्थ मूगा नवीन पान ये  
दोनु अप्रकृत हैं यातै द्वितीय श्लेष है ॥ २१३ ॥

प्रकृताप्रकृत की उदाहरण कवित्त ।

छविजुत छौरधि तरगनि बढावत है जगत  
पसारत चमेलो की सुवास कौं । कहै मतिराम  
कुमुदिनि के परागनि सौ सरस करत चारु चां-  
दनो प्रकास कौ ॥ सवही के प्रान रूप हिय मैं  
वसत अति व्यापक है फैलि रह्यौ अवनि अका-  
स कौं । राव भावसिंह जस रावरो करत दिशि  
विदिशि विहार गहें वात के विलास कौ ॥ २१४ ॥

हे राव भावसिंह तुम्हारे जस दिशा विदिशान में वि-  
हार कौं गहें हुते पवन के विलास कौं करत है पवन कैसी  
है छविषहित दूध के समुद्र की सहरिन कौं बढावै है  
जगत में चमेली की सुगन्ध कौं फैलावै है मतिराम कहै है  
कुमुदिन के फेरान कौं अधिक करै है सुन्दर चादनी के  
प्रकाश कौं विशेष करै है सवही के हृदय में प्रानरूप होय

कैसे है अति व्यापक होय के पृथ्वी आसमान में फैलि  
रही है जस कैसे है छवि सहित दूध के समुद्र की तरंग  
समान है जगत में चमेली की शोभा को फैलावे है कुमु  
दिन के पराग को चादनी के प्रकाश को सरस करे है  
सबहो के घर में प्राण समान वैसे है पृथ्वी आकाश में अति  
व्यापक होय के छाया रह्यो है यहा जस वर्ण्य है पवन अ  
वर्ण्य है यातें तृतीय श्लोक है ॥ २१५ ॥

पुन कृप्य ।

बसत जासु हिय बासुदेव पानिप अति छाजत ।  
तजत न वर सरजाद परम गभीर विराजत ॥  
रतन सुतन अबनोकि लोक पतिमान सलुम्बहि  
मुकुतरुपधरि सुजसन्तपति श्रवनि शुभशुम्बहि ॥  
महिमा अपार भतिराम कहि जगत जगत सब  
घेरि तिमि । भुव भावसिंह भूपाल मनि रोज  
मोज दरियाव इमि ॥ २१६ ॥

ससार में राजान की मणि भावसिंह है सो नित्यही  
मौज को समुद्र ऐसे है जाके हिया में भगवान बसते है  
समुद्र में भगवान सीते है पानिप जो तेज अति छाजे है ।  
समुद्र में पानो बहुत है । सुन्दर रीति को नहीं छोडे है  
समुद्र कार को नहीं छोडे है राजा परम गभीर विशय  
शोभित है समुद्र बहुत छोडो है राजा का रत्न रूप सुतन  
को देखि करि के लोकन के पतिन के मन लुभावे है समुद्र

के सुत रत्न हैं सुजस है सो मुक्तारूप धरि कै राजान के  
 कानन में शुभ शोभा पावै है । समुद्र में मोती उपजै है  
 मतिराम कहे है तैसेही सब जगत कौं घेरि करिके अपार  
 महिमा जगमगावै है । समुद्र ने भी सब जगत कौं घेरि  
 राख्यो है महिमा अपार है । तामें मच्छ अपार हैं यहाँ  
 राजा प्रासंगिक है समुद्र अप्रसांगिक है यातें द्वितीय श्लेष है ॥

अथ अपस्तुत प्रससा लक्षण - दोहा ।

अपस्तुतै प्रससिये प्रस्तुत लीने नाम ।

तहँ अपस्तुत प्रससा बरनत है मतिराम ॥२१७॥

जहाँ अपस्तुत की बडाई करिये प्रस्तुत को नाम लिये  
 हुये तहा अपस्तुत प्रससा मतिराम कवि बरनै है ॥ २१७ ॥

उदाहरण - सवैया ।

आनन-चन्द निहारि निहारि नहीं तनु श्री  
 धन जीवन वारै । चारु चितौनि चुभी मतिराम  
 हिये मति कौ गहि ताहि नकारै ॥ क्यों करि  
 धौं मुरलीमनि कुण्डल मोर पखा वनमाल वि-  
 सारै । ते धनि जे ब्रजराज लखें यह काज करै  
 अरु लाज संहारै ॥ २१८ ॥

सुख चन्द्रमा कौ देखि देखि कै तनु श्री धन जीवन  
 कौ नहीं वारै मतिराम कहे है हिया में सुन्दर चितवनि  
 चुभी है तिसकौं निकासै मति कौं पकड़ि कै जानै कैसे

करिके मशी मनि कुण्डल मोरमुकुट वनमाता को भूतें  
ते धन्य हैं जे कृष्ण की देखि कै घर को काम करैं और  
राज को सहायें : इहा अन्य स्त्री अपस्तुतनकी बडाइ करै  
हे तामें अपनी धर्य निकसै हे यातें प्रस्तुत प्रशसा है ॥२१८॥

वनिता भूषण, अपस्तुतप्रशसा लक्षण - दोहा ।

जहँ प्रस्तुत के कारणै अपस्तुतहि प्रसस ।

होय तहाँ भूषण यहै अपस्तुत-परप्रशस ॥ १ ॥

कृष्णय ।

वर्णन अपस्तुतहि माहि जहँ प्रस्तुत निकसै ।

अस सम्बन्धहि माहि अलङ्कृति यह निति विकसै ॥

सम स्वरूप के माहि जहा समरूप जु निकरै ।

सो सारूप्य निबन्ध नाहि भिद पहिलो उघरै ॥

निकसै विशेष सामान्य में सो सामान्य निबन्धना ।

सामान्य विशेषहि में कटै सुहै विशेष निबन्धना ॥  
दोहा ।

कारण में कारण कटै हेतु निबन्धन सोय ।

कारण में कारण कटै कार्य निबन्धन होय ॥३॥

अथ प्रौढा खण्डिता सारूप्य निबन्धना उदाहरण - दोहा ।

वक्क धरि धीरज कपट करि जो वनि रहै मराल ।

उघरै अन्त गुलाव कवि अपनी बोलनि चाल ॥

अथ परकीया खण्डिता सामान्य निबन्धना उदाहरण

दोहा ।

सीख न मानै गुरुन की अहितहि हित मनमानि ।  
 सो पछितावै तासु फल ललन भयै हित हानि ॥  
 अथ गनिकाखण्डिता विशेष निबन्धना उदाहरण - दोहा ।  
 लालन सुरतरु धनदह्न अनहितकारी होय ।  
 तिनह्न को आदरन है यौ मानत बुध लोय ॥६॥

अथ भूषणचन्द्रिका, कारण निबन्धना - दोहा ।

लीनों राधा-मुख रचन विधि नै सार तमाम ।  
 तिहिं मग होय अकाश यह शशि में दीखत श्याम ॥

अथ कार्यनिबन्धना उदाहरण - दोहा ।

तुव पदनख की द्युति ककुक् गद्ग धोवन जल साथ ।  
 तिहिं कन मिलि दधिमथन में चन्द्र भयो है नाथ ॥

अथ प्रसुतादुर लक्षण - दोहा ।

प्रसुत करि प्रसुत जहा प्रगट होत मतिराम ।  
 प्रसुत अदुर कहत हैं तहा बुद्धि के धाम ॥२१६॥

मतिराम कहे है जहा प्रसुत करिके प्रसुत प्रगट होय  
 तहा बुद्धि के घर प्रसुतादुर कहते हैं ॥ २१६ ॥

उदाहरण - दोहा ।

सुवरन वरन सुवासजुत सरस दलनि सुकुमार ।  
 चम्पकली कौं तजत अलि तेही होत गंवार ॥

इहां छण गुप्तार्थ निकसे है यातें पर्यायोक्ति है ॥ २२२ ॥

द्वितीय पर्यायोक्ति लक्षण—दोहा ।

जहाँ कपट सौं करत है रुचिर मनोरथ काज ।

वरनत पर्यायोक्ति तहँ दूजी सुकवि समाज ॥

अहां छल सौं सुन्दरमन को काम करै तहा सुकवि स  
मूह दूसरी पर्यायोक्ति वरनत है ॥ २२४ ॥

उदाहरण सर्वेण ।

मनमोहन आय गये तितही जित खेलत बाल  
सखीगन में । तहँ आपुही मूंदे सलोनी के लो-  
चन चीर-मिहीचनी खेलन में ॥ दुरिवे कौं गई  
सगरी सखिया मतिराम कहै इतने छन में ।  
सुसकाय कौ राधिके कण्ठ लगाय छिप्यो कहीं  
जाय निकुजन में ॥ २२५ ॥

मनमोहन तहाही आय गये अहा बाल सखीगन में  
खिले ही तहा आपुही सलोनी के लोचन मूंदे चीर मि  
हीचनी खिलवा में सब सखी छिपवे कौं गई इतनी देर में  
हंसि कौ राधिका कौ कण्ठ से लगाय कौ कहीं निकुजन  
में जाय छिप्यो । इहां नैन मूदिवे के मिस सौं राधा को ले  
जावो इष्ट साथो यातें पर्यायोक्ति ॥ २२५ ॥

अथ व्याज स्तुति लक्षण दोहा ।

निन्दा में स्तुति पाइये स्तुति में निन्दा होय ।

सोना क रङ्ग की सुगन्ध सहित रस सहित पखुरीन  
की कोमल चम्पा की कली को तजत है है भ्रमर तेही  
गँवार होत है । इहा चम्पकली म्रकोया नायिका भ्रमर  
और नायका चारी विद्यमान हैं । यों प्रस्तुत है यार्ते प्रसू  
ताडुर है ॥ २१० ॥

अथ पर्यायोक्त लक्षण—दोहा ।

गम्य अर्थ प्रगटै तहा और वचन रचनानि ।  
वरनत पर्यायोक्ति तहँ कविजन ग्रन्थन जानि ॥

जहाँ गुप्त अर्थ पैदा होय अन्य वचननि की रचमान  
सों तहा पर्यायोक्ति वरनते हैं । कवि लोग ग्रन्थकों जानि  
करिकें ॥ २२१ ॥

उदाहरण—दोहा ।

जाके लोचन करत हैं कुवलय कञ्ज प्रकास ।  
सो भाऊ भूपालके करत हिये नित वास ॥२२२॥

जाके नैन कमल कुमोदिनीनि कों फुलावैं हैं सो राजा  
भावसिद्ध का हिया में सदा वास करे हैं । इहा विष्णु की  
दक्षिण नैन रवि है बायं नैन शशि है । सो हरि राजा का  
मन में बसे है । यह गुप्तार्थ निकली यार्ते पर्यायोक्ति है ॥

प्रगट द्रप कन्दरप को तेरो अङ्ग अनूप ।  
सु ती लियो कन्दर्प जिति सुन्दर श्याम सरूप ॥

तेरो सुन्दर भग है सो जाहिरही कामदेव को प्रति  
मान है । सो ती सुन्दर श्याम रूप कामदेव ने लीति लियो



व्याजस्तुति सी कहत हैं कविकोविद सब कीय ॥

निन्दा में बहाई पावे बहाई में निन्दा कहे सो व्याज  
स्तुति कहत है कवि कोविद सब कोई ॥

उदाहरण कवित्त ।

देखतही सब के चुरावती है चित्तनि कौं  
फेरि कै न देती यौ अनीति उमडार्ड है । कवि  
मतिराम काम तीरहू तें तीचन कटाचनि की  
कीरें छेदि छाती में गडार्ड है ॥ खजरीट कज  
मीन मृगनि के नैननि की छीनि छीनि लेती  
छवि ऐसी तै लडार्ड है । तेरी अखियानि में वि-  
लोकी यह बड़ी बात इते पर बड़ी बड़ी पावती  
बडार्ड है ॥ २७ ॥

सब से देखतें चित्तनि कौं चुरातो है । फेरि नहीं देतो  
ऐसी कुनीति उमगाई है मतिराम कवि कहे है कामवान  
नि से भी पैंने कटाचनि की अनी छेदि के छाती में गडार्ड  
है खजन कमल मच्छी हरिन इनके मृगनिकी सीमा घोसि  
घासि लेती तैने ऐसी लाडिली करी है तेरी आखिन में  
यह बड़ी बात देखी इतने पर ज्यादा ज्यादा बहाई पावती  
हैं इहा अखियानि को निन्दा के मिस से बहाई है यातें  
व्याजस्तुति है ॥ १२० ॥

द्वितीय उदाहरण ।

याही कौं पठाई बडो काम करि आई बड्डी  
तेरिये बडाई लखे लोचन लज्जिले सों । सांची  
क्यो न कहै कछू भोकी किधौं आपुही कौं पाय  
बकसीस, लाई बसन छवीले सों ॥ मतिराम सु  
कवि सँदेसो अनुमानियत तेरे नखसिख अङ्ग  
हरख कटीले सो । तू तो है रसीली रसवातनि  
बनाय जानै मेरे जानि आई रस राखि कै रसी-  
ले सों ॥ २२८ ॥

याही काम कौं भेजी ही बडो काम करि आई तेरी  
ही बड्डी बडाई है लज्जिले नैननि सों देखै है साची क्यो  
नहीं कहै है थोरी भोकी भो कै आपुही कौं बकसीस पाय  
कै छवीले सों बस्य लाइ है मतिराम सुकवि कहै है सँदेसो  
अनुमान करि ये है तेरे मुह से चोटो तक इर्षित कटीले  
अङ्ग से तू तो रसीली है रस की बात बनाय जानै है मेरी  
जानि मैं रसीले सों रस राखि कै आई है इहा अन्यसंभोग  
दुःखिता नायका स्तुति में निन्दा करै है याते व्याजस्तुति  
है । २२८ ।

वनिताभूपन ॥ व्याजस्तुति उद्यम ।

इककी निन्दास्तुतिमिस स्तुतिनिदा जहँ जौय ।  
पर की निन्दास्तुति सैं परस्तुति निन्दा होय ॥

पर की अस्तुति से जवै पर की अस्तुति साज ।  
व्याजस्तुति यौ पांचविधि कहत सकल कविराज ॥

वाही निन्दा से वाही को सुति दोहा ।

अनखानी बोलत वचन अनुचित पतिहि निहारि ।  
तऊ लगत नीकी सखिन अरी अनोखी नारि ॥

वृहद्व्यगर्थ चन्द्रिका ।

वाही को सुति में वाही को निन्दा ।

मैं प्यारी हों याहि तैं धारि नीलपट लाल ।  
प्रातहि आय दिखाय छवि कीनी मोहि निहाल ॥  
कौन दुखारी कौं दुखित प्रात कुशोभ दिवाय ।  
अस्तुति मिसनिन्दा करत व्याजस्तुति इहिं भाय ॥

वृहद्व्यगर्थ चन्द्रिका सवैया ।

स्वारथ में रत हैं सबही परमारथ साधत  
नाहिन कोऊ । हैं परमारथ में रत लोय गुलाब  
कहै विरले जस जोऊ ॥ जो परमारथ स्वाग्य  
हीन सु आलस लोभित कीरति कोऊ । हो तुम  
नीतिनिधान लला परमारथ स्वारथ साधत  
दोऊ ॥ ३ ॥

दोहा ।

निशिवसि परतिय पासपिय करत परार्थ अथाह ।  
प्रातआत निजघर करत स्वार्थ नीति प्रतिनाह ॥

अस्तुतिमिस निन्दाकरत व्याजस्तुति छां आहि ।

अस्तुति में निन्दा कढै व्याजस्तुति कहि ताहि ॥

घोर को निन्दा सों घोर की सुति ।

दशशिर कुमति कराल नै कख्यो राम अपकार ।

तज्यो विभीषन ताहि सों कीनौ काम उदार ॥

घोर की सुति सें घोर की निन्दा दोहा ।

धन्य विभीषन राम की आयो सरन सुजान ।

धिक है जानै अनुजअस दियोनिकासि निदान ॥

घोर की सुति से घोर की सुति ।

धन्य धन्य है राधिका पाये पति भगवान ।

धन्य राधिका मात जिहि जाई सुता सुजान ॥

अथ व्याजनिन्दा सखण दोहा ।

निन्दा सो जहँ घोर की निन्दा प्रगटित होय ।

तहाँ व्याजनिन्दा कहत कवि कोविद सब कोय ॥

जहा निन्दा सों घोर की निन्दा प्रगट होय तहा व्याज

निन्दा कहते हैं कवि पण्डित सब कोरे याको एकही भेद

है । = २८ ॥

एटाहरण दोहा ।

प्रगट कुटिलता जो करौ हम पर श्याम सरोस ।

मधुप जोग विप्र उगलिये कछु न तिहारो दोस ॥

गोपिन की, उक्ति उद्धव से जो श्याम ने रोस सहित हम पे कुटिलता जाहर करी है हे मधुप से जोगरूप विष को उगलिवो है तुमारी कछू दोष नहीं है इहा कृष्ण की निन्दा से उद्धव की निन्दा है याते ध्याज निन्दा है ।

वनिताभूषण ॥ ध्याजनिन्दा लक्षण दोहा ।

पर की निन्दा से जहाँ पर की निन्दा होय ।  
तहाँ व्याजनिन्दा डूकहि भेद कहत कवि लोय ॥

अथ गनिकाकलहातरिता व्याजनिन्दा उदाहरण ।

सुरतरु सम प्रिय तजि गयो करि विनती उपचार ।  
भाल मोर तू निद्य है निद्य तोर लिपिकार ॥२॥

अथ आक्षेपलक्षण दोहा ।

जहाँ कही निज बातकी समुभिकरत प्रतिषेध ।  
तहाँ कहत आक्षेप है कविजन मति उत्सेध ॥

जहा कही दुर्द अपनी बात की समुभिक के नटे तहा आक्षेप कहते हैं मति उत्सेध कवि लोग हैं ते ॥ १२१ ॥

उदाहरण सवेया ।

द्वै मृदुपायन जावक को रंग नाह की चित्त रंगे रंग जाते । अजन द्वै करी नैननि में सुखमा वटि श्याम सरोज प्रभा तें ॥ सोने के भूषण अग रचौ मतिराम सवै वस कीवे की घाते । यौही

चलै न सिंगार सुभावहि मै सखि भूलि कही सब  
वातें ॥ २३२ ॥

सखी उक्ति नायका प्रति कोमल पगन में जावक को  
रग दे जा रंग से नाह को चित्त रंगे कल्लल लगाय। कै ने  
ननि में श्याम कमल की आभा से अधिक सुखमा करी  
सोना का गहना शरीर में पहरी अतिराम कहै है रूपूण  
बस कर वाकी घात से है सखि ऐसेहो सुभाव को सिंगार  
सेही चलो क्यों न मैने सब घात भूलिके कही है इहां  
पहिले सिंगार न करिबो कछो ताको समुक्ति के फेखी  
यातें आक्षेप है ॥ २३२ ॥

द्वितीयाक्षेप लक्षण दोहा ।

जहाँ न साँध निषेध है है निषेध आभास ।  
तहँ औरो आक्षेप को कविजन करत प्रकास ॥  
जहा साधो निषेध नहीं है नटवा को आभास है  
तहा दूसरा आक्षेप को कवि लोग वर्णन करते हैं ।

उदाहरण दोहा ।

हौ न कहत तुम जानिही लाल बाल की वात ।  
असुवां उडगन परत है हौं न चहत उतपात ॥

मैं नहीं कहती हौं आप जानि जाबोगे हे लाल बाल  
को वात को आसू रूप तारा टूटे हैं सो उतपात हुयो चाहे  
है इहा मैं नहीं कहती हौं यी नटै है और सब कहती है  
यह निषेध को आभास है याते दूसरो आक्षेप है ॥ २३३ ॥

अथ तृतीयाक्षेप लक्षण दोहा ॥

जहँ विधि प्रगट बखानिये क्यौ निषेध प्रकास ।

तहँ औरै आक्षेप कहि बरनत बुद्धि विलास ॥

जहां करी यह प्रगट कहिये न करी यह गुप्त कहे  
तहां और आक्षेप कहि कै बुद्धि के विलास सँ बरनते हैं ।

सदाहरण कवित्त ।

जा दिन ते चलिवे की चरचा चलाई तुम  
ता दिन ते वाकै पियराई तन छाई है । कवि  
मतिराम छोड़े भूपन वसन पान सखिन सौं खे  
लनि हसनि विसराई है ॥ आई ऋतु सुरभि सु  
हाई प्रीति वाके चित ऐसे मै चली तो लाल  
रावरी बडाई है । सोवति न रैन दिन रोवत र  
हति बाल बूझे तैं कहत सुधि मायके की आई  
है ॥ २३६ ॥

सखी सति नायक प्रति तुममे जिम रोज से चलने का  
बिकर किया है तिस रोज से उसके शरीर में पियराई  
छाय गई है मतिराम कहे है भूपन वस्त पान छोड़े है  
अर्थात् शृङ्गार नहीं करती है सखीन सौं खेलिषो हासो  
करिषो भूलि गई है वस्त फटतु भाइ है वाके चित में  
प्रीति सुहाई है हे लाल ऐसे समय में चली तो आप की  
बडाई है राति दिन सोती नहीं है रोती रहती है बाल है

धो वृक्षने से कहती है पीहर को यादि आई है इहा चली  
यह प्रगट है, ऐसे समय में न चली यह गुप्त है यातैं तीस  
री आवेप है ॥ २३६ ॥

पुन दोहा ।

कोपनि तै किसलय जबै होहि कलिन तै कौल ।  
तव चलादये चलन की चर्चा नायक नौल ॥

जब कौपलनि सें पत्र होय कलीन सै कमल होय है  
नबोन नायक तबही चलबा की बात चलादये अर्थात् च  
लिये । इहाँ धनिये यह प्रगट है, वसन्त में न चलिये यह  
गुप्त है यातैं तीसरी आवेप है ॥ २३७ ॥

अथ विरोधाभास लक्षण दोहा ।

जहँ विरोध सो लगत है हीत न साँच विरोध ।  
कहत विरोधाभास तहँ बुधजन बुद्धि विबोध ॥

जहा विरोध सो लगे सल्य में विरोध नहीं होय तहा  
विरोधाभास कहते हैं पंडित लोग बुद्धि के बोध सें ॥२३८॥

उदाहरण सवैया ।

दोल लुरे सहजादनि के दल जानत है स-  
गरो जग साखी । मारु बजै रस वीर कृके वर  
वीरनि किति बडी अभिलाखी ॥ नाथ तनै कर-  
तूति करी जस जोति जगी भतिराम सुभाखी ।  
शोनित बैरिन की वरसाय कै राव सतारन में  
रज राखी ॥ २३९ ॥



दोनु सहजादान का कटक जुग्या सब जगत जानै है  
 और साखी है मारु राग बजै है बोररस के छके सुन्दर  
 जोहान नै बही की नि<sup>१</sup> चाही गोपीनाथ के सुत नै करतूति  
 करो तिस सै जस की जोति जागी सो मतिराम नै भाखी  
 बैरीन को सोही फेलाय के राव शत्रुघाल नै सयाम में र  
 जपूती राखी । इहा लोही बरसने सै रज रेत नहीं रहे  
 यह विरोध सो दोखे है यातै विरोधाभास है ॥ २३८ ॥

बनिताभूषण । विप्रलब्धा उदाहरन दोहा ।

सास ननद यातान कौं आई नीठि सुवाय ।  
 अब आली घर गमन की सुधि आयें सुधि जाय ।

अथ विभावना लक्षण दोहा ।

विना हेतु जहँ बरनिये प्रगट होत है काज ।  
 प्रगटित तहँ विभावना कहत सकल कविराज ॥

जहा विना कारन काज प्रगट हो ती बरनिये है तहा  
 जाहर विभावना सब कविराज कहत है ॥ २४० ॥

उदाहरण सबैया ।

वातनि जाय लगाय लई रसही रस में मन  
 हाथ के लीनों । लाल तिहारे बुलावन को मति  
 राम में बोल कछी परवीनों ॥ वेग चलौ न वि-  
 लम्ब करौ लख्यौ बाल नवेली को नेह नवीनों ।  
 लाजभरी अखिया विहँसी बलि बोल कहें विन  
 उत्तर दीनों ॥ २४१ ॥

सखी उक्ति नायक प्रति जाय कै वातन में लगा लीमी  
 रसहो रस में वाको मन हाथ में करि लियो है लाल भाष  
 के मुलावा को मैने प्रवीन बचन कछौ सो जलदी चली  
 दर भति करी नवेली बाल को नयो नेह देख्यो है लाल  
 की भरी आखें इसी में वारी लाल बाल कछा बिना उत्तर  
 दियो । इहा बोल कारन बिना उत्तर काज भयो यातें प्र-  
 थम विभावना है ॥ २४१ ॥

द्वितीय विभावना लक्षण दोहा ।

थोरे हेतुनि सौ जहाँ प्रगट होत है काज ।  
 तहँ विभावना औरज वरनत बुद्धि जिहाज ॥

थोहा कारन सौ जहाँ काज प्रगट होत है तथा और  
 भी विभावना बुद्धि के जिहाज वरनते हैं ॥ २४२ ॥

उदाहरण सबैया ।

तेरो कछौ सिगरो में क्रियो निसि द्योस  
 तथ्यो तिहुं तापनि पाई । मेरो कछौ अब तू करि  
 जो सब दाह भिटै परिहै सियराई ॥ शकर-पा-  
 यनि में लागि रे मन थोरेही वातनि सिद्धि सु-  
 हाई । आक धतूरे के फूल घढाये तैं रीसत है  
 तिहुलोक के साई ॥ २४३ ॥

कवि की उक्ति वा भक्त की मन सैं—मैने तेरो सब कछौ  
 कछौ राति दिन तीनों तापन कौं प्राप्त होय कै तथ्यो भय

तू मेरो कछो करि जो सौं सब जन्मनि मिटैं ठडक पडैगी  
 परे मन शिव के पगन में लगि घोरो हो बातनि में सुहा  
 वनी मिहि है पाक धतूरा के फूल चढावा सौं तीनों लोक  
 को स्वामी रोभ है । इहा पाक धतूरा के फूल घोरा का  
 रन सौं बिलोकनाथ को रोभबो पूरो काज भयो यातैं दू  
 सरो विभावना है ॥ २४९ ॥

द्वितीय विभावना लक्षण दोहा ।

जहाँ हेतु प्रतिबन्धक बरनत प्रगटै काज ।

बरनत और विभावना तहँ कविराज समाज ॥

जहा कारन प्रतिबन्धक सैं काज प्रगट्यौ बरनतैं तहा  
 और विभावना बरनते हैं कविराजनि के समाज हैं ते ॥ २४४

उदाहरण दोहा ।

मानत लाज लगाम नहि नैक न गहत मरोर ।

होत तोहि लखि वाल के दृग तुरग मुहुजोर ॥

साजरूपी लगाम कौं नहीं मानै है नैक मरोडनहीं  
 पकडते हैं तोकौं देखि के नायिका के दृग तुरग हैं सो  
 मुहुजोर होते है । इहा साज कारन नेवन को चलवा को  
 रोकवेवारो है तो भी दौडबो काज भयो यातैं तीसरो वि  
 भावना है ॥ २४५ ॥

चतुर्थ विभावना लक्षण दोहा ।

हेतु काज को जो नहीं ताते काज उदोत ।

यासौ और विभावना कहत सकल कविगीत ॥

जो कारण को कारण नहीं है ताहीं काज होय याहीं  
और विभावना सब कविन के गीत कहते हैं ॥ २४६ ॥

उदाहरण दोहा ।

हंसत वाल के वदन में यौं छवि कछू अतूल ।  
फूली चम्पकबेलि तैं भरत चमेली फूल ॥

हंसतै नायिका के मुख में ऐसे कछू अतूल छवि है  
फूलो हुई चपा की बेलि सैं चमेली के फूल भरै हैं । इहा  
चम्पक बेलि चमेली का फूलनि को कारण नहीं ताहीं  
कारण भयो यातै चौथी विभावना ॥ २४७ ॥

पुन कविन ।

चन्दमुखी हाँसी में चमेली की लता सी होति  
चम्पकलता सी अंग जोति कौं धरति है । कवि  
मतिराम तेरे अंग की सुवास लहै कौन बेलि  
रूप यह जानी ना परति है ॥ नैसुक निहारि कै  
छवीली नैन कोरनि ते ऐसी अचिरज की क-  
लानि आचरति है । ललित तमाल श्याम रसिक  
रसाल कौते कदम मुकुल के कुलनि सौं करति  
है ॥ २४८ ॥

चन्दमुखी है सो हंसतै चमेली की बेलि सी होय है  
अंग की जोति की चपक लता सी धारण करै है मतिराम  
कवि कहै है तेरे अंग को सुवास पाये सैं कौन बेलि में इस

दृष्ट की नहीं जानी परे है जराक देखि कै छवीली है सो  
 ऐसी अचिरज की कलानि कौं रचे हे तेहो मुन्दर तमान  
 जो ग्याम रसिक रसाल हैं तिनकौं कदम्ब के फूलनि के  
 समूह सौं करे है । इहा तमान वच है सो कदम्ब के फू  
 लनि को कारन नहीं तामौं काज भयो यातैं चौथी वि  
 भावना ॥ २४८ ॥

पचम विभावना लक्षण दोहा ।

वरनत हेतु विरोध ते उपजत हैं जहँ काज ।  
 तहँ विभावना औरज वरनत कवि सिरताज ॥

वरनन करते जहा विरोधी कारन सैं कारन उपजे है  
 तहा भी और विभावना सिरताज कवि वरनते हैं ॥२४९॥

उदाहरन सवेया ।

मोरपखा मतिराम किरौट में कण्ठ बनी वन-  
 माल सुझाई । मोहन की मुसकानि मनोहर कु-  
 ण्डल डोलनि में छवि छाई ॥ लोचन लोल वि  
 साल विलोकनि को न विलोकि भयो वस भाई ।  
 वा मुख की मधुराई कहा कही मीठी लगे अँ  
 खियान लुनाई ॥ २५० ॥

मतिराम कहे है मुकुट में मोरन को पर है, कण्ठ में  
 मुहावनी वनमाला बनी है, लक्षण की हसनि है सो मन  
 कौं हरवे वारी है कुण्डलनि की हसनि में छवि छाया रही

है, चञ्चल बड़े नैनन को चितवनि कौ देखि कै हे भाई  
 वस की नहीं भयो वा मुख की मिठाई कौ कछा कछौ  
 आखिन की लुनाई मीठी लगे है । इहाँ लुनाई है सो मि  
 ठाई को विरह कारण है तासौ कारण भयो यातै पंचम  
 विभावना है ॥ २५० ॥

परकीया उल्लखिहता पंचम विभावना उदा० दोहा ।

कुल नारिन भय ताप सहि आई सीतल धाम ।  
 छां पिय विनहि मकर अली जारत मोहिनिकाम ॥

छठी विभावना सूचण दोहा ।

जहाँ काज ते हेतु कौ वरनत प्रगट प्रकास ।  
 तहाँ विभावना औरज वरनत बुद्धि विलास ॥

जहा कारण सैं कारण को जाहर प्रकास वरनै तहा  
 और भी विभावना बुद्धि के विलास सैं वरनते हैं ॥ २५१ ॥

उदाहरण दोहा ।

भयो सिन्धु ते विधु सुकवि वरनत विना विचार ।  
 उपज्यौ तौ मुख इन्दु ते प्रेमपयोधि अपार ॥

समुद्र सैं चन्द्रमा भयो यह सुकवि विना विचार वरनते  
 है तेरे मुख चन्द्रमा सैं प्रेमरूप समुद्र अपार पैदा हुयो है ।  
 इहा इन्दु कारण सैं पयोधि कारण उपज्यौ यातै छठी वि  
 भावना ॥ २५२ ॥

धनिताभूपन । अथ गनिका उत्कृष्टिता कृठो विभावना  
उदाहरण दोहा ।

धनदायक आयो नहीं किहि कारन द्रुहि यान ।  
सौ भापत चख भाखन में सरिता वही अमान ॥  
अथ विशेषीक्ति लक्षण दोहा ।

जहँ परिपूरन हेतु ते प्रगट होत नहि काज ।  
विशेषीक्ति तहँ कहत हैं सकल सुकवि सिरताज ॥

जहा पूरन कारन से काज प्रगट नहीं होय तहा वि  
शेषीक्ति कहते हैं सब सिरताज सुकवि ॥ १५२ ॥

उदाहरण दोहा ।

पियत रहत पिय नैन यह तेरी मृदुमुसुकानि ।  
तऊ न होति मयकमुखि तनक प्यास की हानि ॥

पी के नैन है सो यह तेरो कोमल हंसनि कौ पीते र  
हते है हे चन्दमुखी तौ भी प्यास की कमी जरा नहीं  
होती है । पीबो पूरन कारन है तौ भी प्यास मिटिबो  
कारज नहीं भयो यातैं विशेषीक्ति है ॥ १५४ ॥

पुन दोहा ।

प्यौ राख्यौ परदेश ते अति अद्भुत दरसाय ।  
कनक-कलस पानिप-भरे सगुन उरोज दिखाय ॥

पीतम कौ परदेश सैं राखि लियो अति अचिरज दि  
खाय कै सोना के घट पानी के भरे हुए गुनसहित कुष

दिखाय कै । इहँ भरे घटन को टीखिवो चलिवा की स  
गुन रूप कारन है तऊ चलिबो कारन नहीं भयो यातँ  
विशेषोक्ति है ॥ १५५ ॥

हृदयग्यार्थ । मृदुमाना छदाहरन सबैया ॥

पीतम को पहिली अपराध निहारि न ती  
कटु वात कही । भौह चढाय सनेह नसाय रि-  
साय कछू नहिँ गाँस गही ॥ मीख सहेलिन की  
न सुनी नहिँ शोक हुताशन देह दही । केवल  
लौयन कीयन में भरि वारि लली सरमाय रही ॥

दोहा ।

शोक हुताशन रूप करु विशेषोक्ति जुग जोय ।  
विशेषोक्ति अति हेतु है तऊ काज नहिँ होय ॥

सबैया ।

सीलसनी सजनीन समीप गुलाव कछू द-  
मनी दरसावै । ना गुरुलोग कुजोग कयै नहिँ  
रोग सँजोग शरीर लखावै ॥ नेह नहीं ननदीन  
निहारत क्यौ मन मोहिनि दीठि दुगावै ॥ दास  
दसा समही धव सो कस सास बुलावत पास न  
आवै ॥ ३ ॥



दोहा ।

मुग्धा विरहिनि क्लृप्त सकुच सास पास नहिँजाय ।  
कवि गुलाब भूषन यहाँ विशेषोक्ति दरसाय ॥

अथ असभव लक्षण दोहा ।

जहाँ अर्थ के सिद्धि को सम्भव वचन न होय ।  
तहाँ असम्भव होत हैं वरनत है सब कोय ॥

जहाँ प्रयोजन की सिद्धि को सम्भव वचन नहीं होय  
तहाँ असम्भव होता है सब कोई वरनते हैं ॥ २५६ ॥

उदाहरण सबैया ।

यों दुख है ब्रजवासिन कों ब्रज कों तजि कै  
मथुरा सुख पैहै । वै रसकेलि विलासिनि कों  
वन कुजनि की बतिया बिसरैहैं ॥ जोग सिखा-  
वन कों हम कों बहुछौं तुम सें उठि धावनि  
ऐहैं । ऊधो नही हम जानत ही मनमोहन कू  
वरी हाथ विकैहैं ॥ २५७ ॥

ब्रजवासिन कों ऐसे दुख है करिके ब्रज कों छोड़ि  
करिके मथुरा में सुख पावेंगे वै रस की क्रीडान के आनन्द  
को वन का कुजन की बातें भूलेंगे जोग सिखानि के वास्ते  
फेरि आप से बसीठ उठि आवेंगे । हे ऊधो हम सब नहीं  
जानें ही मोहन कूवरी के हाथ विकेंगे । इहाँ ब्रज कों तजि

मथुरा में सुख पावो रस की बात भूलिबो लखी की भावो  
सभव नहीं हो सो भयो यतैं असभव नहीं है ॥ २५० ॥

बनिताभूपन । मथ्यावासकसज्जा असभव उदा० दोहा ।  
के जानैँ ही यह दिवस मेरो ह्वै है आज ।

साँवन तीज उच्छाह दिन तजि वर सौति समाज ॥

अथ असगति लक्षण दोहा ।

होत हेतु जहँ और थल काज और थल होय ।

तहाँ असगति कहत हैं कवि रस बुद्धि समोय ॥

जहाँ कारन और ठौर होय कारण और ठौर होय  
तहाँ असगति कहते हैं कवि है सो रस में बुद्धि की भेय कै ॥

सदाहरण सवैया ।

दारुन तेज दिलीस के बीरनि काह्न न वस

के वानि बजाये । छोडि हथ्यारनि हाथनि जोरि

तहाँ सबही मिलि मूड मुडाये ॥ हाडा हठी

रछी ऐड किये मतिराम दिगन्तन में जस छाये ।

भोज के मूछनि लाज रही मुख औरनि लाज

के भार नवाये ॥ २५६ ॥

दिलीपति के भयकर तेज सैं कोई सूरनि नै बश के

विरद नहीं बजाये शस्त्रन की गेरि जे हाथ जोरि के तहाँ

सब नै मिलि के मूड मुडा लिये हठोलो हाडा है सो' अ

कह किये रछी मतिराम कहै है दिसा के अवसाननि में

जस छाये, राजा भोज को मूकनि में लाज रही औरनि ने  
 मुख लाज के बोझ से नीचे करि लिये । इहाँ लाज कारन  
 भोज की मूकनि में बोझ कारन औरनि के मुख पै यातै  
 असंगति है ॥ २५६ ॥

पुन दोहा ।

राधा के दृग खिल मै मूदे नन्दकुमार ।  
 करनि लगी दृगकोर सो भई छेदि उर पार ॥

कृष्ण ने चोरमिहीचनी खेल में राधा के नैन मूदे तब  
 दृगनि की अनी छाद्यनि के लगी सो छेदि के उर में पार  
 भई । इहाँ दृगकोर लगिबो कारन छाद्यन मै छेदिबो का  
 रन उर में भयो यातै असंगति है ॥ १६० ॥

द्वितीय असंगति लक्षण दोहा ।

और ठौर करनीय जो करत औरही ठौर ।  
 वरनत सब कविराज हैं यहौ असंगति और ॥

जो और ठौर करिबे जोग्य है सो औरही ठौर कर  
 सब कविराज वरनते हैं यह भो और असंगति है ॥ २६१ ॥

उदाहरण दोहा ।

पिय नैननि के राग को भूपन सजे बनाय ।  
 लखें तिहारी छवि सुतौ सौति दृगनि अधिकाया

पिय के नैननि के अनुराग को भूपन बनाय के पहिरे  
 सो तो तुम्हारे छवि देखि के सौतिन की आखिन में अ

धिकायो दृष्टा पियनैननि मे करिबे योग्य राग सीति इ  
गनि में कियो याते असगति राग प्रेम ओर लाल रग सी  
तिन के रोस भयो ॥ २६२ ॥

सवैया ।

घोर नहीं घनकी चहुँओरन दौर न दामि  
नि सोर कलाप्यौ । वादर नाहि न दादुर बोलत  
वीर बलाक न चातक जाप्यौ ॥ कारन आन गु  
लाव कछू नहिँ दीसत वारि बयार न व्याप्यौ ।  
का गुन आज प्रभात बडे अलि फागुन राग म-  
लार अलाप्यौ ॥ १ ॥

दोहा ।

फागुन गाव मलार को जानि असगति दौर ।  
द्वितीय और थल काम कों करै औरही ठौर ॥

द्वितीय असगति लक्षण दोहा ।

करन लगै जो काज कछु ताते करै विरुद्ध ।  
यही असगति कहत हैं कवि मतिराम विवुद्ध ॥

जो कछु काम करिबे लगै तो तासों लक्षटो करै यह  
भी असगति कहते हैं मतिराम कवि कहे हे विवुध हे ते ॥

उदाहरण दोहा ।

उदित भयो है जलद तू जग को जीवनदानि ।  
मेरो जीवन लेत है कौन बैर मन आनि ॥२६४॥

हे मेघ तू जगत को जीवनदानो उदित भयो है और  
 कौने बैर मन में लाय करिके मेरो जीवन ले है अर्थात् वि  
 रहिमी कौं दुखद है जीवन जल और जीवो इहा जीवन  
 देवा की उदित होय जीवन लेयो उलटो कियो यातैं प  
 सगति है ॥ २६४ ॥

अथ विषम लक्षण दोहा ।

जहाँ न हैं अनुरूप है तिनकी घटना होय ।  
 विषम तहाँ बरनन करत कवि कोविद सब कोय ॥

जहा दोय समान रूप नहीं है तिनको रचना हाय  
 तथा विषम बरनन करते है कवि पंडित सब कोइ ॥२६५॥

पटाहरण सवैया ।

जधो जू सूधो विचार है धौं जु कछू समु  
 भैं हमहू ब्रजवासी । मानिहैं जो अनुरूप कही  
 मतिराम भली यह बात प्रकासी ॥ जोग कहाँ  
 मुनि-लोगन जोग कहाँ अबला मति है चपला  
 सी । श्याम कहाँ अभिराम सरूप कुरूप कहाँ  
 वह कूवरी दामी ॥ २६६ ॥

हे जधो जू देखी कछू सूधो विचार है जो हम ब्रज  
 वासी भी समुभैं जो हम भाषिक कही तो मानेगी मति  
 राम कहे है यह भली बात प्रकाशी मुनिलोगनि के ला  
 यक जोग कहाँ और चपला सी बुद्धि की स्त्री कहाँ सुंदर

कृष्ण कहा वह कूबरी दासी कुरूप कहा इहा जोग में श्री  
वनितान में कृष्ण में और कूबरी में अनमिलते को सग है  
यातें विषम है ॥ २६६ ॥

मानहु आयो है राज कह चटि बैद्यो है ऐसे  
पलास के खौटें । गुंज गरै सिर मोरपखा मति-  
राम हो गाय चरावत चोटें ॥ मोतिन को मेरो  
तोख्यो हरा गहि हाथनि सौं रही चूनरी ओटें ।  
ऐसही डोलत कैल भयें तुम्है लाज न आवत  
कामरी ओटें ॥ २६७ ॥

मानहु कछु राज आ गयो है ऐसे छीलका पोखरा में  
चटि बैद्यो है गला में चिरमठी है सिर पै मोरनि को पर  
है मतिराम कहे है अहो चाख्यो तरफ गाय चरावे है मेरो  
मोतीन की हार तोरि गेया हाथनि सौं पकडि रही है चू-  
नरी ओटें हुए ऐसेही कैल भये डोलते ही तुमको कामरी  
ओटें लाज नहीं आवै इहा गुजा मोती कामरी चूनरी  
करि कृष्ण राधा में अनमिलते को सग है यातें विषम है ॥

द्वितीय विषम लक्षण ।

जहाँ बरनिये हेतु ते उपजत काज विरूप ।  
और विषम तहँ कहत हैं कवि मतिराम अनूपा ॥

जहा कारन से विरूप कारण उपजतो बरनिये तहा  
और विषम कहते है मतिराम कहे हैं सुंदर कवि से हैं ते ।

सदाहरण कवित्त ।

वारने सकल एक रोरी ही की आड पर  
हाहा न पहरि आभरन और अङ्ग में । कवि म  
तिराम जैसे तीक्ष्ण कटाक्ष तेरे ऐसे कहा सर  
हैं अनङ्ग के न खग मै ॥ सहज सरूप सुयराई  
रीभ्यो मेरो मन डोलत है तेरी अद्भुत को त  
रग में । सेतसारी हो सौं सब सौते रगो श्याम  
रग सेतसारीही सौं श्याम रंगे लाल रग में ॥

एक रोनी की आड पै ही सब वार फेर हैं हाहा खाल  
ङ्ग और गहना अंग में मति पहरे मतिराम कवि कहे है  
जैसे पाने तेरे कटाक्ष है ऐसे कार्ड कामदेव के तरकस में  
तीर हैं सहज सरूप की सुदरता में मेरो मन रीभ्यो हुयो  
तेरी अचरज की तरग में डोलै है सुपेद साही सैं ही सब  
सौति श्याम रग मै रंगो सुपेद सारोही सौ श्याम को लाल  
रग में रंगे अर्थात् सौति दुख सैं मनीन भई श्याम प्रेमासक्त  
भये इहा सारी कारन से तरग है कारज कालो लाल रग  
है याते विषम है ॥ १६८ ॥

तृतीय विषम लक्षण दोहा ।

दृष्ट अर्थ उद्यमहि ते जहँ अनिष्ट हो जाय ।  
और विषम वरनत तहा जे कवि कोविदराय ॥

अच्छे प्रयोजन के उपाय से जहा अनिष्ट हो जाय तहा  
श्रीर विषम वरनते हैं जे कवि पंडितन के राजा हैं ते ॥

उदाहरण दोहा ।

विरहआँच डरि मन सखी घन सुंदर तन जाय ।  
दुगुन दाह वाढै तहाँ आयुहि जाय सिराय ॥

सखी है सो विरह की आग से मन में डरिकै सुंदर  
तन में कपूर लगावै तहा दूनी दाह बढै आयुही सीरी हो  
जाय इहा ताप मिटावा का उद्यम से दूनो ताप भई यातै  
तोसरो विषम है ॥ २७१ ॥

अथ सम लक्षण दोहा ।

जहाँ दुह्र अनुरूप को कविजन करत बखान ।  
तहा समुक्ति सम कहत हैं जे सुरग रस ज्ञान ॥

जहा दोनो समान रूप को कवि लोग बखान करें त  
हा विचारि कै सम कहतै है जे रसज्ञान में भुरग हैं ते ॥

उदाहरण सवैया ।

मोहन को मुखचन्द अली निज नैन चको-  
रन को दरसावै । लोचन भौर गुपाल के आपने  
आनन वारिज बीच वसावै ॥ तोतै लहै मतिराम  
महा छवि पानपियारे तैं तू छवि पावै । तो स  
जनी सब के मन भावै जु सोन से अग्नि लाल  
मिलावै ॥ २७३ ॥

हे अली मोहन को मुख चन्द्रमा है सो अपना नैन च



कोरनि कीं दिखावै गोपाल के कोचन भौरान की अपने  
 मुख कमल के बीच मैं बसावै अर्थात् मोहन की मुख तू  
 देखे तेरो मुख मोहन कीं दिखावै अतिराम कहै है प्यारो  
 तो सै महा छवि पावै प्रानप्यारा सैं तू छवि पावै हे सखी  
 तो सब के मन मैं भावै जो सोना सा अगनि कीं लाल सैं  
 मिलावै इहां सोना माल और राधाकृष्ण मैं जयायोग्य  
 को सग है यातैं सम है ॥ २०२ ॥

द्वितीय सम लक्षण ।

जहाँ हेतु ते काज को वरनत उचित सरूप ।  
 वरनत तहँ सम औरज जे कवि कोविद् भूप ॥

जहा कारन सैं कारज को उचित सरूप वरने तहा  
 और भो सम वरनते हैं जे कवि पंडितन के राजा हैं ते ॥

उदाहरन दोहा ।

करत लाल मनुहारि पै तू न लखत द्रुहि और ।  
 ऐसो उर जु कठोर तौ उचितहि उरज कठोर ॥

लाल मनुहारि करते हैं तौ भी तू इस तरफ कौ नहीं  
 देखे है ऐसो हृदो जो कठिन है इहां तौ कुछ न्यायही क  
 ठिन है इहा कठोर उर कारन सैं कुछ कठोर कारज उ  
 चित वरने यातैं सम है ॥ २०५ ॥

तृतीय सम लक्षण ।

ताकी सिद्धि अनिष्ट विन उद्यम जाके अर्थ ।  
 तासैं सम औरो कहत जे कविराज समर्थ २०६

जिसके वास्ते उद्यम तिसकी सिद्धि निर्विघ्न होय तिस  
सी और सम कहते हैं जे समर्थ कविराज हैं ते ।

उदाहरण सबैया ।

कोज नहीं वरजै मतिराम रही तितही जि-  
तही मन भायो । काहे कौ सौहैं हजार करौ  
तुम तो कवहूँ अपराध न ठायो ॥ सोवन दीजे  
न दीजे हमै दुख यौही कहा रसवाद बढायो ।  
मान रह्यौ ई नहीं मनमोहन मानिनी होय सो  
मानै मनायो ॥ २७७ ॥

नायिका की उक्ति नायक प्रति मतिराम कहे है तुम  
को कोइ नहीं मनै करै लहां मन राजी है तहाही रही  
खों हजार सौगन्द खावी ही तुमने तो कटे भी अपराध  
नहीं कियो सोवा दीजे हमको दुख नहीं दीजिये यौ ही  
रस को जिकर काइ बढायो है हे मनमोहन मानती है  
हो नहीं मानिनी होय सो मनाये सै मानै इहा मनावा की  
उद्यम कियो सो सिद्ध भयो याते तीसरी सम है ॥ २७७ ॥

अथ विचित्र लक्षण दोहा ।

जहाँ करत उद्यम कछू फल चाहत विपरीति ।  
वरनत तहाँ विचित्र कहि जे कवित्त रस प्रीति ॥

जहा कछू नपाय करतै उलटो फल चाहे तहां विचि  
त्रालकार कहिके वरनते हैं जे काव्य रस में प्रीति राखै ॥

० - - - - - उदाहरण कवित्त ।

औरनि के तेज सीरे करिवे के हेत आंच  
करै तेज तेरो दिशि विदिशि अपार मै । परमुख  
अधिक अंधेरी करिवे को फ़ैली जम की उजरी  
तेरी जग के पसार में ॥ राव भावसिंह शत्रुशाल  
के सपूत यह अद्भुत बात मतिराम के विचार  
में । आय को मरत अरि चाहत अमर भयो महा  
वीर तेरी खगधार गगधार में ॥ २०६ ॥

औरन के प्रताप सीरे करिवे के हेत तेरा प्रताप हे मो  
आंच करै है अपार आठों दिशान में शत्रुन के मुख में ज्या  
दा अधियारी कर वाकों तेरी जम को चाँदनी फ़ैली है ज  
गत के फ़ैलाव मे हे शत्रुशाल के सपूत राव भाव सिंह मति  
राम के विचार में यह अद्भुत बात है रिपु हैं मो अमर  
भये चाहते हुये आकरिके मरते हैं हे महा मूर तेरी खड्ग  
धार रूप गगा की धारा में इहा सीरे करिवे को आंच क  
रिवो अंधेरी को उजारी अमर हो वाको मरिबो उलटो  
उद्यम है यातैं विचित्र है ॥ २०६ ॥

गनिका आगतपतिका ।

अगन अग उमग भरी सगरी सखि सग रही  
अनुरागी । वैठि गुलाव सु आगन माभ वरागन  
पूछि पखारि सभागी ॥ ही हरषाय कली वरषाय

विरी वरषाय पिया रस पागी । क्यी गुजरूप उ-  
जागरि नागरि भूषन धारि उतारन लागी ॥१ ॥

दोहा ।

छोरत भूषन आपने भूषन लैन नवीन ।  
इच्छा फल विपरीत को जतन विचित्र प्रवीन ॥

अथ अधिक लक्षण दोहा ।

जहाँ बडे आधार तैं वरनत वधि आधेय ।  
कहतसुकविजनअधिकतहँ जिनकीबुद्धि अजेय ॥

जहा बडा आधार सैं आधेय को बढा कै वरनै तहा  
सुकवि लोग अधिक कहते हैं जिनकी मति अजीत हैं ते ॥

उदाहरण दोहा ।

जिनके अतुल विलोकिये पानिप पारावार ।  
उमडिचलतनिग दृगनिभरि तोसुखरूप अपार ॥

जिनके पानिप के समुद्र अतोम देखिये हें दृग तेरे मुख  
के अपार रूप में भरिकै उपटि चलते हैं इहा दृग समुद्र  
आधार स रूप आधेय अधिक है यातै प्रथम अधिक है ॥

द्वितीय अधिक लक्षण दोहा ।

जहाँ बडे आयेध तैं वरनत वढि आधार ।  
तहा अधिक औरै कहत कविजन बुद्धि अपार ॥

जहा बडा आधेय सैं आधार को बढाकै वरनै तहा और  
अधिक कहते हैं अपार मति के कवि लोग ॥ २८१ ॥

कवित ।

कव की हौ देखति चरित्र निज आखिन सौँ  
 राधिका रसीली श्याम रसिक रसाल के । मति  
 राम वरनै दुहूँनि के मुदित अति मन भये मीन  
 से अमृत भय ताल के॥ इक टक देखै लिये व्रत  
 से निमेखनि के नेम किये मानौँ पूरे प्रेम प्रति  
 पाल के । लाल मुख इन्दु नैन बाल के चकोर  
 वा मुख अरविन्द चञ्चरीक नैन लाल के ॥२८८॥

में कवकी अपनी आखिन सौँ चरित्र देखौँ हौँ रसी  
 ली राधिका के और रसिक रसाल श्याम के मतिराम कहै  
 है दोनूँ के अति प्रसन्न मन भये अमृत भरे तलाव के मीन  
 समान इक टक देखै हैं निमेखनि की व्रत सो लिये हुयँ  
 मानौ नेम किये हैं पूरे प्रेम के प्रतिपाल के लाल को मुख  
 चन्द्रमा है बाल के नैन चकोर हैं बाल को मुख कमल है  
 लाल के नैन भ्रमर है इहा लाल मुख नै बाल के नैननि  
 को छपकार कियो और बाल मुख नै लाल का नैननि को  
 छपकार कियो यातँ परस्पर है ॥ २८८ ॥

अथ विशेष लक्षण दोहा ।

जहाँ अधेय बखानिये विन प्रसिद्ध आधार ।

कवि जन तहा विशेष कहि वरनत बुद्धि उदार ॥

जहा प्रसिद्ध आधार विना अधेय को वर्नन करियो  
 तहां बुद्धिउदार कवि लोग हैं ते विशेष कहि के वरनते हैं॥

उदाहरण दोहा ।

चलौ लाल वाकी दसा लखौ कही नहि जाय ।  
हिय रहे सुधि रावरी हियरो गयो हिराय ॥ २६० ॥

हे लाल चलौ वाकी दसा देखौ कही नही जाय है  
हिया मैं आय की यादि है हियो गुमि गयो है इहा सुधि  
पाधेय हिया आधार बिना है यातैं विशेष है ॥ २६० ॥

अथ द्वितीय विशेष लक्षण—दोहा ।

जहँ अनेक थल में कछू वात बखानत एक ।  
तहँ विशेष औरी कहत कविजन बुद्धिविवेक ॥

जहा कछू एक बात कौ अनेक ठौर बने तहा और  
विशेष कहते हैं बुद्धि के विवेक सैं कवि लोग ॥ २६१ ॥

उदाहरण—सवैया ।

मन्दर विन्ध्य सुमेर कलिन्द गिरिन्दन कौं  
हिम सैलहि साजै । टवनदी सम तीनिहु लोक  
पवित्र करै सब जीवसमाजै ॥ छाय रही मति-  
राम कहै छिति छोरनि छीरधि की छवि छाजै ।  
पूरव पच्छिम उत्तर दक्खिन भाज दिवान की  
कीरति राजै ॥ २६२ ॥

मन्दराचल विन्ध्याचल सुमेरु कलिन्दाचल गिरिन्दन  
कौं हिमाचल कौं सजै है, गंगा की समान तीनों लोकनि  
के सब जीवन का समाज कौं पवित्र करै है मतिराम कहै

हे पृथ्वी के ओरनि तार्ङ्ग छाया रही है छीर समुद्र की भी  
छवि छाजै है चारों दिशान में दिवान भावसिंह की कोरति  
राजै है । इहा कोरति को मन्दरादि अनेक ठौर वर्णन है  
यत्तै दूसरो विशेष है ॥ २८२ ॥

तृतीय विशेष लक्षण - दोहा ।

करत कछू आरम्भ ते जहँ असक्य कछु और ।  
तहँ विशेष औरौ कहत कवि कोविद सिरमौर ॥

जहा आरम्भ में कछु और असक्य करै तहा और वि  
शेष कहते हैं कवि पण्डितन के सिरमौर ॥ २८३ ॥

उटाहरण - कवित्त ।

छीरधि की छवि छिति-छोर चाग्यौ ओरनि  
मै फौनि रछ्यो जस कुल ललित नलाम को । व  
खत बिलन्द मुख सुन्दर सरदचन्द देखि करि  
गरद गुमान होत काम को ॥ वाटै पुन्य ओघ  
अघमरषण आखरनि भतिराम करत जगत जप  
नाम को । सत्ता के सपूत राजकृपि भावसिंह  
कीन्हौ आपुने चरित्रनि प्रगट रूप राम को ॥

छीरधि कीसी छवि चारोंओरनि में पृथ्वी के अन्त ताइ  
जस को समूह फौलि रछ्यो है सुन्दर सैं सुन्दर को समय  
बडा है सुन्दर मुख सरद का चन्द्रमा की देखि कै कामदेव  
की गुमान दूरि होय है पुन्य को समूह बटै है अघ दूरि

करनेवाले अक्षरनि सैं मतिराम कहै है जगत है सो नाम  
 का जप करै है शत्रुगाम के सपूत राजऋषि भावसिंह नैं  
 आपनै चरित्रनि सौं राम की रूप प्रगट कियो दृष्टा भाव  
 सिंह का चरित्र का आरम्भ सैं राम रूप असंख्य भयो यातै  
 तीसरो विगेष है ॥ २८४ ॥

अथ व्याघात लक्षण - सोरठा ।

जो जैसे करतार, सो विरुद्धकारौ जहाँ ।  
 वरनत सुमति उदार, तहाँ कहत व्याघात हैं ॥

जो जिस तरह को करतार है सो जहा विरुद्धकारी  
 वरनै तहा सुमति उदार व्याघात कहत हैं । २८५ ।

सटाहरण - कवित्त ।

मोहन-लला कौं मनमोहनी विलोकि बाल  
 कसि करि राखति है उमगे उमाह कौं । स-  
 खिनि की दीठि कौं वचाय कै निहारत है आ-  
 नंद पदाह बीच पावति न थाह कौ ॥ कवि  
 मतिराम और सबही के देखतही ऐसी भाति  
 देखति छिपावति उछाह कौ । वेही नैन रूखे से  
 लगत और लोगनि कौं वेई नैन लागत सनेह-  
 भरे नाह कौ ॥ २८६ ॥

मनमोहनी बाल है सो मोहनलला कौं देखि कै उमगे  
 हृदये उमाह कौं रोकि कै राखे है सखीन की नजरि कौं



धचाय कौ देखै है आनन्द के प्रवाह के बीच में थाइ कौ  
 नहीं पावै है मतिराम कवि कहै है और सबनि के देखते  
 ही ऐसी तरह देखती है उछाह कौ छिपाती है और सो  
 गनि कौ घेही नैन रुखे से सगै हैं पति कौ वेई नैन सनेह  
 के भरे लागै हैं । इहा सनेहभरे नैननि सै रुखापन विरुध  
 कार भयो यातैं व्याघात है ॥ २८६ ॥

द्वितीय व्याघात लक्षण—दोहा ।

जहां क्रिया की सुकरता वरनत काज विरोध ।  
 तहा कहत व्याघात हैं औरौ बुद्धि विबोध ॥२८७॥

जहा क्रिया की सुकरता सै विरोध काज वरनै तहा  
 और व्याघात कहतैं हैं बुद्धि के बोध सैं ॥ २८७ ॥

उदाहरण—दोहा ।

जु पै सखी ब्रज गाव में घर घर चलत चवाव ।  
 तौ हरिमुख लखि दैति किन नैन चकोरनि चाव ॥

हे सखी जो पै ब्रज गाँव में घर घर में निन्दा चलै है  
 तौ हरि के मुख कौ देखि करिकै नैनरूपी चकोरनि कौ  
 हर्ष क्यों नहि दे इहा निन्दा है सो मुख देखि वाकी विरुध  
 क्रिया है ताही सौ देखिघो काज भयो यातैं दूसरी व्या  
 घात है ॥ २८८ ॥

अथ हेतुमाला लक्षण—दोहा ।

पूरव पूरव हेतु जहँ उत्तर उत्तर काज ।  
 तहाँ हेतुमाला कहत कवि कोविद सिरताज ॥

जहा पूर्व पूर्व कारन होय -उत्तर उत्तर काज होय  
तहा हेतुमाला-कहते है । कवि पण्डितन के सिर के ताज  
है ॥ २०० ॥ सदाहरण - कृप्यय ।

मन प्रगटित हरि प्रीति प्रीति तिहिं तेज  
प्रकासिय । प्रबल तेज तिहिं जगत जीव रक्षा  
उल्लासिय ॥ तिहिं रक्षा-बढि धर्म धर्म तिहिं स-  
ञ्चित सम्पति । तिहिं सम्पति किय दान दान  
तिहिं सुजस विमल अति ॥ मतिराम सुजस दिन  
प्रति बढत सुनत दुवन उर फट्टियउ । भुव भाव-  
सिह शत्रुशालसुत इहि विधि चरित प्रगट्टियउ ॥

मन में हरि की प्रीति प्रगटे तिस पीति सैं तेज प्रकाशै  
तिस प्रबल तेज सैं जगत में जीवन को रक्षा प्रगटे तिस रक्षा  
सैं धर्म बढे तिस धर्म सैं सम्पति इकट्ठी होय तिस सम्पति  
से दान होय दान करने सैं सुजस अति निर्मल होय मति  
राम कहे है दिन प्रति सुजस बढ़तैं सो सुनतैंही दुर्जनन  
को उर फाखी जगत में शत्रुशाल के सुत भावसिह नैं इस  
विधि सैं चरित्र प्रगट कियो इहा । हरि प्रीति कारन है ।  
तेज कारज है फेरि तेज कारन है जीवरक्षा कारज है  
फेरि जीवरक्षा कारन हें धर्म कारज है फेरि धर्म कारन है  
सम्पति कारज है फेरि सम्पति कारन दान कारज, फेरि  
दान कारन जस कारज, फेरि जस सुनिघो कारन रिपु उर  
फटिघो काज है यातै हेतुमाला है ॥ २०० ॥

द्वितीय हेतुमाना लक्षण - दोहा ।

उत्तर उत्तर हेतु जहँ पूरव पूरव काज ।

इही हेतुमाना कहत कविजन बुद्धि जहाज ॥

जहां उत्तर उत्तर कारने होय पूर्व पूर्व काज होय यह  
भी हेतुमाना कहतैं हैं कवि लोग बुद्धि के लक्षण है ते ।

उदाहरण - छप्पय ।

दुःख मूल गनि पाप पाप कहँ कुमति प्रकासे ।

मोह कुमति विस्तरै क्रोध मोहै उल्लासे ॥

लोभ क्रोध कहँ रचै लोभ कहँ काम करत पुनि ।

सग जनित जग काम कहत मतिराम वेदधुनि ॥

इहँविधिविवेककरसगतजिसुमरतमनशकरचरन ।

ससार सकल सताप तजि लहत परमआनन्दधन ॥

दुःख कौ मूल पाप गनौ पाप कौ बुद्धि प्रकासै है ।

मोह है सो कुमति कौ करै है क्रोध है सो मोह कौ करै

है लोभ है सो क्रोध कौ रचै है लोभ कौ फेरि कामदेव

करै है जगत में काम है सो सग से पैदा होय है मतिराम

कहै है वेद की बानी इस प्रकार ज्ञान को सग छोड़ि कै

मन है सो शकर को चरनन कौ सुमिरै ससार के सपूर्ण

तापनि कौ तजि कै परम आनन्दधन कौ प्राप्त होत है ।

इहां दुःख काज है, पाप कारन फेरि मोह कारज कुमति

कारन है इत्यादि जानिए । ३०२ ।

एकावली लक्षण दोहा ।

एक अर्थ लै छोडिये और अर्थ लै ताहि ।

अर्थ पाँति इमि कहत हैं एकावली मराहि ।

एक अर्थ कौ ले कै छोडिये और अर्थ कौ ले कै तिस कौ छोडिये या प्रकार अर्थ की पंक्ति होय तिसकौ मराहि कै एकावली कहते हैं । ३०३ ॥

उदाहरण कृपय ।

सुरजनसुत नृप भोज भूमि सुर-जन रक्षाकर ।  
भोज तनय नृप रतन भोज सम दानि विदित  
धर ॥ रतनपुत्र नृप नाथ रतन जिमि ललित  
जोतिमय । नाथ नन्द तिमि शत्रुशाल नरनाथ  
महोदय ॥ जग शत्रुशालनन्दन नवल शत्रुन उर  
सालत रहिय । नृप भावसिंह मतिराम कहि सु-  
जस अमल प्रतिदिन लहिय ॥ ३०४ ॥

सुरजन को सुत राजा भोज, सो भूमि मै सुर मनुष्यन को रक्षक भयो, भोज को सुत राजा रत्न भयो सो भोज समान सुन्दर दानी विख्यात भयो, रत्न को पुत्र राजा गोपीनाथ भयो, रत्न ज्यों सुन्दर जोति सहित भयो तैसेही गोपीनाथ को सुत राजा शत्रुशाल महा उदय को भयो जगत मै शत्रुशाल को नवल पुत्र शत्रुन के उर मै सालती रहे राजा भावसिंह को मतिराम कहै है निर्मल जस प्रति

दिन पावै । इहाँ सुरजन कौ छोड़िकै भोज कौ लियो भोज  
 कौ छोड़िकै रत्न कौ लियो रत्न-कौ छोड़िकै गोपीनाथ  
 कौ लियो गोपीनाथ कौ छोड़िकै शत्रुशाल कौ लियो श  
 त्रुशाल कौ छोड़िकै भावसिंह कौ लियो यातें एकावली  
 है ॥ ३०४ ॥

अथ माला दीपक लक्षण दोहा ।

जहँ दीपक एकावली होत दुहुनि को जोग ।

मालादीपक नाम तहँ वरनत सब कवि लोग ॥

जहाँ दीपक एकावली इन दोनूनों को जोग होय तहाँ  
 सब कवि लोग माला दीपक नाम वरनते है ॥ ३०५ ॥

नदाहरण कवित्त ।

महावीर शत्रुशाल नन्द राव भावसिंह हाथ  
 में तिहारे खग जीति को जमान है । परम पु  
 रूप परमेश्वर कृपा ते आज तिहारोई रूप रज  
 लाज को निधान है ॥ अरिन के मुण्डन सौ रा  
 वरो रिभायो हर कीन्हो मतिराम बकसीस को  
 बखान है । तुम पातो सुजस सुजस गायो कवि  
 लोग पायो कविलोगनि गयन्टनि को दान है ॥

महावीर शत्रुशाल के सुत है राव भावसिंह आप के हाथ  
 में खडग है सो जीति को जमान है आज परम पुरुष प  
 रमेश्वर की कृपा से आपको ही रूप रजपूती को लाज को

रक्षक है रिपुनि के मस्तकनि सौ पापको रिभाया महा  
 देव है तानै मतिराम कहै है सुजस को वर्नन किया है सो  
 तुमनै सुजस पायो सुजस कवि लागनि नै गायो । कवि  
 लोगनि नै हायोनि का दान पायो । इहाँ शिव कौ छोडि  
 के राजा कौ लियो, राजा कौ छोडि के कविन कौ लियो,  
 कविन कौ छोडि के गयन्दन क दान कौ लियो, यह ती  
 एकावली राजा बन्ध कवि लाग अबन्धन का पायो, पायो  
 एक धर्म है, यह दीपक यातै मालादीपक है ॥ १०६ ॥

दोहा ।

कनक बेलि में कोकनद तामै श्यामसरोज ।  
 तिनमें मृदुमुसकानि है तामै मुदित मनोज ॥

सोना की बेलि में लाल कमल है तामै नील कमल  
 है तिन में कोमल हंसनि है तामै प्रसव कामदेव है । इहाँ  
 कनकबेलि कौ छोडिके कोकनद लियो ताकौ छोडि के  
 श्याम सरोज लिये तिनकौ छोडि के हंसनि लीनी ताकौ  
 छोडिके मनोज लियो यह यह ती एकावली और कनक  
 बेलि अबन्ध नायिका बन्ध कोकनद अबन्ध मुख बन्ध श्या-  
 मसरोज अबन्ध नैब बन्ध है तिनको मुदित रहियो एक  
 धर्म है यातै मालादीपक है ॥ १०७ ॥

अथ सार तथा यथा सख्य लक्षण दोहा ।

उत्तर उत्तर उत्तकरष सार कहत सञ्ज्ञान ।  
 यथा सख्य क्रम सौ कहै क्रमही बहुरि बखान ॥

उत्तर उत्तर सरस होय तिसको ज्ञानवान सार कहते  
है क्रम सों कहि कै फेरि क्रमही सों बखान करै सो यथा  
संख्य है ॥ ३०८ ॥

सार उदाहरण सवेया ।

सैलनि को जग ऊँचे कहैं तिनमें कनका  
चल को श्रुति गावै । तापर ऊँचो पुरन्दर मन्दिर  
जो छवि वृन्दनि सों नभ छावै ॥ तापर यो म  
तिराम बखानत ऊँचो मनोरथ दानि कहावै ।  
दान मै भाऊ के हाथ उचार्इ कौं सोऊ नही  
कल्पद्रुम पावै ॥ ३०९ ॥

जगत है सो गिरिन को ऊँचे बतावैं है तिनमें सुमिष  
को वेद ऊँचे गावै हैं तिसपै इन्द्र को महल ऊँचो है जो  
छवि का समूहन सों आकाश कौं छावै है ताके ऊपर ऐसे  
मतिराम कहै है मनोरथ को दानी ऊँचो कहावै है दान  
दान मै भावसिंह के हाथ को उँचाइ कौं सो कल्पद्रुम भी  
नही पावै है । इहा एक से एक ऊँचो है यातें सार है ॥

कवित ।

मधुर मृदुल बैन भाखि चित चीरत है मो  
रत है नैन दीठि धारि टिल धोज की । भायन  
ऊँभाय अंगराय रग राखत है आंगुरी हलाय त-  
रजाय कहै चोज की ॥ आन मिलि देखि फिरि

देखि कै कटाक्षन तैं हँसै हरषाय रीति राखत  
न रोज की । तन मन नैन वैन सरस सरस मनौ  
पार्इ आज बाल नैं मुसाहिबी मनोज की ॥

दीहा ।

तन मनादि मैं सरसता अलकार यौं सार ।  
सरस सरस बरनैथवा निरस निरस सो सार ॥

यथा सख्य उदाहरण कवित ।

महावीर शत्रुसाल नन्द राव भावसिंह तेरी  
धाक अरिपुर जात भय भोय से । कहै मतिराम  
तेरे तेज पुज लिये गुन मानत औ मारतण्ड म  
गडल विलोय से ॥ उडत नवत टूटि फूटि मिटि  
फाटि जात विकल सुखात बैरी दुखनि समय  
से । तूल से तिनूका से तरोवर से तोयद से तारा  
से तिमिर से तमीपति से तोय से ॥ ३१० ॥

महा सूर शत्रुसाल के सुत नन्द हे राव भावसिंह तेरी  
धाक सैं बैरीन के पुर डर मै भीजे से जाते हैं मतिराम  
कहै है तेरे प्रताप के समूह के गुन लिये हुयें पवन और  
रविमण्डल मथे से जाते हैं उडते हैं नवते हैं टूटते हैं फू  
टते हैं मिटते हैं फाटि जाते हैं विकल सूकते हैं बैरी हैं ते  
दुखनि मैं मिश्राये सैं रुद्र से दृण से तह से मेघ से तारा से  
तम से चन्द्र से जल से इहाँ उडत भादि घाठ क्रिया जिस



क्रम से है तिसही क्रम से तूल आदि आठ वस्तु को बर्नन  
है यातै यथा सख्य है ॥ ३१० ॥

कवित्त ।

एरे वाम नैन मेरे एरी भुज वाम आज रौरै  
फरकन ते जो वालम विहारि हो । करिहौं गु  
लाव उपकार गुनमानिनी कै देखन विभेटन मे  
आगै विसतारि हो ॥ देहै धन जेतौ पिय नाय  
परदेसन तै लैहौं हरपाय तव ऐसी रीति धारि  
हौ । मूदि नैन दाहिने को दाँड भुज दूर राखि  
तोही ते निहारि हौं मै तोही ते सम्हारि हौं ॥

दोहा ।

क्रम से कहे पदार्थ को क्रम से कथन जु होय ।  
यथा सख्य तासौं कहत कवि गुलाव बुध लोय ॥

अथ द्विविधि पर्याय लक्षण दोहा ।

कौ अनेक है एक मै कौ अनेक मै एक ।

रहत जहाँ पर्याय सो है पर्याय विवेक ॥

कौ ती एक में अनेक है अथवा अनेक में एक रहै जहाँ  
क्रम सौं सो पर्याय को विवेक है ॥ ३११ ॥

उदाहरण एक में अनेक को सवैया ।

मृदु वोलत कुण्डल डोलत कानन कानन  
कुजनि ते निकछी । वनमाल वनी मतिराम

हिये पियरो पट ल्यों कटि में बिनस्यो ॥ जब ते  
 निरमोर पपानि धरें चितचोरि चितै दूत ओर  
 हंस्यौ । जब तैं दुरि भाजि कै लाज गई अब  
 लालच नैननि आनि बस्यौ ॥ ३१२ ॥

नायिका को उक्ति कोमल बोल तो कानन में कुडल  
 हलती वन कुजन से कव्यौ मतिराम कहे है हिया में वन  
 का फूलन की माछा बनी है तेसेही पीलो वल्ल कमरि में  
 विराजे है जब से मस्तक पे मोर की पाख धरे हुये चित्त  
 को चोर है सो मेरी ओर भाकि कै मुसकायो तबसे छिपि  
 कै लाज भाजि गई अब आखिन में लालच आय बस्यौ है  
 इहां एक कथा में क्रम से अनेक बात हैं याते पर्याय है ॥

अनेक में एक को उदाहरण दोहा ।

सखी तिहारे दृगनि की सुधा मधुर मुसकानि ।  
 बसी रहत निसिद्यौसहू अब उनकी अग्नियानि ॥

हे सखी तुम्हारी आखनि की अस्त से मीठी हांसो  
 है सो अब कथा की आखिन में राति दिन बसी रहे है  
 इहां एक हासी राधा की आखिन में और कथा की आ  
 खिन में रही याते पर्याय है ॥ ३१३ ॥

अथ परिहृति लक्षण दोहा ।

घाटि बाटि है बात को जहां पलटिबो होय ।  
 तहां कहत परिहृति है कवि कीविद सब कोय ॥

घाटि अथवा बाधि होय जहां दोय बात को बदलिबो  
होय तहा परिवृत्ति कहते है कवि पंडित सब कोई ॥२१४॥

सदाहरण टोहा ।

मो मन मेरी बुद्धि लै करि हर कौ अनुकूल ।  
लै त्रिलोक को साहिबी दे धतूर के फूल ॥२१५॥

हे मेरे मन मेरी मति ले कै शिव कौ राजी करे धतूरा  
के फूल दे करिके तीन लोक को मालकी लै इहा धतूरा  
को फूल देकै त्रिलोक की साहिबी लोनी यातै परिवृत्ति  
है ॥ २१५ ॥

पुन कवि न ।

जोर दल जोरि साहिजादो साहिजहा जग  
जुरि मुरि गयो रही राव मै सरम सौ । कहै म  
तिराम देवमन्दिर वचाये जाके वर वसुधा मै  
वेद श्रुति विधि यौ वसी ॥ जैसी रजपूत भयो  
भोज को सपूत हाडा औसो और दूसरो भयो न  
जग मै जसी । गायनि कौ बकसी कसाइनि की  
आयु सब गायनि की आयु सो कसाइनि कौ  
बकसी ॥ २१५ ॥

जबर फौज जोडि कै साहिजादो और साहिजहा जग  
मै जुडि कै मुडि गये राज राव मै रही, मतिराम कहै है  
देवतानि के मन्दिर। वचाये जिसके जोर मै पृथ्वी मै वेद और

श्रुति की रीति ऐसै बसी, जैसे भोज को सपूत रजपूत भयो  
ऐसो और दूसरा जगत में जसो नहीं भयो गऊन को  
उमर कसा\*न की दोनी सब गऊन की ऊमरि कसाईन को  
दोनी इहा उमरि को बटले हे यातै परिवृत्ति हे ॥११६॥

अथ नबोटा सबैया ।

लीन नितवन नै गुरुता कटि की कटि नै ति-  
नकी कृशतार्द्र । रोमन वैनन की षट्जुता लड्ड  
वैनन रोमन की कुटिलार्द्र ॥ पायन नैनन मद्  
गती गहि नैनन पायन की चपलार्द्र । यौं गुन  
आगरि नागरि अगन आपस मै हठि लूटि म-  
चार्द्र ॥ ३१७ ॥

दोहा ।

तिय अगन पलटो कछौ यौ परिवृत्तिहि होय ।  
परिवृत्ति सु पलटो करै अधिक न्यून को कोय ॥

अथ परिसर्या लक्षण दोहा ।

और ठौर ते मेटि कछु बात एकही ठौर ।  
वरनत परिसर्या कहत कविकोविद् सिरमौर ॥

कछु बात और ठौर सैं मेटि के एकही ठौर बरनै तहा  
परिसर्या कहतै हे सिरमौर कवि पण्डित । ३१७ ॥

। उदाहरण कविग ।

सोवत ही सोह-गुन सुजस की लोभ तरव-

रनि कौं छोभ जहां करत ययारिये । कहे मति  
 राम एक मान विना मानिनी मयानविना चित्र  
 नि के रूप निरधारिये ॥ तुरंग चपल चन्द्रमडल  
 विकल बेला कुंद है विफल जहां नीचगति  
 धारिये । दानहीन कलभ कटलिदल कपजुत  
 राव भावसिंह जू के राज में निहारिये ॥३१८॥

तमोगुन मोवतैही है, मोभ सुजस कोही है जहां हृष  
 नि की पवगही भय करै है मतिराम कहे है साति विना  
 एक मानिनीही है चतुराई विना तसवीरनि के रूप निषय  
 है, चचल घोडाही है मर्याद रहित चन्द्रमण्डलही है विना  
 फल कुदही है जहा नीची चाल को जलही है दानरहित  
 हाथी का बचाही है कम्प सहित कदली के पवही है ऐसे  
 राव भावसिंह जी का राज में देखिये है । इहा तमोगुन  
 मोभ मोभादि कौं और ठौर सैं बरजि के मोवत पादि में  
 ठहराये यातै परिसख्या है ॥ ३१८ ॥

बनिता भूपन परकोया आगमिष्यत्पतिका परिसख्या  
 उदाहरण दोहा ।

मुनत परोसनि की पिया अहे आजहि सांभ ।  
 रही कचनही श्यामता कृगता कटि ही सांभ ॥

मुग्धा कलहातरिता सबैया ।

आच न चद कला विचराचत साच न चोरिन

के धरसा में । जोग न लोग लुगाइन के सग  
भोग न रोगन के धरसा में ॥ हर्ष महारह संत  
समा गम हर्ष न सौतिन के धरसा में । होत न  
घीषम में वरपा सखि होत सदा वरसा वरसा में ॥

दोहा ।

सखि प्रतिविष बखान तैं है ललितालकार ।  
परिसध्य तु चवधे धान मुग्धा मौन प्रकार ॥

अथ विकल्प लक्षण दोहा ।

सम-बलजुत है वात की बरनत जहाँ विरोध ।  
कविकोविद् सबकहत हैं तहँविकल्प श्रुतिसोध ॥

समान बल सहित दोष बात की जहाँ विरोध बरने  
श्रुति के सोध कवि पछित तहाँ विकल्प कहते हैं ।

अदाहरण कबित्त ।

विपिनि-सरन के चरन तकौ रावही के चढी  
गिरि पर के तुरग परवर में । राखी परिवार कौ  
की आपनीये हठ राजसपति दै मिलौ के नगरे  
दै समर में ॥ कहै मतिराम रिपुरानी निज-  
नाहनि सौं बोलैं यौं डरानी भावसिंह जू के डर  
में । बैर तौ बढायो कछौ काहू कौ न मान्यौ  
अव दातनि तिनूका के कृपान गही कर में ॥

वन कौं तकी कौ राध के चरनही को सरन सेको पर्वत  
 पै चढी के बल करिके सुरग पै चढी कुटब कौ राखो के  
 अपनेही हठ कौ राषी राज और संपति दे के मिलो के  
 मगारा बजा के सग्राम में मिलो मतिराम कहे है रिपुन की  
 स्त्री अपने पतिन सौं ऐसे बोलें है भावसिंह जो के डर में  
 डरपी हुई बैर तो बटा लीनों छोड़ को कही नहीं माखी  
 अब दातनि में हन पकडो के हाथ में तरवारि पकडी । इहा  
 विपिनि के चरन सरन इत्यादि द्योय द्योय बात समबल है  
 तिन में विरोध यह है एक होय तो दूसरी नहीं होय यातें  
 विकल्प है ॥ १२० ॥

बनिताभूषण गनिका आगमिष्यत्पतिका विकल्प

उदाहरण दोहा ।

अवधि दिवस गनि गावती बोली हिय हर्षानि ।  
 आज राति दुख भानिहै जमराज कि धनदानि ॥

अथ समुच्चय लक्षण दोहा ।

बहुत भये इकवारगी तिनको गुफ जु होय ।  
 ताहि समुच्चय कहत है कवि कोविद् सब कोय ॥

एक बात बहुत हुये तिनको गुफ होय तिसको समु  
 चय कहते है कवि पण्डित सब कोरे । १२१ ॥

गुफस्तु गुफने वाहौ रलकारे च कीर्त्यते ।

गुफौनिबंधः इत्यलङ्कारचन्द्रिकायाम्

### उदाहरण सवैया ।

पाइ इकलतं कै बाल सो बालम जो रति रूप  
कला दरसावै । नाही कटै मुख नारि के नाह  
जहाँ हिय सौ हियरो परसावै ॥ काम बटै मति-  
राम तहीं अति लाल विलासनि कौ सरसावै ।  
जोवै त्रसै मन मोवै अनद में रोवै हंसै रस कौ  
वरसावै ॥ ३२२ ॥

बाल मनै सो बाल एकात मै पाइ जो रूपकला मै रति  
सो देखै है नारि के मुख मै नाही कटै है नाह जहा हियो  
सौ हियो भिडावै मतिराम कहै है तहा ही काम बटै है  
नाल के विलासनि कौ अत्यन्त सरसावै है देखै है डरपै है  
आनद में मनको भेवै है रोवै है हंसै है रस कौ वरसावै है  
इहा देखिवी डरपिवी रोइवो हसिवो इत्यादि एक बार  
हुये यातै समुच्चय है ॥ ३२२ ॥

बनिताभूषण सुग्धा आगतपतिका प्रथम समुच्चय  
उदाहरण दोहा ।

पिय आये लखि नवल तिय हरखी हसी जँभाय ।  
कंपी अनुरागी बहरि बैठौ सिमटि लजाय ॥

द्वितीय समुच्चय लक्षण दोहा ।

वहसि करत बहु हेतु जँह एक काज की सिद्धि ।  
इहौ समुच्चय कहत हैं जिनकी है मति सिद्धि ॥



जहाँ बहुत कारन होड करिके एक कारन की सिद्धि करै यह भी समुच्चय कहते हैं जिनको बुद्धि सिद्धि है।

सदाहरण कवित्त ।

कुंदन से आंग भांग मोठिन सवारी सारी  
सोहत किनारीवारी केसरि के रग की। कहै  
मतिराम मनि मजुल तरौना छोटी नयुनी वि  
राजै गजमुक्तनि के सग की ॥ कुसुम के हार  
दियो हरति कुसभी आंगी सकै को वरनि आभा  
उरज उतग की। जीवन जरब महा रूप के ग  
रब गति मदन के मद मद मोकल मतग की ॥

सोना से अंग है भांग मोठीन से सुधारी है किनारी  
दार साही सोहै है केसर रग को रंगी मतिराम कहै है  
निर्मल मणिन को तरौना है छोटी नय विराजै है गजमो  
तीन की जड़ी हुई फूलन के हार हैं कुसूमल कपुकी मन  
कों चोरै है उरज लंचान को प्रभा को वरनि सकै है जी  
वन के घोट से महारूप के गरब से गति है सो काम का  
मद कों और मतग का मद कों दूर करै है। इहा नायिका  
के बहुत कारननै मतग को मददूर कियो यातै समुच्चय है।

वनिताभूषण मथ्यापागतपतिका द्वितीय समुच्चय ।

सदाहरण दोहा ।

पिय आये परदेश तैं भेटत परिजन-भीर ।  
तनु चप श्वनन चाह नै बटि तियकरी अधीर ॥

अथ कारक दीपक लक्षण दोहा ।

एकहि मै क्रम सौं भये तिनको गुफ जु होय ।  
सो कारक दीपक कछौ कविन ग्रन्थ मत जोय ॥

एक मै क्रम सौं हुया तिनको जो गुफ होय सो कारक  
दीपक कछौ है कविन नै ग्रन्थि को मत देखि कै ॥ १२५ ॥

उदाहरण दोहा ।

फिरि आवति जाति भजि राति मधुर मुसकाति  
बाललालकी ललितमुख लखिललचाति लजाति ॥

फेरि फेरि आतो है भजि जाती है राति मधुर मुसका  
तो है वाक है सो लाल को सुन्दर मुख देखि कै ललचातो  
है लजातो है इहां आवो जावो मुसकावो इत्यादि क्रम सैं  
गुफ है याते कारकदीपक है ॥ १२६ ॥

अथ समाधि लक्षण दोहा ।

और हेतु के मिलन ते सुकरु होत जहँ काज ।

वरनत तहाँ समाधि है सकलसुकवि सिरताज ॥

अन्य कारन के मिलने सैं जहा काज ठीक होय तहा  
समाधि वरनते है सपूर्ण सुकविन के सिरताज ॥ १२७ ॥

उदाहरण सबैया ।

आयो बसन्त रसाल प्रफुलित कोकिल-बो-  
लनि श्रौन सुहाई । भौरनि को मतिराम किये  
गुन काम प्रसून कमान चढाई ॥ रावरो रूप

लग्यौ मन में तन मैं तिय के भलकी तननाई ।  
धीर धरौ अकुलात कहा अब तौ बलि वात सबै  
बनि आई ॥ ३२८ ॥

वसन्त आयो है आम फूले हैं कोकिल की बोनी का  
नन कों सुहाई है मतिराम कहै है अनिल की चित्तो बितें  
हृये कामदेव नै फूलन को धनुष चढायो है आपकी रूप  
मन में लग्यो है तिया के तन में जवानी भलकी है धीरज  
राखौ काँई अकुलाते हौ अब तौ धारी जाँँ सब बात बनि  
गई है । इहा वसन्तादि अन्य कारन सौ मिलाप कारन  
सिद्ध भयो यातें समाधि है ॥ ३२८ ॥

अथ प्रत्यनीक लक्षण दोहा ।

प्रबल शत्रु के पक्ष पर जहँ विक्रम उल्लास ।  
प्रत्यनीक तासौ कहत कविजन बुद्धिविलास ॥

जबर बैरी के पक्षो पै जहा पराक्रम को हर्ष होय तासौ  
प्रत्यनीक कहते है कवि लोग मति के आनद सैं ॥ ३२९ ॥

उदाहरण दोहा ।

तो मुख-छवि सौ हारि जग भयो कलक समेत ।  
सरद-इदु अरविदमुखि अरविदनि दुख देत ॥

तेरे मुख की शोभा सौ हारि कै जगत में कलक सहित  
भयो, शरद ऋतु को चन्द्रमा है सो है अरविन्दमुखी कम  
मनि कों दुख देता है इहा चन्द्रमा नै मुख के पक्षो कम  
मनि कों दुख दियो यातें प्रत्यनीक है ॥ ३३० ॥

अथ काव्यार्थापत्ति लक्षण दोहा ।

जोपै जोतो यह कहा इहिविधि जहा बखान ।  
कहत काव्य पद सहित तहँ अर्थापत्ति सुजान ॥

जो पे जो है तो यह कहा है जहाँ इस तरह को बर्नन  
होय तहा सुजान काव्य पद सहित अर्थापत्ति कहते है ॥

सदाहरण कवित्त ।

विव से अरुन अति अमल अधर पर मन्द  
विलसत चारु चाँदनी सुवास है । कासौं जाय  
वरनि वनक नाकवेसरि की ललित विलोकनि  
पै विविधि विलास है ॥ कवि मतिराम पाय स-  
हज सुवास आस भीरनि कीभीर न तजत आस  
पास है । कहा दर्पन कैसे पावत वदनजोति  
चन्द जाको चरो अरविद जाको दास है ॥३३२॥

किंदूरी के लाल और अत्यन्त निर्मल थोठ पे मदी सु-  
न्दर चादनी और सुवास विशेष लसे है अर्थात् हास्य और  
स्वाम सुगन्ध की आसा पायके भोरान की भीडि है सो  
आस पास कौं नहीं छोडे है । नाक और नथकी बनावटि  
किस पे वरनी जाय है सुन्दर चितवनि पे अनेक तरह के  
आनद हैं काच कार है मुख की छवि कौं कैसे पहुँचे जाको  
चाकर चन्द्रमा है कमल जिसको दास है । इहा चन्द कमल  
दास है तो दर्पन कहा है यह कहनि हैं याते काव्यार्था-  
पत्ति है ॥ ३३२ ॥

अथ अर्थान्तरन्यास लक्षण दोहा ।

कहि विशेष सामान्य पुनि कै सामान्य विशेष ।  
सो अर्थान्तर न्यास है वरनत मति उल्लेख ३३२

विशेष कहे फेरि सामान्य कहे अथवा सामान्य कहि  
कै विशेष कहे सो अर्थान्तरन्यास है मति अधिक बरनते  
हैं ॥ ३३२ ॥

उदाहरण सवैया ।

रावरे नेह कौ लाज तजी अरु गेह के काव  
सबै विसराये । डारि दियो गुरुलोगनि को डर  
गांव चवाय मैं नांव धराये ॥ हित कियो हम जो  
तो कहां तुम तो मतिराम सबै बहराये । कौक  
कितेक उपाय करौ कहूं होत है आपने पीव  
पराये ॥ ३३४ ॥

आप के हित कौ लाज छोडी और घर के सब काम  
भूले गुरु लोगनि को डर डेरि दियो गांव की निन्दा मैं  
नाम धराये हम ने हित कियो सो तो कहा है मतिराम  
कहे है तुमनें तो सब टालि दिये कोई कितनांही उपाय  
करौ कहू पराये पति अपने होते हैं अर्थात् नहीं होते  
इहा तुम विशेष कहि कै पराये पीव अपने नहीं होय यह  
सामान्य कह्यौ यातें अर्थान्तरन्यास है ॥ ३३४ ॥

पुन दोहा ।

गुन अोगुन को तनकक प्रभु नाही करत विचार ।  
केतकि कुसुम न आदरत हर सिर धरत कपार ॥

प्रभु है सो गुन औगुन को जरा भी विचार नहीं करते  
है केतकी का फूलनि को भादर नहीं करते हैं महादेव  
सिर पै मुड धरते है इहा प्रभु यह सामान्य कछी फेरि हर  
यह विशेष कछी यातैं अर्थान्तरन्यास है बहु व्यापक सा  
मान्य अल्पव्यापक विशेष है ॥ ३३५ ॥

विकस्वर लक्षण दोहा ।

कहि विशेष सामान्य पुनि कहिये वहुरि विशेष ।  
कहत विकस्वर नामतहँ जे कवि अति मतिलेष ॥

विशेष कहि कै फेरि सामान्य कहि कै फेरि विशेष  
कहिये तहा विकस्वर नाम कहते है जे कवि अति बुद्धि  
के लिखै है ॥ ३३६ ॥

उदाहरण दोहा ।

मधुप मोह मोहन तज्यौ यह स्यामन की रीति ।  
करी आपने काज लौ तुम्है भाति सौं प्रीति ३३७

गोपोन की उक्ति उदव सैं । हे मधुप मोहनै मोह तज्यौ  
यह कालान की रीति है, करी अपने काज तक तुमको  
अपने रग सौं प्रीति है इहाँ मोहननै मोह तज्यौ यह वि-  
शेष स्यामन की रीति यह सामान्य तुमको भाति सैं प्रीति  
यह विशेष कछी यातैं विकस्वर है ॥ ३३७ ॥

अथ प्रौढोक्ति लक्षण दोहा ।

जे अहेतु उत्कर्ष को ताहि वखानत हैत ।  
प्रौढोक्ति तासौ कहत जे कवि सुमति सचेत ॥

जो बड़ाई को अकारण है तिसको कारण करे तासों  
प्रोढोक्ति कहते है जे कवि सुमति सचेत है ते ॥ ११८ ॥

उदाहरण दोहा ।

गगनीर विधुरुचि भलक मृदुमुसकानि उदोति ।  
कनकभौन के दीप लौं जगमगाति तनजीति ॥

गगा के जल में चन्द्रमा की काति की भलक की को  
मल हंसनि की उदोती है सोना के घर के दीपक सी तन  
को जोति जगमगावै है । इहा गगानीर कनकभवन अर्हत  
को उत्कर्ष के हेतु किये यातैं प्रोढोक्ति है ॥ ११८ ॥

अथ सभावन लक्षण दोहा ।

जो यौं होय तु होय यौं जहँ सभावन होय ।  
सभावन तासौं कहत विमलज्ञान मतिधोय ॥

जो यौं होय ती होय जहा ऐसी सभावना होय तासौं  
सभावना कहते है निर्मल ज्ञान में बुद्धि कौं धोय के ॥ ११९ ॥

उदाहरण कवित्त ।

चलत सुभाय पाय पैजनिन की भनक उर  
उपजन लागे केलि के कलोल हैं । फूलनि के  
हार हियरे सौं छिरकनि लागे छलकन रस नेन  
तामरस लोल हैं ॥ श्रीन के सरोज के परस  
मतिराम लाल कटकित होन लागे कोमल क  
पोल हैं । तौ बनै बनाव मिलै जोवन में कहूँ  
नीके लोचन के जोवन के वासर अमोल हैं ॥

सहज सुभाय में चलते पग की पैजनीनि की अवाज  
 से केलि के कलोल हिया में उषजने लगे है पुष्पन, के, हार  
 हिया सौं हिरकवा लग्या है चचल नैन कमल छलकने लगे  
 है मतिराम कहे है हे खान कानन के कमल के मिलने से  
 कोमल गाल रोमाचित होने लगे हैं ती बनाव बने जो कहु  
 वन में अच्छी तरह मिलै लोचन की जवानी के दिन अ  
 मोल है इहाँ जोवन में मिलै ती बनी बने यह है यातें स  
 भावन है ॥ १४१ ॥

अथ मिथ्याध्यवसिति लक्षण दोहा ।

एक भूठार्इ सिद्धि कौ भूठो वरनत और ।  
 तहँ मिथ्याध्यवसाय कौ कहत सुमति मतिदौर ॥

एक भूठ की सिद्धि कौ और भूठ बने तहा मिथ्या-  
 ध्यवसित कौ सुमति है ते मति की दौड से कहते हैं ॥

उदाहरण दोहा ।

खल-वचननि की मधुरता चापि साप निज श्रौन ।  
 रोम रोम पुलकित भये कहत मोद गहि मौन ॥

दुष्टन के वैननि की मिठार्इ कौ सर्प अनेक काननि सौं  
 चाखि के बाल पुनकित भये मौन पकडी है सो अनद कौ  
 कहे है इहाँ खल वचननि में मधुरता भूठो वरन है साप  
 के कान नहीं गूगे कहे नहीं यह भूठ है यातें मिथ्याध्य  
 वसित है ॥ १४२ ॥



अथ ललित लक्षण दोहा ।

वर्ण्य वाक्य के अर्थ को जहँ केवल प्रतिविव ।  
प्रस्तुत मै वरनत ललित निर्मल मतिविधु विव ॥

वर्ण्य वाक्य के अर्थ को जहा केवल प्रतिविव होय प्रसंग  
में ललित वरनते हैं निर्मल मति रूप चन्द्रमा के विव है ते ॥

उदाहरण दोहा ।

मेरी सीख सिखै न सखि मोसौं उठै रिसाय ।  
सोयो चाहति नीद भरि सेज अंगार विछाय ॥

हे सखी मेरी सीख नही सीखै है मोसौं रोस करि उठै  
है, नीद भरि सोयो चाहे है अंगारान को सेज विछाय के  
इहा कलहारिता सैं सखी नै कह्यो तू मेरा कछा से नही  
मनो तासौं दुख पावै है यह विव है यह प्रति विव है यति  
ललित है ॥ १४५ ॥

वृहदव्ययार्थचन्द्रिका सवैया ।

वात सुनै नहि तू जन की मन की करतूति  
न मै मन लावै । लाभ अलाभ नहीं समुझै उर  
भी सुरभी न गुलाव लखावै ॥ काज अकाज  
समान गनै अपकीरति कीरति सी भल भावै ।  
तू कसि है घर आवत सपति हायन द्वार कि  
वार लगावै ॥ १ ॥

दोहा ।

धनदायक सैं नहि मनी गयें करत उपचार ।

कलहान्तरिता पुरतिया है ललितालङ्कार ॥ २ ॥

अथ प्रहर्षन लक्षण - दोहा ।

जहँ उत्कण्ठित अर्थ की विन उपायही सिद्धि ।

तहाँ प्रहर्षन कहत हैं जे कविजन मति सिद्धि ॥

जहा वाञ्छित अर्थ की बिना उद्यमही सिद्धि होय  
तहा प्रहर्षन कहत है जे कवि लोग मति सिद्धि है ते ॥ १४६ ॥

उदाहरण - दोहा ।

स्याम वसन मै स्यामनिशि दुरीन तिथ की देहा

पहुँचाई चहुओर घिरि भौर भीर पिय गेह ॥

काना कपरान मै कारो राति मै तिया की देह छिपी  
नहीं थारों तरफ सिमटि कै भौरान की भीड़ि नै पिया  
के घर पहुँचाई इहा बिना उपायही पिया के घर पहुँचिवो  
सिद्धि भयो यातैं प्रहर्षन है ॥ १४७ ॥

दोहा ।

मनभावन की व्याह की सुनी सलौनी वात ।

आँगी मै न उरोज अरु आनँद उर न समात ॥

सलौनी नै पीतम के विवाह की बात सुनी कचुकी मै  
कुच नहीं मातै हैं और हृदय मै आनन्द नहीं माता है ।  
इहाँ पीहर मै कृष्ण सैं मिलिवो बिना उपाय सिद्धि भयो  
यातैं प्रहर्षन है ॥ १४८ ॥

व्यग्यार्थचन्द्रिका—सर्वथा ।

जा संग नेह निरन्तर ही अति हास विलास  
सन मोद बढ़ायो । खेलत खेल गुलाब कहे नित  
ही चित चाहि कियो मनभायो ॥ सास रिसात  
रही तबहू कबहू सपनेहु न कोप जनायो । सो  
ननदी ससुरारि सिधारत कारन कौन बधू सुख  
पायो ॥ १ ॥

दोहा ।

अब हूँ है पिय तैं मिलन तिय हर्षी इहिँ भाय ।  
प्रहर्षन सु विन जतन ही वाछितार्थ हो जाय ॥

द्वितीय प्रहर्षन लक्षण दोहा ।

जहँ मन इच्छित अर्थ ते अधिक सिद्धि मतिराम ।  
तहाँ प्रहर्षन औरज वरनत मति अभिराम ॥

मतिराम कहे है जहाँ मन वाछित प्रयोजन से छादा  
काम होय तहाँ और भी प्रहर्षन वरनते हैं सुन्दर मति जे  
हैं ते । ३४६ ॥

उदाहरण दोहा ।

चाहत सत पावत सहस गज पावत हय चाहि ।  
भावसिह यौ दानि है जगत सराहत जाहि ॥

सौ चाहै हजार पावे घोडा चाहे हाथो पावे भावसिह  
ऐसा दानी है जाको जगत सराहै है । इहाँ मन वाछित  
सौ रुपया घोडा से हजार रुपया हाथो पाये यात दूसरी  
प्रहर्षन है ॥ ३५० ॥

पुनः कवित्त ।

चित्र मै विलोकतही लाल को वदन बाल  
जीते जिहिं कोटि चन्द्र सरद पुनीन के । मुस-  
कानि अमल कपोलनि के रुचि बृन्द चमकै त-  
रोननि के रुचिर चुनीन के ॥ पीतम निहायो  
बाह गहत अचानकही जासै मतिराम मन स-  
कल मुनीन के । गाढै गही लाज मै न कठ है  
फिरत बैन मूल छूँ फिरत नैन वारि वरुनीन के ॥

बाल है सो तसबोर मै कृष्ण को मुख देखै ही, कैसी  
है बाल जिसनै सरद की पुन्यों के कोटि चन्द्रमा जीते हैं  
सनि निर्मल है कपोलनि के रुचि के समूहनि मै तरौनान  
की चुनीन के मुन्दर रुचि के बृन्द चमकै है ऐसी नायिका  
नै अचानक पीतम कौं बाह पकडतो देख्यो कैसी है पी  
तम मतिराम कहै है जाँमें सब मुनीश्वरन के मन लाज के  
मनै गाढै पकडो बचन कठ मै प्राय फिर जाते हैं । नैनन  
को जल बाफनोन को मूल छूँके फिरै है । इहाँ चित्र देख  
तै कृष्ण की प्राप्ति भई याते दूसरो प्रहर्षन है ॥ १५१ ॥

तृतीय प्रहर्षन सञ्चल दोहा ।

जहाँ अर्थ की सिद्धि को जतनहि ते फल होय ।  
इहाँ प्रहर्षन कहत है कवि कोविद सब कोय ॥

जहाँ प्रयोजन की सिद्धि को फल जतन से होय यह  
भी प्रहर्षन कहते हैं कवि पंडित सब कोइ ॥ १५२ ॥

उदाहरण दोहा ।

हरि की सुधि कौं राधिका चली अली के भौना  
हँसत वीचही मिलि गये वरनि सकै कवि कौन॥

कृष्ण की खबरि कौं राधिका है सो सखी के घर चली  
बीच में हँसते हुए मिलि गये सो सुख कौन वरनि सकै है  
इहां लक्षण मिलाप का जत्र सौं लक्षणही मिले यातै तीसरो  
प्रहर्षन है ॥ ३५६ ॥

अथ विषाद लक्षण दोहा ।

मन दुच्छित के अर्थ की प्रापति जहाँ विरुद्ध ।  
तहाँ विषादही कहत है जे कविजन मति सुद्ध॥

जहा मन बाधित प्रयोजन की प्राप्ति में चलटो हाय  
तहा विषादही कहते हैं जे कविलोग मति शुद्ध हैं ॥ ३५७ ॥

उदाहरण सबैया ।

आवत मै हरि कौं सपने लखि नैसुक वाट  
सकोचन छोडी । आगे ह्वै आडे भये मतिराम  
चली सुचितै चप नालच ओडी ॥ ओठनि को  
रस लैन कौं मोहन मेरी गही कर कंपत ठोडी॥  
और भटून न भई कछु वात गई दूतनेही मै नींद  
निगोडी ॥ ३५५ ॥

हरि कौं सपने में आवते देखि के सकोचनि में थोड़ी  
राह छोडी मतिराम कहे है अगाडी होय के आडे हो

गये सुचित्त कौ चलाय की नेचनि में लालच कौ ओटि कै  
 अधरनि को रस लेवा कौ मोहन नें कापता हाथ सौं ठोडी  
 पकडो । हे बहन और कछू बात नहीं हुई इतनेही में नि  
 गोडी नीद जाती रही । इहा चुम्बनादि बाकित सैं चलटो  
 वियोग भयो यातै विषाद है । ३५५ ॥

अथ उल्लास लक्षण दोहा ।

औरै के गुन दोष ते औरै को गुन दोष ।  
 वरनत यौं उल्लास है जे पडित मतिकोष ॥

और के गुन दोष सै और कौं गुण दोष होय यौं उ-  
 ल्लास वरनते है जे पडित बुद्धि के भडार हें ते । अर्थात् गुन  
 सै गुन दोष सै दोष गुन सै दोष दोष सै गुन यौं चारि  
 भेद जानिये । ३५६ ॥

गुन ते गुन उदाहरण सबैया ।

गुच्छनि के अवतस लसै सिपिपक्षनि अच्छ  
 किरौट बनायो । पल्लव लाल समेत छरी कर प  
 ल्लव से मतिराम सुहायो ॥ गुंजनि के उर मजुख  
 हार निकुंजनि ते कठि वाहिर आयो । आज को  
 रूप लखे ब्रजराज को आजही आखिन को फल  
 पायो ॥ ३५७ ॥

फूलन के गुच्छा ऊपर लसै हें ऐसी मोरनि की पाँखन  
 को सुन्दर मुकुट बनायो है लाख पावन समेत कामडो हाथ

मै है नवीन पान से हाथनि सैं शोभित है चिरमठीन क  
हृदय मै सुन्दर हार हैं निकुञ्जनि मै सैं निकसि कै बाहरि  
आयो है कृष्ण को आज को रूप देखने सैं आजही नेत्रनि  
को फल पायो है । इहा कृष्ण के गुन सैं नेत्रनि कौ गुन  
भयो यातै उल्लास है ॥ ३५० ॥

दोष ते दोष उदाहरण दोहा ।

मन्त्रिन के बस जो नृपति सो न लहत सुखसाज  
मनहि बाँधि दृग देत हैं मनहु मार कौ राज ॥

दिवाननि के बस जो राजा है सो सुख के समान नही  
पावै । नैन हैं सो मन कौ कैद करिके कामदेव कौ राज  
देते हैं । इहा नैन दोष ते मन्त्रिन कौ दोष है यातै दूसरो  
उल्लास है ॥ ३५८ ॥

गुन ते दोष को उदाहरण दोहा ।

दुख न मानि जो तजि चल्यो जानि अँगार गँवार  
छितिपालनि की माल मै तैही लाल सिँगार ॥

गवार है सो अँगार जानि कै छोडि चली ती दुःख  
मति मानै है लाल भूपालन की माला मै तूही सिँगार  
है । इहा लाल के गुन तै गवार कौ दोष है यातै तीसरो  
उल्लास है ३५८ ॥

दोष ते गुन को उदाहरण दोहा ।

दधि कुडाय मोहन लियो सखी सघन बन ठौरा  
बडो लाभ मन मै गुन्यौं जोन कियो ककु औरा ॥

हे सखी सद्य नवन की ठौर मैं मोहन नै दही छीन  
लियो मैंनै मन मैं बडो लाभ जान्यौ जो कछु और नही  
कियो । इहा लक्षण के दोष सैं आप की गुन भयो यातैं  
चतुर्थ सललास है ॥ ३६० ॥

अथ अवज्ञा लक्षण दोहा ।

औरै के गुन दोष ते औरै के गुन दोष ।

जहँ न अवज्ञा तहँ कहत कविजन बुद्धि अदोष ॥

जहा और के गुन दोष सैं और कौं गुन दोष नही  
होय तहा अवज्ञा कहते हैं ते ॥ ३६१ ॥

उदाहरण सवैया ।

रावरे नेह कौं लाज तजी अरु गेह के काज  
सबै विसराये । डारि दियो गुरुलोगनि को डर  
गाव चवाय मै नाव धराये ॥ हेत कियो हम जो  
तो कहा तुम तौ मतिराम सबै बहराये ॥ कीऊ  
कितेक उपाय करौ कहूं होत है आपने पीव प-  
राये ॥ ३६२ ॥

अर्थ अर्थान्तर न्यास मै लिख्यौ है इहा नायिका के  
गुन दोष नायक कौं नहीं लये यातैं व्यवज्ञा है ॥ ३६२ ॥

दोहा ।

मेरे हग वारिद वृथा बरषत वारि प्रवाह ।

उठत न अद्दुर नेह को तो उर ऊसर माह ॥



मेरे नेन मेघ नाहक जल समूह गेरते है तेरा द्विया  
रूपकाल मैं रमै प्रेम को कुरो नहीं निकसै इहा नायिका  
के गुन दोष नायक कौ नहीं लगे यातै अवज्ञा है ॥ ३६९ ॥

दोहा ।

कहा भयो जो तजत है मलिन मधुप दुख मानि  
सुवरन वरन सुवासजुत चम्पक लहै न हानि ॥

काई हुयो जो त्यागै है मलीन भौरो दुख मानि कै  
सोना के रग सुगन्ध सहित चम्पो है हानि नही पावै इहा  
चम्पक के गुन दोष भौर कौ नहीं लगे यातै अवज्ञा है ॥

वृहद्बनिताभूषन आकृति गुप्ता उदाहरन—सवैया ।

प्रात लला नवला घर आय हँसै हरषाय लु  
भाय महाही । देखि तिन्है सिर नाय रहीं मुस-  
काय रिसाय कही कछु नाही ॥ ताहि रिभावन  
कौ मनमोहन चाल अनेक करी चित चाही ।  
पै रस रोस प्रकाश कखो नहि जानि न जाय  
कहा यह आही ॥ १ ॥

दोहा ।

पिय विनती अपराध लखि रीभी ग्विजीन सोया  
अवज्ञा सुगुन दोष करि जहँ गुण दोष न होया ॥

अथ अनुज्ञा लेखण—दोहा ।

करत दोष की चाह जहँ ताही मै गुन देखि ।  
तहा अनुज्ञा कहत है कविजन ग्रन्थनि लेखि ॥

जहा दोष की चाह करै तिसी मै गुन देखि कै तहा  
अनुज्ञा कहत है कवि लोग ग्रन्थन कौ लेखि कै ॥३६५॥

उदाहरण सवैया ।

मीर पखानि किरौट बन्यौ मुकुतानि के कुण्डल  
श्रौन विलासी । चाम चितौनि चुभी मतिगम  
सु क्यों विसरै मुमकानि सुधा सी ॥ काज कहा  
सजनी कुलकानि सौ लोग हँसै भिगरे ब्रजवासी ॥  
मैं तो भई मनमोहन को मुख चन्द लखै विन  
मोल की दासी ॥ ३६६ ॥

मयूर के परन को मुकुट बन्यौ है मोतिन के कुण्डल  
कानन मै बिलास करत है मतिगम कहै है सुन्दर बिलो  
कनि गडि गई सी कैसे भूलै हँमनि अमृत सी । है सखी  
कुल की मर्याद सै काई काम है सब ब्रजवासी मनुष्य हँसत  
है मैं तो मोहन को मुखचन्द्रमा देखिके बिना मोल की  
चरो हो गई इहा दासी होवो दोष है ताकी गुन मानि  
कै चाह भई यातै अनुज्ञा है ॥ ३६६ ॥

पुन सवैया ।

क्यों इन आँखिन सौं निरसइ छै मोहन को

तन पानिप पीजे । नैक निहारें कलहू लगे इहिं  
गाव वसैं कही कसै की जीजे ॥ होत रहै मन  
यौ मतिराम कहूं वन जाय वडो तप कीजे । हे  
वनमात हिये लगिये अरु छै मुरली अधरारस  
लीजे ॥ ३६७ ॥

कैसे इन नेत्रन सौं निडर होय कै मोहन का शरीर  
को पानी पीजे नैक देखे सैं कलहू लगे है या याम में बसि  
कै किस तरह जीवें मतिराम कहे है मन ऐसे होतो रहे  
है कही कामन में जाय कै वडो तपस्या कोजिये तिमरें  
वनमाता होय हिया सौं लागिये और बसो होय थोठनि  
को रस लीजिये इहां वनमान मुरली हाइवो दोय है ताको  
गुन मानिके चाहो यातें अनुज्ञा है ॥ १६० ॥

हृदयगार्थचन्द्रिका - सवेया ।

राजन है दुर जीवन कीं अरु लाजन है स-  
जनी कुलवारी । साजन है मन को नवनेम निवा-  
जन है मनमोहन प्यारि ॥ गालन है ननदीन  
गुलाब विराजन है उर में गुन भारे । भाजन है  
गुरु लोगन को डर थाजन है अथ नेह नगारे ॥

अथ नेम कथय - दोहा ।

जहां दोय गुन होत है जहां होत गुन टोप ।  
तहां नेम यह नाम कहि वरनत कवि मति कोप ॥

जहा दोष है सो गुन होय और जहा गुन है सो दोष  
होय तहा लेख या नाम कह करिके बुद्धि के ,भडार कवि  
बनते है ॥ ३६० ॥

दोष ते गुन को उदाहरण दोहा ।

कत सजनी है अनमनी अंसुवा भरति ससक ।  
बडे भाग नंदलाल सौं भूठहु लगत कलक ॥

हे सखी क्यों उदास होय कै सडर आसू भरती है लक्षण  
सौं भूठे हो कलक लगे है तो बडे भाग हैं । इहा कलक  
दोष को गुन मान्यो याते लेख है ॥ ३६८ ॥

गुन ते दोष को उदाहरण दोहा ।

प्रतिविम्बित तो विम्ब मै भूतम भयो कलक ।  
निज निर्मलता दोष यह मन मै मानि मयक ॥

तो विम्ब में प्रतिविम्बित होने में कलक भयो मयक  
नै यह दोष अपनी निर्मलता मानी । इहा निर्मलता गुन  
में कलक दोष भयो याते लेख है ॥ ३६९ ॥

अथ मुद्रा लक्षण दोहा ।

प्रकृत अर्थ पर पदनि सौं शुद्ध प्रकासत अर्थ ।  
मुद्रा तासौं कहत हैं कवि मतिराम समर्थ ॥

प्रकृत अर्थ के पदनि सौं और अर्थ शुद्ध निकसे तासौं  
मुद्रा कहते हैं मतिराम कहे है समर्थ कवि हैं ते ॥ ३७० ॥

उदाहरण दोहा ।

देह दीप दीपति दिपै वदन चन्द्र की जोति ।  
दामिनिदुति मुसकानिमृदु सुखकीखानिउदीति ॥

देहरूपी दिया की प्रभा दिपै है मुखचन्द्रमा की जोति  
है बीजरी की कान्ति है सृदुमुसकानि है सो मुख की  
खानि सोभित है । इहा दीप चन्द दामिनी निकसे गतै  
मुद्रा है ॥ ३७१ ॥

अथ रत्नावली लक्षण दोहा ।

प्रस्तुत अर्थानि को जहाँ क्रम तैं थापन होय ।  
तहाँ कहत रत्नावली कवि रस बुद्धि समीय ॥

जहा प्रासंगिक अर्थानि को क्रम से आरोप होय तहा  
रत्नावली कहते है कवि हैं सो रस में बुद्धि कौं समीय कै ।

उदाहरण कवित्त ।

जीतय जे रावत ऐरावत सौं जग अग पु-  
गडरीक के गनत पुगडरीक छुट हैं । वामन वा-  
मन सृदु कुमुद कुमुद गनै अजन के जैतवार  
अजन से कद हैं ॥ पुष्पदन्तहू के दन्त तोय ज्यौं  
पुष्प सार छीन लेत सार्वभौमहू के सदा मद  
हैं । प्रबल प्रतीक सुप्रतीक के जितैया रैया राव  
भावसिंह तेरे दान के टुरद हैं ॥ ३७३ ॥

जो रावत ऐरावत सौं जग जीतै पुगडरीक के अगनि  
कौं कमल के पत्र गनते हैं वामन कौं वामन गनते है ।  
अजन कौं जीतनेवाले हैं अजन से कद के हैं पुष्पदन्त के  
दातनि कौं तोरें जैसे फूलनि को मार सदा सार्वभौम के

मट कौं भी छीनि लेते है प्रबल प्रतीक है सुप्रतीक के जो  
 तनेवारे है, हे राजान के राजा भावसिंह तरे नोन के दुग्द  
 है ते । 'इहा ऐरावतादि दिग्गज क्रम सैं कहे थैं रत्नावली  
 है ॥ १७३ ॥

अथ तदगुन लक्षण टोहा ।

जहं आपनौ रग तजि लेत और को रग ।

तदगुन तहँ वर्नन करत जे कवि वुद्धि उतंग ॥

जहा आपनौ रग छोडि के और को रग लेत तहां त  
 दगुन वर्नन करते है जे ऊची मति के कवि है ते ॥१७४॥

पटाहरण सवैया ।

हीरनि मोतिन के अवतमनि सोने के भूषन  
 की छवि छावै । हार चमेली के फूलन के तिन  
 में रुचि चंपक की सरसावै ॥ अग के सगु तैं के-  
 मरि रग की अम्बर सेत मै जोति जगावै । बाल  
 छवीली कपाये कपै नहि लाल कही अब क्यौ-  
 करि आवै ॥ ३७५ ॥

हीरा मोतिन का गहनानि मै सोना का गहनान की  
 छवि छावै है चमेली का फूलनि का हार हैं तिनमें चपा  
 की कान्ति सरसावै है । तन के सयोग सैं स्वैत वस्त्र मै के  
 सरि का रग की जोति जगावै है । छवि की भरो नायिका  
 है सो दुरायें सैं दुरै नहीं है लाल कही अब कैसे आवै

इहा गहना हार बसनि नै आपनों रंग छोडि संग रग लियो  
याते तदगुन है ॥ ३७५ ॥

वनिताभूषण । मध्यम नायक उदाहरण दोहा ।

पिय अनवोली लखि तुरत ठठकि रहे ब्रजनाथ ।

पुनि हँसती लखि जाय टिग भये हरितभरिवाथ ॥

अथ पूर्वरूप लक्षण दोहा ।

जहाँ और को रग तजि बहुरि आपनों लेत ।

वरनत पूरव रूप तहँ कवि मतिराम सचेत ॥

जहा और को रग छोडि कै फेरि आपनों रग ले ले  
तहाँ पूर्व रूप वरनते हैं मतिराम कहे हैं सचेत कवि हैं ते ।

उदाहरण दोहा ।

मुकुत हार हरि के हिये भरकत मनिमय होत ।

पुनि पावत रुचि राधिका मुख मुसकानिउदोत ॥

मोतीन को हार हरि के उर में पवामय होता है फेरि  
रुचि को पावै है । राधिका के मुख की हँसी के उदोत हैं  
इहा मोती नै पवा को रग लेय फेरि आपनों लियो याते  
पूर्व रूप है ॥ ३७७ ॥

द्वितीय पूर्व रूप लक्षण दोहा ।

प्रगटित पूरव दशहि को जहँ अनुवर्तन होत ।

दूजो पूरव कहि तहाँ वरनत पडित गोत ॥

जहा पूरव तुल्य को अनुवर्तता प्रगटित होय तहाँ दू  
सरो पूर्व रूप पडितन के समूह वरनते हैं ॥ ३७८ ॥

उदाहरण दोहा ।

बदन चन्द्र को चाँदनी देह दीप की जोति ।

राति बिते हूँ लाल वहि भौन राति सी होति ॥

मुख चन्द्रमा की चाँदनी है देह रूपो दिया की जोति है । हे लाल राति बीते पै भी उस घर में राति सी होती है । इहा दिन होने पै भी रातिही रही यातैं दूसरो पूर्व रूप है ॥ १०८ ॥

अथ अतद्गुन लक्षण दोहा ।

जहाँ सग मै और को रग कछू नहि लेत ।

तहाँ अतद्गुन कहत हैं कविजन बुद्धिनिकेत ॥

जहा सगति में को और कछू रग नहीं ले तहां अतद्गुन कहते हैं कवि लोग बुद्धि के घर ॥ १०९ ॥

उदाहरण दोहा ।

लाल,वाल अनुराग सौ रँगत रोज सब अग ।

तऊ न छोडत रावरो रूप सांवरो रग ॥ ११० ॥

हे लाल नायिका है सो प्रेम सौ रोजोना सब अग रंगे है तो भी आप को रूप है सो स्याम रग को नहीं छोड़े है अर्थात् अनुराग को रग नहीं लगे है । इहा स्याम ने स गति को गुन नहीं लियो यातैं अतद्गुन है ॥ ११० ॥

अथ अनगुन लक्षण दोहा ।

सम रुचि संगति और के वढत आपनों रग ।

अनगुन तासौ कहत हैं जे कवि बुद्धिउतग ॥



समान काति और की सगति सैं आपनों रग बढै तिस  
सौ अनगुन कहते हैं जे कवि कचो मति के है ते ॥३८३॥

उदाहरण दोहा ।

विरी अधर अजन नयन मँहटी पग अरु पानि ।  
तन कचन के आभरन लसत सरस छवि खानि ॥

ओठनि में बोही नेचनि में कज्जल पग और हाथन में  
मेहदी शरीर में सोना का गहना अधिक शोभा की छानि  
लभते है इहा विरो अजन महदी आभरन में समान रग  
अधरादि सगति सैं अपनों रग अधिक भयो याते अनुगुन है

अथ मीलित लक्षण दोहा ।

एक रूप हँ जाति मिनि जहाँ होत नहि भेद ।  
वरनत मीलित है तहाँ जिनकी वानी वेद ॥ -

जहा मिनि के एक रूप ही जाय भेद नहीं होय तहा  
जिनकी वानी वेद हैं ते मीलित वरनते हैं ॥ ३८४ ॥

॥ उदाहरण कवित्त ।

अग्नि में चन्दन घनसार अग्राग सेत सारी  
छीर-फैन की सौ आभा उफनाति है । राजत रु-  
चिर रुचि मोतिन के आभरनि कुसुमकलित  
केस सोभा सरसाति है ॥ कवि मतिगम प्राण  
प्यारे की मिलन जाति करिके मनोरथनि मृदु-  
मुसकाति है । होति ना लखाई निसि चन्द की

उज्यारी मुख-चन्द्र की उज्यार तन छाहैं, छपि  
जाति है ॥ ३८५ ॥

अगनि मै सेत चन्दन कपूर अगराग रेत सारी की  
सी उफनै है मोतोन का गहनानि की सुन्दर कान्ति राजै  
है फूलनयुक्त बारन की साभा मरसाती है मतिराम कवि  
कहै है प्रानप्यारे सैं मिलने कौं जातो है मनोरथन कौं  
करिके कोमल हंसती है राति मे चन्द्रमा की चाँदनी सैं  
जानी नहीं पड़े है मुख चन्द्रमा को चाँदनी सैं तन छाया  
भी छपि जातो है । इहा चाँदनी मै नायिका मिलि गई  
याँतैं मीलित है । ३८५ ॥

सवैया ।

देखि देखि सजनो सयानी सबै कचन के रग  
सम अगन मै भूपन वनावै ना । नायनिहू लाय  
लाय सलि मलि भूलि जाय जावक लगायो , ना  
लगायो पार पावै ना ॥ सुकवि गुलाव ल्यो प्रदीप  
के धताये विन बैठे जिहिँ भौन जनी दीपक , ज-  
गावै ना । कुन्दन कमालन के मालन मै हीर  
जाल लालन लगाये विन लाल पहिरावै ना ॥

दोहा

रग रु अग प्रकास को गवै जनावत जोय ।  
रूपगर्विता पुरतिया माल लेन तैं होय ॥ २ ॥

पायन जावक मिलि गयो यातें मीलित भाय ।  
मीलित मोलित में जहाँ भेद न जान्यो जाय ॥

षष्ठ सामान्य नक्षत्र दोहा ।

भिन्न रूप छु मै जहाँ पैये कछु न विशेष ।  
तहाँ कहत सामान्य है पडित लोग अशेष ॥

जहा न्यारा रूप मै भी कछु अधिक नहीं पावै तथा  
सामान्य कहते हैं सपूर्ण पडित लोग ॥ ३८६ ॥

उदाहरण कवित्त ।

सारी जरतारी की भलक भलकति तैसो  
केसरि को अगराग कीन्हों सब तन मै । तीरुन  
तरनि की किरिनि तैं दुगुन जोति जागति ज  
वाहिर जटित आभरन मै ॥ कवि मतिराम आभा  
अगनि अंगारनि की धूम कैसी धारा छवि छा  
जति कचन मै । यौषम दुपहरी में हरि कौं मि-  
लन चली जानी जाति नारि ना द्वारिजुत  
वन मै ॥ ३८७ ॥

जरी को साही को भलक भलक है तैसोही केसरि  
को अगराग शरीर में कियो है पैनी सूरज की किरिनि सौं  
दूगो जोति जगे है रत्ननि के जडे गहमानि में मतिराम  
कवि कहे है अगनि को आभा अंगारान की छी है धुवा

को सो धार की छवि बालन में छाजै है निदाघ की दो  
पहरी में कण्ठ सँ मिलने को जातो है नारि जानी नहीं  
जाय है दावानल भिन्न रूप है तो भी जानि नहीं परी  
यातै सामान्य है ॥ १८७ ॥

अथ उन्मीलित विशेष लक्षण दोहा ।

जहँ मीलित सामान्य मै पैयत भेद विशेष ।

उन्मीलित सविशेष कवि बरनत भति उल्लेख ॥

जहा मीलित और सामान्य में कोई अन्तर पावै तहा  
उन्मीलित और विशेष बड़ी बुद्धि के कवि बरनते हैं ॥ १८८ ॥

उन्मीलित उदाहरण दोहा ।

सरद चाँदनी मै प्रगट होत न तिय के अग ।

सुनत मजु मजीर धुनि सखी न छोडति सग ॥

सरद की चाँदनी मै तिया के अग जाहर नहीं होते  
सुन्दर मजीरनि को अवाज सुनती हुई सखी साथ नहीं  
छोडै है । इहा चाँदनी मै मिली नायिका मजीर धुनि सँ  
जानो यातै उन्मीलित है ॥ १८९ ॥

विशेषक उदाहरण दोहा ।

आई फूलनि लैन कौं चलो बाग मै लाल ।

मृदु बोलनि सौ जानिये मृदुबेलनि मै बाल ॥

फूल लेने को आई है हे लाल बाग में चलो कोमल  
बातन सौ जानिये है कोमल सतानि में नायिका यहा  
बेहि बाल में बोलवा सौ भेद जान्सी यातै विशेषक है ॥

अत्र गूढोत्तर मक्षण दोहा ।

अभिप्राय सौं सहित जो उत्तर कोऊ देय ।

तिहिं गूढोत्तर कहत है सुकवि सरस्वति सेय ॥

जो कोऊ अभिप्राय करि सहित उत्तर दे तिसको गू  
ढोत्तर कहते हैं सुकवि हैं ते सारदा को सेइ कै ॥ १८१ ॥

उदाहरन दोहा ।

ग्वालिन देहुं बताइ हौ मोहि कछू तुम देहु ।

बसीवट की छाह मैं लाल जाय लखि लेहु ॥

मैं गोपो बता द्यो तुम कछू मोको द्यो तो हे साब  
बसीवट की छाया मैं जाय कै देखि ल्यो इहां बसीवट नीचे  
मिनाप भाश्य है यातै गूढोत्तर है ॥ १८२ ॥

सवैया ।

अब दीय घरी दिन आय रछौ पथ जात  
गुलाब सु ठीक नही । नजदीक न याम उजारि  
महा मग लूटत लोग अगै दिनही ॥ इन्हिं ठां  
बहुधाम सरै सब काम तमाम मिलै बरवस्तु स  
ही । तुम जाहु न जाहु करौ जु रुचै सु दयाधरि  
मै हित बात कही ॥ १ ॥

दोहा ।

परदेशी सैं उक्ति तै स्वय दूतिका चार

उत्तर दीने भाव तै गूढोत्तर लकार ॥ २ ॥

अथ चित्र लक्षण दोहा ।

जहँ वूभक्त कछु वात कौ उत्तर सोई वात ।

चित्र कहत मतिरामकवि सकल सुमतिअवदात ॥

जहाँ कछु वात कौ पूछै सोई वात उत्तर होय मतिराम  
कवि कहे है तिसकौं सब उज्जल सुमति चित्र कहते है ॥

उदाहरण दोहा ।

सरदचद की चाँदनी को कहिये प्रतिकूल ? ।

सरदचद की चाँदनी को कहिये प्रतिकूल ३६४

सरद के चन्द्रमा की चाँदनी कहिये किसकौं दुखद  
है, उत्तर सरद का चद्रमा की चादनी चक्रवाकका मनकौं  
दुखद है इहाँ प्रश्नउत्तर उनही अक्षरों में है यातै चित्र है ॥

द्वितीय चित्र लक्षण दोहा ।

बहुती वातनि को जहा उत्तर दीजे एक ।

चित्र बखानत हैं तहाँ कविजन बुद्धिविवेक ॥३६५॥

जहाँ बहुत वातनि को एक उत्तर दीजिये तहाँ चित्र  
कहते है कवि लोग बुद्धि के ज्ञान सैं ॥ ३६५ ॥

उदाहरण दोहा ।

को हरिवाहन जलधिसुत को है ज्ञानजहाज ।

तहाँ चतुर उत्तर दियो एक वचन द्विजराज ॥

हरि को बाहन कौन है ? समुद्र को पुत्र कौन है ? ज्ञान  
की जहाज कौन है ? तथा चतुर ने जवाब एक बात में

द्विजराज है अर्थात् गरुड चन्द्रमा माघ्यण है इहा तीन प्रथ  
दियो कि को श्लेष करि एक शब्द में उत्तर है ॥ ३६१ ॥

अथ सूक्ष्म लक्षण दोहा ।

जानि पराये-चित्त की ईहा जो आकृत ।

होय जहाँ सूक्ष्म तहाँ कहत सुकविपुरहूत ॥ ३६० ॥

जहाँ पराये के मन की बात जानि कै जो आशय स  
हित चेष्टा होय तहा सूक्ष्म कहते है अच्छे कविन के इन्द्र ।

उदाहरण सबैया ।

लाल सखीनि मैं बाल लखी मतिराम भयो

उर आनन्द भीनौ । हाथ दूहूनि सौं चपक गु

च्छनि को जुग छाती लगाय कै लीनौ ॥ चन्द्र

मुखी मुसकाय मनोहर हाथ उरोजनि अन्तर

दीनौ । आंखिनि मूँदि रही मिसि कै मुख टाँपि

निचोल को अचल कीनीं ॥ ३६८ ॥

कृष्ण ने सखी मैं नायिका कौं देखी मतिराम कहै है

हृदो आनन्द मैं भयो भयो, दोनू हाथनि सौं चपा का फू

लनि को जोडो छाती सौं लगा कियो चन्द्रमुखो है सो

हसिकै मुन्दर हाथ कुचनि के भीतर कियो मिस करिकै

आपिन को मूँदि रही मुख की आड मैं निचोल को बल

कियो । इहाँ चपक फूल को जोडो छाती कै लगायो तामें

कुचन सौं छाती का स्पर्श की इच्छा जताई तब नायिका

नै छाती के हाथ लगाइ जताई तुम मेरा हृदय मै बसौ  
 ही, औपि मूदि कै जताई कमल मुदे पै मिलौंगो अर्थात्  
 राति मै मुख टापि कै जताई चद्रमा अस्त होयगो तब  
 मिलौंगी यह आशय है याते सूक्ष्म है ॥ ३८८ ॥

सवैया ।

वेष बनाय सखीगन मै तिय वैठि रही मन  
 आनंद भीनौ । आय तहां द्रुक आन सखी कल  
 कज खिल्यौ कर मै गहि लीनौ ॥ हेत जनाय  
 कछू मुसकाय गुलाव कंहै पग कै ठिग कीनों ।  
 कौन विचार विचारि बधू कलिका करिके सज-  
 नी कर दीनौ ॥ १ ॥

दोहा ।

पतिप्रणाम जलजात के पद सपरस तैं जानि ।  
 तिय कलिका करिदीनसो साँझमिलन पहिचानि ॥  
 क्रियाचातुरी तैं यहाँ क्रिया विदग्धा चार ।  
 पर आशय लखि जहँ क्रियाकरै सुसुक्ष्म विचार ॥

अथ पिहित लक्षण दोहा ।

जानि पराई वृत्ति जहँ क्रिया सहित आकूत ।  
 तहाँ पिहित वर्नन करत जे कवि सुमति सपूत ॥  
 जहा पैला की रीति कौं जानि कै आशय सहित



क्रिया होय तहा पिहित वर्नन करते हैं जे सुमति सपूत  
कवि हे ते ॥ ३८६ ॥

उदाहरण सवैया ।

और तिया सँग कुञ्जविहारी रघ्यौ निसि मै  
वसि कै रसभीनौ । प्रात समै मतिराम वखा  
नत राधिका-मदिर आवन कोनौ ॥ बोली न  
बोल कछू लखिकै घनसुदर को पट नील न-  
वीनौ । अवर केसरि रग, रँग्यो मुसकाय के मो-  
हन के कर दीनौ ॥ ४०० ॥

कण्य हैं सो और स्त्री के साथ रस में भोजि कै राति  
में वसि कै रघ्यो, मतिराम कहै है प्रभात मये राधा के घर  
आवन कियो कछू बोल नहीं बोली मेघ से सुदर को वस्त्र  
नीलो नयो देखि कै केसरि का रग को रँग्यो वस्त्र इसि कै  
कण्य का हाथ में दियो । इहा अन्य नायिका को पट प  
लटि यह जतायो यातैं पिहित है ॥ ४०० ॥

सवैया ।

नोति विनै गुनआगर नागर नाह उमाह  
भर्यो रँगभीनौ । नेहनछो चितचाह गद्यो  
ठिग आय कछ्यो हित वैन प्रवीनो। सो सुनि हो  
हरपी मुसकी न गुलाय अनादर आदर कीनो ।

क्यो मन अर्पण कारक पीकर दर्पवती तिय द-  
र्पन दीनो ॥ १ ॥

दोहा ।

सुरतचिन्ह दरसाव हित तियपिय मुकुरदिखाव ।  
पिहित जानि परवात कौ आशयसहित जनाव ॥

अथ व्याजोक्ति लक्षण ।

और हेतु वचननि जहाँ आकृति गोपन होय ।

ज्याल उक्ति तहँ कहत कवि ग्रन्थ समुद्र विलोय ॥

अन्य कारन के वचननि सौं जहा स्वरूप की छिपा  
यवो होय तहा कवि हैं सो ग्रन्थ रूप समुद्र कौं मयि कै  
व्याजोक्ति कहते हैं ॥ ४०१ ॥

उदाहरण सबैया ।

लैन गर्द हुती बागहिँ फूल अंधारी लखे डर  
वाढ्यो तहाँई । रोम उठे तन कप कुच्यो मति-  
राम भई अम की सरसाई ॥ वेलिनि सौं उरभी  
अंगिया छतियाँ अति कटनि की छतिछाई । देह  
मै नेकु सन्हार रक्ष्यो नहीं ह्या लागि भागि मरु  
करि आई ॥ ४०२ ॥

बाग में फूल लेवा गइही अंधियारी देखि कै बडी  
भय बढ्यो रोम खड़े हुये कप हुयो मतिराम कहै है पसेव

बड़े बेमरौन सों आगी चरभों, छातों छै सो अत्यत काटान  
का घाव सों छाई, शरीर में नेक हीस नहीं रह्यो इहा  
ताई मुसकलि सैं भागि कौ भाई हीं इहा भय को बहानों  
कहिं कै रति के चिन्ह छिपायो यातैं व्याजोक्ति हे ॥ ४०२ ॥

व्य० च० सवैया ।

फागुन मास वडो उतपात रहै निसिवासर  
नींद न आवैं। आपस मांभ सवै नर नारि निर-  
तर चौगुन फाग रचावै ॥ जो कुल नारि कहूं  
सरमाय दुरै तवहूं गुरुनारि वतावै । या ब्रज में  
यह रीत बुरी घर मै धसि लोग लुगाइन लावैं॥

दोहा ।

सुरत करत एकांत में लखी सखी नै आनि ।  
ताहि दुरावत आन कहि यौ व्याजोक्ति वखान ॥

अथ गूढोक्ति लक्षण दोहा ।

कहिवे जो कछु और सो कहै और सो बोलि ।  
गूढ उक्ति तासो कहत जिनकी बुद्धि अमोलि ॥

जो कछु और सों कहनो है सो और सों बतलाय कहै  
तिसमों गूढोक्ति कहते है जिनकी मति अमोलो है ते ॥

सदाहरन दोहा ।

यौ न प्यार विसरादये लई मोहि तैं मोल ।  
मुख निरखत नंदलाल को कहै सखो सों बोल ॥

ऐसे प्यार नहि विचाराइये तैने मोक्षीं मोलि सीनी,  
 लक्ष्य को मुख देखतो हुई सखी सौं वचन कहे है इहा  
 लक्ष्य सौं कहवा की बात सखी सौ कही यातै गूढोक्ति है।

सवैया ।

घोरन साजि समाज गुलाब बडे परभात लगी  
 ककु वार न । लाल गये संग साथिन लै वर वा-  
 सन भूपन धारि हृद्यारन ॥ देखि रही करि पा-  
 हन सो उर गे जुग जाम जरीं ज्वर भारन । भू-  
 लत नाहिं परोसनि री हम-पीतम को परदेस  
 पधारन ॥ १ ॥

दोहा ।

रहत सौतिवस पिय सदा सासू कहत कुवैन ।  
 अब ननदी हू घर गई विष सी लागत रैन ॥२॥  
 कहै आन मिस आन से विदग्धा सु विख्यात ।  
 गूढोक्ति सु मिस आन के कहै आन सै बात ॥३॥

अथ विवृतोक्ति लक्षण ।

जहाँ श्लेष सो गुप्त सो सुकवि प्रकासत अर्थ ।  
 विवृतोक्ति तहँ कहत हैं जे कवि सुमति समर्थ ॥

जहा श्लेष सौं जो गुप्त अर्थ सुकवि है सो प्रकासै तहा  
 विवृतोक्ति कहते हैं जे कवि सुमति समर्थ हैं ते ॥ ४०५ ॥

उदाहरण कवित्त ।

आई है निपट साँभ गया गई घर साभ हातें  
 दीरि आई कहै मेरो काम कीजिये । हौ तो हौं  
 अकेली और दूसरो न देखियत बन की अंधारी  
 सौ अधिक भय भीजिये ॥ कवि मतिराम मन  
 मोहन सौ पुनिपुनि राधिका कहति वात साँची  
 कौ पतोजिये । कब की हौं हेरति न हेरें हरि  
 पावत हौं बहुरा हिरान्यो सौ हिराय नैक दी-  
 जिये ॥ ४०६ ॥

बहुत साभ होय आई है गाय घरमें गई है उहां सैं दीरि  
 कौ आई हौ मेरो काम करिये सैं तो अकेली हौं और दूसरो  
 नहीं देखै है जगल की अंधेरो सैं घणी डर सैं भोजौं हौं  
 मतिराम कवि कहै है मनमोहन सौं फेरि फेरि राधिका  
 वात कहै है साँची करिके पतोजिये कब की सैं देखौं हौं  
 है हरि देखने सौं नहीं पावतै हौ बहुरा खो गयो है सौ  
 नैक टूटि दोजिये इहां साभ अकेली बन अंधियारी इत्या  
 दि पदनि सौं डर योग्य ठोर सैं मिलाय योग्य ठोर यह  
 अर्थ कवि नै कही राधिका कहै है साँची वात मानौं ऐसे  
 गुप्त अर्थ प्रगत्यो यातै विवृतोक्ति है ॥ ४०६ ॥

अथ युक्ति उद्यम दोहा

सरम कृपावन कौ जहा क्रिया आन सधान ।

तहाँ जुक्ति बरनन करत कवि कोविट सज्जान ॥

सरम दुरायत्रे कौं जहा और क्रिया को सधान करै है  
तहा कवि पण्डित ज्ञानधान जुक्ति बरनन करते है ॥ ४०७ ॥

उदाहरण सधैया ।

लेन कौं फूल निकुंजन माभ गयो मिलि  
गोपिन को गन भायो । नन्दलला तिय के हिय  
मै मतिराम तहाँ दृगवान खुभायो ॥ गेह चली  
सखियाँ सगरी चित सुंदर साँवरे रूप लुभायो ।  
आँखिनि पूरि कटीले कपोलनि कटक कोमल  
पाय चुभायो ॥ ४०८ ॥

निकुंजन में फूल लेवा कौं गोपिन कौ समूह भायो  
हुयो मिलि कौ नन्द के लाल नी नायिका का हिया मैं म  
तिराम कहै है तहा नैनरूपी वान गढायो सब सखी घर  
कौं चली चित्त है सो सुंदर स्याम का रूप पै लुभ्यो आ  
खिन मैं जल भरि कौ कपोलनि पै रोम उठि कौ कोमल  
पग मैं काटो गढायो दृहा अथु रोम सात्विक छिपाइवे कौं  
काटो गढायो । यातें युक्ति है ॥ ४०८ ॥

अथ लोकोक्ति तथा छेकोक्ति लक्षण दोहा ।

जहँ कहनावति अनुकरण लोक उक्ति मतिराम ।

और अर्थ लीन्हे सु लो छेक उक्ति अभिराम ॥

जगत की कहनावति को अनुकरण होय सो मतिराम

कहे है लोकोक्ति है और अर्थ लिये हुये लोकोक्ति होय सो सुन्दर छेकोक्ति है ॥ ४०८ ॥

लोकोक्ति उदाहरण सवेया ।

मोहन को मुखचद्र लखें बढि आनंद आं-  
खिन ऊपर आवै । रोम उठैं मतिराम कहे तनु  
चारु कदम्ब लता छवि छावै ॥ वृक्षति हो हित  
के सखि तोहिँ कहा रिस के यह भौह चढावै ।  
मै तन सो गन्यो तीनहु लोकनि तू तन ओट  
पहार छपावै ॥ ४१० ॥

छाया को मुखचन्द्रमा देखतै आनन्द बढिके नैननि के  
ऊपर आवै है मतिराम कहे है रोम उठै है शरीर है सुंदर  
कदंब की शाखा की छवि छावै है है सखी हित करिके  
तोकीं पूछीं हीं रोस करिके यह भौह काई चढावै है  
मैने तीनी लोक कीं तन समान गन्यो है तू तन को ओट  
सौ पर्वत कीं छिपावै है इहा तन ओट पर्वत यह लोक  
कहनि है यातै लोकोक्ति है ॥ ४१० ॥

छेकोक्ति उदाहरण सवेया ।

छिति नीर कृसानु समीर अकास समीर वि-  
है तिनू रूप धरै । अरु जागत सोवत हू मति  
राम सु आपनी जोति प्रकास करै ॥ जग ईश  
अनादि अनन्त अपार वहै सब ठौरनि मैं वि

हरे । सिगरे तनु मोह मै मोहि रहे तन ओट  
पहार न देखि परै ॥ ४११ ॥

भूमि जल अग्नि पवन नभ चन्द्र सूर भी तनवत रूप  
कौ धारण करै ॥ जगत का स्वामी आदि अत पाररहित  
है वही सपूर्ण स्थाननि मै विचरै है सब शरीर के मोह म  
मोहित हो रहे हैं तिनूका के ओट पर्वत नही दीखि परे  
है इहा तन ओट पहार न देखि परै यह लोक कहनि है  
तामै यह अर्थ निकस्यौ सर्वव्यापी भगवान तनु के मोह से  
नहीं दीखै यातै छेकोक्ति है ॥ ४११ ॥

अथ वक्रोक्ति लक्षण दोहा ।

श्लेष काकु सो अर्थ की रचना और जु होय ।

वक्र उक्ति सो जानिये ज्ञान सलिल मतिधोय ॥

श्लेष और काकूक्ति सौ को अर्थ को बनावटि और  
हो जाय सो वक्रोक्ति जानिये ज्ञान पानी में बुद्धि कौ धोय  
कौ ॥ ४१२ ॥

श्लेष उदाहरण दोहा ।

मेरे मन तुम वसत हो मै न कियो अपराध ।

तुम्है दोष को देत हरि है यह काम असाध ॥

मेरा मन में तू वसै है मैने कुसूर नही कियो है हरि  
तुमको दोष कौन देत है यह कामदेव असाधु है इहा मै न  
पद के दोष अर्थ, मै नहि और काम, तासौ अर्थ फिखो  
यातै वक्रोक्ति है ॥ ४१३ ॥



अथ काकु उदाहरण सबैया ।

आज कहा तजि वैठी हौ भूपन ऐसही अग कछू अरसीले । बोलत बोल रुखाई लिये मति राम सनेह सने हौ सुसीले ॥ क्यों न कहै दुख प्रानप्रिया अंसुवानि रहे भरि नैन लजीले । कौन तिन्है दुख है जिनकै तुम से मनभावन छैल छवीले ॥ ४१४ ॥

(नायक वचन) आज कहि गहने खोलि कै वैठी हौ ? (नायिका का उत्तर) ऐसही कछु अग आलस भरे है, (नायक वचन) वचन रूखापन लिये बोलती हौ मतिराम कहै है (नायिका वचन) प्रेम लपेटे हौ सुसील, (ना० वचन) है प्रानप्यारी दु ख क्यों नहि कहै है लजीले नेत्र आसून सौ भरि रहे है (नायिका वचन) निनकौ कौन दु ख है जिनके आप से छवीले छैल मनभावते है इहा कौन दु ख है अर्थात् सब दुख है यह काकोक्ति करि अर्थ फिग्यौ यातै बक्रोक्ति है ॥ ४१४ ॥

अथ जाति लक्षण दोहा ।

जाको जैसो होय सो वरनत जहाँ सुभाव ।  
तहाँ जाति यह नाम कहि वरनत सब कविराव ॥  
जहा जिसको जिस तरह को सुभाव होय सो वरने  
तहा जाति या नाम कहि कै सब कविराव वरनते हैं ॥

सदाहरण कवित्त ।

जानत जहान अड करि सुलताननि सौं  
 कीनो कछवाह कामधुज को बचाव है । देत  
 मतिराम भाट चारन कविन जात कौन पै ग-  
 नायो जात गज समुद्राव है ॥ तेग त्याग सालिम  
 सपूत शत्रुशालजू की खीभे रन रुद्र रीभे मौज-  
 दरियाव है । साहनि सौ अकसिवो हाथिन को  
 वकसिवो रात्रभावसिद्ध जू को सहज सुभाव है ॥

जगत जानै है पातसाहन सो अकड करिके कछवाह  
 कामाधुज को बचाव कखौ मतिराम कहै है बन्दीजन धा-  
 रन कविन की जाति को जो हाथिन की समूह देत है  
 सो कौन पै गनना कियो जाय है तेग और दान में शत्रु  
 शाल जी को सपूत सालिम है खीजे ती सराम में शिव है  
 रीभे पै देन की समुद्र है पातसाहनि सौं आट करिवो  
 हाथिन को देवो राव भावसिद्धजी को साधारण सुभाव है ।  
 इहाँ सुभाव को वर्नन है याते सुभावोक्ति है ॥ ४१६ ॥

सवैया ।

इतरावतिही अबही बतियाँ बतरावतही  
 जिन मै थल ना । सतरावतिही सखिया जन पै  
 थिति पावतही पल टू पल ना ॥ छिन माहि अ-  
 चानक आन भई असुवां भरलात परै कल ना ।

कस री सखि वाय भरें धुनि माय गुलाव न साथ  
चलै ललना ॥ १ ॥

दोहा ।

है अज्ञात नबोढ यौं पियटिंग मचलत जात ।  
वर्नन जाति स्वभाव की स्वभावोक्ति विख्यात ॥

अथ भाविक लक्षण दोहा ।

जहाँ भयो भावी अरथ बरनत हैं परतच्छ ।  
तहँ भाविक सब कहत हैं जिनकी मति है अच्छ ॥

जो अर्थ हो गयो और आगे होयगो ताकी प्रत्यक्ष व  
रनते है तहा भाविक कहते है जिनको बुद्धि अच्छी है ते ॥

उदाहरन कवित्त ।

निसि दिन श्रौननि पियूष सो पियत रहैं  
छाय रछ्यो नाद बांसुरी के सुरग्राम को । तरनि-  
तनूजा-तीर वन कुज वीथिन में जहा तहा देख-  
ति है रूप छविधाम को ॥ कवि मतिराम होत  
हाती ना हिये ते नैक सुख प्रेम गात को परस  
अभिराम को । ऊधो तुम कहत वियोग तजि  
जोग करौ जोग तव करैं जो वियोग होय स्याम  
को ॥ ४१८ ॥

राति दौस काननि सैं अमृत सो पीती रहै है मुरली  
के सुरग्राम को नाद छाय रछ्यो है मूरसुता के तट पै का

ननकुज की गलोन मैं लहा तहा शोभा के घर को रूप  
 देखतो है मतिराम कवि कहे है हिया सै नैक लुदो नही  
 होय है प्रेम को सुख और शरीर का सुन्दर स्पर्श को सुख,  
 है ऊधी तुम कहते हौ वियोग कौ छोड़ि कै जोग करौ  
 जोग तब करै जो स्याम को वियोग होय जब । इहा दुई  
 लीला प्रत्यक्ष वरनी यातै भाविक है ॥ ५१८ ॥

द्वितीय उदाहरण दोहा ।

जनि चलाइये चलन की चरचा स्याम सुजान ।  
 मै देखति हौं वाहि यह बात सुनत विन प्रान ॥

है लक्षण प्रवीन गमन की बात नहि करिये मैं उसकौ  
 या बात सुनतैही प्रानरहित देखती हौं । इहां विन प्रान  
 होयगी सो वर्तमान मैं वरनी यातै भाविक है ॥ ४१९ ॥

अथ द्विविधा उदात्त लक्षण दोहा ।

सपति को अधिकार जो अरु उपलक्षण और ।  
 सो उदात्त है भांति को वरनत कवि सिरमौर ॥

जो सपति को आधिक्य और उपलक्षण और को, सो  
 उदात्त दोय प्रकार को सिरमौर कवि वरनते है ॥ ४२० ॥

उदाहरण कवित्त ।

मुहुमि को पुरहूत शत्रुशाल को सपूत सगर  
 फतूहै सदा जासौं अनुरागती । दान देत रीझ  
 मै दिवान भावसिंह जू कौ धनद के धाम की

तनक निधि लागती ॥ कहै मतिराम मजलिस  
में महीपनि की कविन की वानो हाडा सुजस  
मै पागती । जैती और राजनि के राजनि में  
सपति हैं तैती रोज राव के चिराकें जोति जा-  
गती ॥ ४२१ ॥

शत्रुशाल को सपूत है सो पृथ्वी को इन्द्र है सयाम की  
धजा जिसमें प्रेम करती है सदा दिवान भावसिंह जी कौं  
रोझ में दान दें कुवेर के घर की दौलति छोड़ीसी लगे है,  
मतिराम कहै है राजानि की सभा में कबीखरनि की बोली  
हाडान का जस में पागै है जितनी और राजान की रा-  
ज्यस समेत सपति है तितनी रोजोना राव के रोसनी में  
लगती है । इहा भावसिंह जी की सपति की अधिकता है  
यातें उदात्त है ॥ ४२१ ॥

पुन कवित्त ।

पीयुषपयोधि मइ मनिन सौं वह भूमि  
रोध सौं रुचिर रुचि रोचक रवन में । कामतरु  
विपिनि कदव उपवन सीरो सुरभि पवन डोलै  
मृदु सी गवन में ॥ चिन्तामनि मडप विराजै जग-  
दव सदा सावधान मतिराम सेवक अवन मै ।  
लपट लुबुध मन भव मै भँवत कहा करि भूरि  
भाव ताको भावना-भवन में ॥ ४२२ ॥

अमृत की समुद्र की बीच में मनिन सौं जटित पृथ्वी  
 है तीर है सो सुन्दर सैं सुन्दर रोचक को रोचक है तामैं  
 कल्प वृक्षनि को वन है कदबनि को वाग है तामैं शीरो  
 सुगन्धित समीर डोलै है कोमल चाल में पारस के मडप  
 में सदा जगमाता बिराजै है मतिराम कहै है दास की  
 पालना में खबरदार है अरे कपटी लोभी मन ससार में  
 कौई भ्रमै है तिसकी रचनाभवन में बहुत भाव करि। इहाँ  
 भगवती को सपति को बहाई है यातै उदात्त है ॥ ४२२ ॥

उपलक्षण उदाहरण दोहा ।

निकसत जीवहिं वाधि कै तासौ राखति वाल ।

जमुनातट वा कुज मै तुम जु दर्ई वनमाल ॥

जीव निकसै है उसकौ वाधि कै वाल है सो तासौ राखै  
 है जमुना के तीर पै उस कुज में आपनै जो वनमाला दीनी  
 ही। इहा वा कुज मै वनमाला दीनी ही यह उपलक्षण है  
 यातै उदात्त है ॥ ४२३ ॥

अथ अत्युक्ति लक्षण दोहा ।

जो सुंदरतादिकनि की अधिक भुठार्ई होय ।

ताहि कहत अत्युक्ति हैं कवि पंडित सब कोय ॥

जो सुन्दरता आदि की बहुत भूठ होय तिसकौं अत्यु  
 क्ति कहते हैं कवि कोविद सब कौई ॥ ४२४ ॥

उदाहरण सबैया ।

ललित विलास कोटि मन्द मृदुहास अति

अंग की सुवास मृगमद-वास मन्द की । मदन  
के मद उनमद नैन मन्दिर में गति गरवीली  
भट मोकल गयन्द की ॥ जीवन की जोति जग  
मग होत मतिराम लोचन चकोरनि की संपति  
अनद की । अधिक अंधारी में उज्यारी होत  
ज्यौ ज्यौ कछू चन्द की उजारी में उजारी मुख  
चन्द की ॥ ४२५ ॥

सुन्दर बिनासनि से कोटि गुणों मन्द कोमल हास्य है  
शरीर सुगन्ध ने कस्तूरी की गंध अति मन्दी करी है काम  
देव के मद से नैन चम्पक है महल में गरवीली चाल है  
सो हाथी का मद को दूर करे है मतिराम कहे है मो  
जीवन जोति जगमग होय है लोचन रूपी चकोर है तिन  
के आनन्द की सपति है जैसे अति अंधारी में कोई चादनी  
होती है तैसे चन्द की चादनी में मुखचन्द्रमा को चादनी  
होती है । इहाँ हास्य सुवास गति जोति मुख की उजारी  
को अतिसय वर्नन है याते अत्युक्ति है ॥ ४२५ ॥

मुन दोहा ।

वाल विलोचन वारि के वारिधि वटैं अपार ।  
जारै जो न वियोग की वडवानल की भार ॥

नायिका के नैन के जल का समुद्र बहुत वटैं जो वि  
योग की अग्नि की भूल नहीं जलावै तौ इहाँ विरह से  
आंसू को अतिसय वर्नन है याते अत्युक्ति है ॥ ४२६ ॥

अथ निरुक्ति लक्षण दोहा ।

जहां जीग ते नाम की अर्थ कल्पना और ।  
वरनत तहां निरुक्ति है कवि कोविद सिरमौर ॥

जहां सजोग सैं नाम को अर्थ की रचना और होय तहां  
निरुक्ति वरनते है कवि पंडितन के सिर के मौर ॥४२६॥

उदाहरण कवित ।

मोहनि मत्रनि मनमोहन कियो तैं वस वा  
रन ज्यों बांधि राखै तामरस ताग सौ । कवि  
मतिराम आली अलि सो गुविन्द कीन्हैं मडित  
घरन अरविन्द के पराग सौं ॥ ऐसो पति पायो  
बडे भागनि सौं प्यारी सदा सुवरनही कौ पघि-  
लावत सुहाग सौ । स्याम स्याम कहिये सिंगार  
रस राख्यौ ताते लाल लाल कहिये रंग्यो है अ-  
नुराग सौ ॥ ४२८ ॥

मोहनि मत्रनि सौं मैंने मनमोहन बसि कियो जैसें  
कमल का तार सौ हाथी कौं बांधि राखै मतिराम कवि  
कहे है है सखी गोविन्द कौं भ्रमर सो कियो भूपित पग  
रूपी कमल का केसर सौं है प्यारी बडे भागनि सौं ऐसो  
पति पायो है सदा सुवरन सैं सुहागा कौं तावै है अङ्गार  
रस में रचि रच्यो है तिससौं स्याम कहिये है अनुराग सौं  
रंग्यो है ताते लाल लाल कहिये है । इहा अङ्गार अनुराग के



जोग सै स्याम लाल नाम का अर्थ की और रचना भई  
यातै निरुक्ति है ॥ ४१८ ॥

पुन कवित्त ।

हैकै डहडहे दिन समता के पायें विन साभ  
सरसिजनि सरसि मिर नायो है । निसा भरि  
निसापति करिकै उपाय विन पायें रूप वामर  
विरूप है लखायो है ॥ कहै मतिराम तेरे बदन  
वरावरि को आदरस विमल विरचि न बनायो  
है । दरप न रछौ ताते दरपन कहियत मुकुर  
परत ताते मुकुर कहायो है ॥ ४२६ ॥

दिन सै प्रफुलित होय कै वरावरी पाये बिना सथा में  
कमलनि नै लज्जित होय कै ममक नवायो है चन्द्रमा है  
सो सारी राति उपाय करिकै रूप पाये बिना दिन में बिना  
रूप होय कै दोषी है मतिराम कहै है तेरे मुख की वरा  
वरी को काच ब्रह्मा नै नही बनायो है गर्व नहीं रछौ  
यातै दरप न कहिये है फिरि जाय है यातै मुकुर कहायो  
है । इहाँ रूप के जोग दरपन को दूसरो अर्थ हयो और  
मुकुर को दूसरो अर्थ भयो यातै निरुक्ति है ॥ ४२६ ॥

अथ प्रतिषेध लक्षण दोहा ।

जहा प्रसिद्ध निषेध की अनुकीरतन प्रकास ।  
तहा कहत प्रतिषेध है कविजन बुद्धिविलास ॥

जहा प्रसिद्ध बात का निषेध को अनुकथन प्रगट होय  
तहा प्रतिषेध कहते है कवि लोग बुद्धि के आनंद से ॥

उदाहरण सवेया ।

ऐसी करी करतूति बलाय ल्यों नीकी बडाई  
लहौ जग जातैं । आई नई तरुनाई तिहारीही  
ऐसे कके चितवौ दिन रातैं ॥ लीजिये दान हौं  
दीजिये जान तिहारी सबै हम जानती घातै ।  
जानौ हमै जनि वै वनिता जिन सौं तुम ऐसी  
करी बलि वातै ॥ ४३१ ॥

वारी जाऊ ऐसी करनी करी जिससै जगत में अच्छो  
सुति पावौ आपकी ही नई जवानी आई है ऐसे मस्त हुये  
राति दिन देखो हौ है कथ्य दान लीजिये हम कौं जाने  
दोजे आपकी घात हम सब जानती है हमको वै श्री मति  
जानौ जिनसों आप ऐसे बात करी वारी जाऊ । इहा हम  
को वै वनिता मति जानौ यह प्रसिद्ध को निषेध है यातै  
प्रतिषेध है ॥ ४३१ ॥

अथ विधि लक्षण दोहा ।

जहा सिद्धिहो बात को करत प्रसिद्ध बखान ।  
विधि भूपन तहँ कहत हैं सकल सुकवि सज्जान ॥

जहां सिद्धि बात हैही ताको प्रसिद्ध बर्नन करे तहा  
विधि अलकार कहते है सपूर्ण ज्ञानवान सुटु कवि ॥४३१॥

उदाहरण कवित्त ।

कोप करि सगर मै खगा कौं पकरि कै ब-  
हायो बैरि नारिन को नैन-नीर सीत है । कहै  
मतिराम कोन्हौ रीझि कै निहाल महीपालनि  
के रूप सब गुनिन को गीत है । जागै जगसा  
हिव सपूत सत्रुसाल जू को दसहू दिसानि जस  
अमल उदोत है ॥ खलनि के खडिवे कौं मगन  
के मडिवे कौं महावीर भावसिह भावसिह हीत  
है ॥ ४३३ ॥

रुग्राम मै क्रोध करि कै तरवारि कौं पकडि कै बैरीन  
को झीनि के नेत्रजल को सीत बहायो मतिराम कहै है  
रीझि करिकै निहाल कियो राजान के डोल को सब गुन  
वानन को समूह, जागै है जगत में राजा शत्रुशाल जी के  
सपूत को दसौं दिसानि में निर्मल जस को उदोत, दुष्टनि  
के काटिवे कौं जाचकनि के भूपित करवे कौं महा सूर  
भावसिह है सो भावसिह होय है । इहा सिद्ध भावसिह  
कौं सिद्ध कियो यातैं विधि है ॥ ४३२ ॥

अथ हेतु लक्षण दोहा ।

जहा हेतुमत साथही कीजे हेतु बखान ।  
तहा हेतु भूपन कहत कवि मतिराम सुजान ॥  
जहा कारज के साथही कारन को वर्नन करिये तहा

हेतु अनकार कहते है मतिराम कहि कहै है सुजान है  
त ॥ ४३४ ॥

उदाहरण सबैया ।

और सकै कहि को मतिराम सतासुत के  
वरने गुन वानी । राव सही दरियाव जहान को  
आय जहाँ ठहरात है पानी ॥ काम-तरोवर धेनु  
औ पारस नैकु न मगन के मन मानी । दारिद्र-  
दैत्य विदारिवे कौं भई भाज दिवान की रोझ  
भवानी ॥ ४३५ ॥

मतिराम कहै है और कौन कहि सकै शत्रुशाल के पुत्र  
के गुन सरस्वती वरने, सत्यही राव है सो जगत को समुद्र  
है जहा आय के पानी ठहरै है, कल्पवृक्ष कामधेतु पारस  
जाचक के मन में नही मानी दरिद्र रूप दानव के मारिवे  
कौं दिवान भावसिद्ध की रोझ है सो देवी है । इहा भाव  
सिद्ध की रोझ कारन, दारिद्र दूरि होओ कारज, तिनको  
साय बर्नन है ताते हेतु है ॥ ४३५ ॥

पुन दोहा ।

दरपन मै निज रूप लखि नैननि मोद उमग ।  
तियमुख पियवसि करन को वढ्योगर्व को रग ॥

काच में अपना रूप कौं देखि के नैननि में हर्ष की  
उमग देखि के पीतम कौं बस करवा को अभिमान को

रग नायिका का सुख पै बख्यौ। इहा रूप कारन पीतम को  
बसि होओ कारज साथ है यातैं हेतु है । अथवा पीतम  
को बसि होओ कारन गर्व को रग बढिबो कारज साथ है  
यातैं हेतु है ॥ ४२६ ॥

द्वितीय हेतु लक्षण दोहा ।

जहां हेतुमत हेतु को बरनत एक सरूप ।  
तहा हेतु औरै कहत सब कवि पंडित भूप ॥

जहा कारज कारन को एक रूप बरनै तहा और हेतु  
कहते है सब कवि पण्डितन के राजा ॥ ४२७ ॥

उदारक्षण दोहा ।

नेननि को आनन्द है जिय की जीवनि जानि ।  
प्रगट दरप कदर्प की तेरी मृदु मुसकानि ४३८

तेरो कोमल हासी है सो नेत्रनि को सुख है जीव की  
जिवायवेवारी जानि कामदेव को जाहर गर्व है इहा हासी  
कारन है आनन्द जीवन दर्प कारज है ताको एक सरूप  
बरन्यो यातैं द्वितीय हेतु है ॥ ४३८ ॥

तृतीय हेतु लक्षण दोहा ।

जहँ समर्थिबे अर्थ की प्रगट समर्थन होय ।  
तहा हेतु औरै कहत कवि कोविद सब कोय ।

जहा समर्थन करवे योग्य अर्थ को समर्थन होय तहा  
और हेतु कहते है कवि पण्डित सब कोई ॥ ४३९ ॥

उदाहरण सवैया ।

भौह कमान कौ लोचन वान कौ लाजहि मारि  
रहै विसवामी । गोल कपोलनि केनि करै भयो  
कुंडल लोल हिंडोल विलासी ॥ कोट किरौट  
किये मतिराम करै चढि मोर पखानि मवासी ।  
क्यों मन हाथ करौं सजनी वनमाल में बैठि  
भयो वनवासी ॥ ४४० ॥

भृकुटीन कौ धनुष करिके नेत्रनि कौ तीर करिके लाज  
कौ मारिके विश्वासो रहै है बर्तुन गालनि पै क्रीडा करै  
है चचल कुंडल रूप भुलाकि विलासो भयो मतिराम कहै  
है मुकुट को किलो किये छुयें मयूर की पापनि पै चढि कै  
मवासी करै है हे सजनी कैसें मन कौ बस में राखों वन  
माना में बैठि करिके वन को वासी भयो । इहा मन बस  
नहि होय इसके समर्थन कौ भौह कमानादि कहै यातैं  
हेतु है ॥ ४४० ॥

पुन कवित्त ।

देखि महिपालनि की कपति है छाती ऐसी  
सपति सहित दैत जाचकनि दान है । दैत स-  
रनागत नरेशनि अभयदान महावीर वैरिन कौ  
दैत भयदान है ॥ कहै मतिराम दिल्लीपति कौं

रग नायिका का मुख पै बख्यौ। इहां रूप कारन पीतम को  
बसि होओ कारज साथ है यातैं हेतु है । अथवा पीतम  
को बसि होओ कारन गर्व को रग बढिबो कारज साथ है  
यातैं हेतु है ॥ ४२६ ॥

द्वितीय हेतु लक्षण दोहा ।

जहा हेतुमत हेतु को बरनत एक सरूप ।  
तहा हेतु औरौ कहत सब कवि पडित भूप ॥

जहा कारज कारन को एक रूप बरनै तहा और हेतु  
कहते है सब कवि पण्डितन के राजा ॥ ४२७ ॥

उदाहरण दोहा ।

नैननि को आनन्द है जिय की जीवनि जानि ।  
प्रगट दरप कदर्प को तेरी मृदु मुसकानि ४३८

तेरी कोमल हासी है सो नेत्रनि को सुख है जीव की  
जिवायवेवारी जानि कामदेव को जाहर गर्व है । इहा हासी  
कारन है आनन्द जीवन दर्प कारज है ताकी एक सरूप  
बरन्यौ यातैं द्वितीय हेतु है ॥ ४३८ ॥

तृतीय हेतु लक्षण दोहा ।

जहँ समर्थिबे अर्थ को प्रगट समर्थन होय ।  
तहा हेतु औरौ कहत कवि कोविद सब कोय ।

जहा समर्थन करबे योग्य अर्थ को समर्थन होय तहा  
और हेतु कहते है कवि पण्डित सब कोई ॥ ४३९ ॥

उदाहरण सबैया ।

भौह कमान के लोचन वान के लाजहि मारि  
रहे विसवामी । गोल कपोलनि केलि करै भयो  
कुंडल लोल हिंडोल विलासी ॥ कोट किरौट  
किये मतिराम करै चढि मोर पखानि मवासी ।  
क्यो मन हाथ करौं सजनी बनमाल मै बैठि  
भयो बनवासी ॥ ४४० ॥

भृकुटीन कौ धनुष करिके नेचनि कौ तोर करिके लाज  
कौ मारिके बिखासो रहे हे बर्तन गालनि पै क्रीडा करै  
हे चचल कुडल रूप भुलाकि बिनासो भयो मतिराम कहै  
हे मुकुट को किली किये हुय मयूर को पापनि पै चढि कै  
मवासी करै हे हे सजनी कैसे मन कौ बस मै राखौ बन  
माना मै बैठि करिके बन को वासी भयो । इहा मन बस  
नहि होय इसके समर्थन कौ भौह कमानादि कहे यातैं  
हेतु हे ॥ ४४० ॥

पुन कवित्त ।

देखि महिपालनि की कपति है छाती ऐसी  
सपति सहित देत जाचकनि दान है । देत स-  
रनागत नरेशनि अभयदान महावीर वैरिन कौं  
देत भयदान है ॥ कहै मतिराम दिल्लीपति कौं



बडाई देत शत्रुशालनद बलावध सुलतान है ।  
 राव भावसिंह जू की सुजस वषानियत लीवे कौ  
 जहान सब दीवे कौं दिवान है ॥ ४४१ ॥

देखि कै राजानि की छातो कापे है ऐसी सपति समेत  
 दान जाचकनि कौं दे है सरनै आया राजानि कौं अभय  
 दान देहे महा सूर बैरीन को भय दान देहे मतिराम  
 कहै है दिक्कीनाथ कौं बडाई देहे शत्रुशालन को सुत है सो  
 बलावध का पातशाह है राव भावसिंह जी को सुजस बहन  
 खानिये है लेवा कौं सब दुनिया है देवा कौं दिवाण है  
 इहा लेवे कौं जिहान सब दीवे कौं दिवाण है यह इ समर्थ  
 नोय है ताकी जाचक सरनागत बैरी दिक्कीपति । कौं दात  
 ध्यता करि समर्थन कियो यातै तीसरो हेतु है । यह और  
 ग्रथनि में काव्यलिग लिख्यो है ॥ ४४१ ॥

दोहा ।

रुचिर अर्थ भूपन दूते रचि जानै मतिराम ।  
 ताकी वानी जगत में विलसै अति अभिराम ॥

सुंदर अर्थालकार इतने जो बनाय जानै मतिराम कहै  
 है ताकी अति मनोहर वानो जगत में अति शोभा कौं  
 प्राप्त होय ॥ ४४२ ॥

छप्पय ।

जब लगि कच्छप फोल सहसमुख धरनि

भारधर । जब लगि आठौं दिशनि दिग्ध शो  
 भित दिग्गज वर ॥ जब लगि कवि मतिराम  
 सगिरि सागर महिमण्डल । अनिल अनल जब  
 लगि जोति मडल आखंडल ॥ नृप शत्रुशाल  
 नन्दन नवल भावसिंह भूपालमनि । जग  
 चिरजीव तव लगि सुखद कहत सकल संसार  
 धनि ॥ ४४३ ॥

जब ताई कच्छप है बराह है शेष धरनी का बोझ कौं  
 धरै तब ताई आठौ दिशनि के भारी सुदर दिग्गज शोभित  
 है मतिराम कवि कहै है जब तक गिरिन सहित समुद्रनि  
 सहित पृथ्वीमण्डल है जब तक पवन है अग्नि की जोति  
 है इन्द्र की मण्डल है राजा शत्रुशाल की मनोहर पुत्र भाव  
 सिंह राजान की मनि तब ताई जगत में चिरजीव सुखदा  
 यक रही सब दुनिया धन्य कहै है ॥ ४४३ ॥

दोहा ।

कण्ठ करै सो सभनि मैं शोभै अति अभिराम ।  
 भयो सकल संसार हित कविता ललितललाम ॥  
 जो कण्ठस्थ करै सो सभनि मैं अति शोभा पावे मपूर्ण  
 जगत के वास्तौ सुदर ललितललाम प्रत्य भयो है ॥ ५४४ ॥

इति ललितललाम ।

अथ कुवलयानन्द में पंचदश अलंकार और हैं ते कहि  
यतु हैं ॥

छप्पय ।

रसवत १ प्रियस २ दोय तृतीय ऊर्जस्वित ३  
जानौ । चतुर्थ समाहित ४ नाम पचम भावोदय  
५ मानौ ॥ भावसधि ६ षट भाव शवलता ७  
सप्तम कहिये । प्रत्यक्षरु अनुमान ८ दशम उ  
पमान १० निवहिये ॥ पुनि शब्द ११ रु अर्थापत्ति  
१२ पुनि अनुपलब्धि १३ सभव १४ कहौ । ऐ-  
तिह्य १५ सहित सब पचदश कवि गुलाब भूषण  
गहौ ॥ १ ॥

रसवत लक्षण दोहा ।

इक रस रस की अग द्वै कै स्थाई की होय ।

कै व्यभिचारी भाव की अग सुरसवत जोय ॥

एक रस दूसरा रस की अग होय अथवा स्थाई भाव  
को अथवा व्यभिचारी भाव की अग होय सो रसवत अलं  
कार देखौ ॥ १ ॥

सदाहरण दोहा ।

जयति जयति योगीन्द्रमुनि कुभज महा अनूप ।

देखि ताके चुलुक में कच्छप मत्स्य सरूप ॥ ३ ॥

जोगीन्द्र महा अनूप अगस्त्य मुनि सर्वोत्कृष्टेण वर्तते ।  
जाको चुलू मैं कच्छप ममत्स्य स्वरूपावतार देखे । यद्वा  
मुनि विषयक रति भाव को अग अद्भुत रस है यातै रस  
वत है ॥ ३ ॥

प्रेय लक्षण दोहा ।

भाव होय अंग भाव को कै रस को अंग चार ।  
सु है प्रेय कहँ याहि कौ कविभावालकार ॥ ४ ॥

भाव को अग भाव होय अथवा रस को अग भाव सो प्रे  
योऽलकार है याही कौ कवि हैं सो भावाऽलकार कहँ हैं ॥

उदाहरण दोहा ।

कव वसि मधि बाराणसी धरि कोपीनहि चीर ।  
हे हर शिव शकर जपत फिरिहौं गङ्गातीर ॥५॥

कोपीनमात्र चीर धारण करिके काशी में वसि कै ।  
हे हर । हे शिव । हे शकर । ऐसे जपते हुए गङ्गा के तीर  
पै कव फिरौंगे । इहा सातरस को चिन्ता सचारी अग है  
यातै प्रेयस है ।

ऊर्ज्जस्वित लक्षण चन्द्रायण ।

रसाभास जहँ अग भास को होय वर ।

अथवा भावाभास भाव को अग तर ॥

सो ऊर्ज्जस्वित होय भाव रस अनुचितहि ।

भाषाभासरु रसाभास क्रम सहित लहि ॥ ६ ॥

जहा भाव को अह रसाभास होय अथवा भाव को अग भावाभास होय सो ऊर्जस्वित अलंकार होय है ॥ अनुचित भाव है सो भाषाभास है और अनुचित रस है सो रसाभास है ॥ ६ ॥

उदाहरण दोहा ।

वन वन भीलन संग रमत तुव वैरिन की वाम ।

अरु अरितुव गुन गनत निति प्रवलप्रतापी राम ॥

हे प्रवल प्रतापी राम तेरे बैरिन की स्त्री भीलन के संग वन वन में रमती हैं इहा प्रभु विषयक रति भाव को अग रसाभास है यातें ऊर्जस्वित है । और तेरे गुन सदा गुनते है इहा प्रभु विषयक रति भाव को अग भावाऽऽभास है यातें ऊर्जस्वित अलंकार है ॥ ७ ॥

समाहित लक्षण दोहा ।

अग होय रस को जहाँ भाव साति कै होय ।

भाव साति अंग भाव को जानि समाहित सीय ।

जहाँ रस को अग भाव साति होय । अथवा भाव को अग भाव साति होय सो समाहित जानी ॥ ८ ॥

उदाहरण दोहा ।

पिय ठाढे मे मान लखि तिय दूत रही विजोय ।

देखत हँसि दीनी ललन तिय तव दीनो रोय ॥

मान देखि करिकै पिय हैं सो ठाठे द्वै रहे । इत कौ  
तिय है सो विशेष देखि रही । देखतैं पिय नै हसि दियो  
तब तिय नै रोय दियो । इहा शृंगाररस को अंग कोप  
साति है ॥ यातैं समाहित है ॥ ८ ॥

भावोदय सचण ।

होय अंग रस को जहा भावोदय कै होय ।  
भावोदय अंग भाव को है भावोदय सोय ॥१०॥

भाव को उदय होय सो भावोदय ॥ जहा रस को अंग  
भावोदय होय अथवा भाव को अंग भावोदय होय सो  
भावोदय अलकार है ॥ १० ॥

उदाहरण दोहा ।

सुनि गुन मोहन के रहै हिय डुलसी अतिवाम ।  
चहतविचारिविचारि उर कवमिलिहैं घनश्याम ॥

मोहन के गुन सुनि कै वाम है सो हिया में डुलसी  
रहे है ॥ उर में विचारि विचारि कै चाहती है घनश्याम  
कव मिलैगी । इहा शृंगार रस को अंग औलुख्यसचारी को  
उदय है ॥ ११ ॥

भाव संधिलक्षण चन्द्रायण ।

भाव सन्धि जहँ अंग रसहि को कै जहाँ ।  
भाव सधि है अंग भाव को वर तहाँ ॥  
भाव सधि है जुरैं विरुद्ध जु भावही ।  
भाव सधि तिहँ नाम समस्त बतावही ॥ १२ ॥

जहा रस को अग भाव सधि होय अथवा भाव को अग भाव सधि होय तहां भाव सधि अलकार है ॥ जो विरह भाव जुरै तिसको सम्पूर्ण कवि भाव सधि नाम बतावै हैं ॥ १२ ॥

उदाहरण दोहा ।

चलत वीर सयाम कौं लखि विलखी निज बाल ।  
अरुन वरन तन मै उठे विपुल पुलक ततकाल ॥

वीर नैं सयाम कौं चलतै विलखी हुई अपनी स्त्री देखी ताही समय अरुन वरन तन मै बहुत रोम उठे इहा प्रभु विषयक रति भाव को अग रमणी प्रेम रण उत्कण्ठा की सन्धि है यातै भाव सन्धि है ॥ १३ ॥

भाव शबलतालक्षण ॥ चन्द्रायण ॥

भाव शबलता होय अग रस को मता ।

कै भावहि को अग भाव को शबलता ॥

भाव शबलता साय भाव जहँ बहुतही ।

उपजै तहां सुभाव शबलता कवि कहौ ॥१४॥

रस को अग भाव शबलता होय अथवा भाव को अग भाव शबलता होय सो भाव शबलता अलकार है ॥ जहा बहुत भाव उपजै तहा कविन नै भाव शबलता कहौ है ।

उदाहरण दोहा ।

वशीधर वनमालधर हरि उर माहि रहाय ।

कित मै कितवहकितमिलन सजनीव्योतवताय ॥

बशीधर बनमालधर हरि हैं सो घर में रहे हैं । कहां  
 में । कहा यह । कहा मिलाप है । हे सजनी तू ब्यात बता  
 यहा बशीधर बनमाल धर यह ती क्षरण । कहा में कहा  
 यह यह वितर्क ॥ कहा मिलन यह दीनता तू ब्यौत बता  
 यह सत्कठा यह भाव सवणता है सो विप्रलभ शृ गार रस  
 को भङ्ग है यातें भाव सवणता अलकार है ॥ १५ ॥

अथ प्रमाणालकार लिख्यते ।

प्रत्यक्ष लक्षण दोहा ।

इन्द्रिय अरु मन ये जहाँ विषय आपनौ पाय ।  
 ज्ञान करै प्रत्यक्ष तिहिँ कहँ गुलाव कविराय ॥

जहा इन्द्रिय और मन हैं सो अपनो विषय पाय करि  
 के ज्ञान करै तिसको गुलाव कहे है कविराज हैं सो प्रत्यक्ष  
 अलकार कहे हैं ॥ १६ ॥

उदाहरण दोहा ।

लखन सुनहु जिहिँ कारनै होत जज्ञ धनुधारि ।  
 मन मानत है देखि यह है वह जनककुमारि ॥

रामचन्द्र को उक्ति । हे लक्षण सुनो । जाके वास्ते  
 धनुष उठायबे को जज्ञ होत है मेरा मन मानै है ॥ देखि  
 यह वही जनककुमारो है । इहा मन नेत्रन सो प्रत्यक्ष है  
 यातें प्रत्यक्षअलकार है ॥ १७ ॥

अनुमान लक्षण दोहा ।

कारण के जानै जहा कारण जान्यो जाय ।



है अनुमान अलंकारी कवि गुलाब के भाय ॥

उदाहरण दोहा ।

चटकाली दधिमथनधुनि चरणायुध ध्वनिपाय ।  
जानि शर्वरीअन्त तिय रहि पिय-हिय लपटाय ॥

चिरीन की ध्वनि दधिमथन ध्वनि सुर्गा की ध्वनि सुनि  
कै राति को अन्त जानि करि कै तिय है सो पिय का  
हिया सों लपटाय रही ॥ इहा चटकाली दधिमथन सुर्गा  
की ध्वनि कारन जाने तैं निशांत कारज जान्यो, कारज  
जान्यो यातैं अनुमान है ॥ १८ ॥

उपमान लक्षण ।

उपमा की सादृश्य तैं विन देख्यौ उपमेय ।

जानि परै उपमान सौ अलंकार है ज्ञेय ॥२०॥

उपमान की सादृश्य से बिना देख्यो उपमेय जानि परै  
सो जानिवे योग्य उपमान अलंकार है ॥ २० ॥

उदाहरण दोहा ।

भन्मथ सम सुंदर लसै रवि सम तेज विशाल ।

सागर सम गभीर है सो दसरथ की लाल ॥२१॥

कामदेव की समान सुंदर लसै है । सूर्य समान विशाल  
तेज है । समुद्र समान गभीर है सो रामचन्द्र है इहा का  
मादि उपमानन से र मचन्द्र जाने गये यातैं उपमान है ॥

शब्द लक्षण दोहा ।

जहाँ शास्त्र अरु लोक की वचन प्रमाण बखान ।  
सो शब्दालकार है भाषत सुकवि सुजान ॥२२॥

जहा शास्त्र और लोक का वचन का प्रमाण को ब  
खान होय सो शब्दालकार है सुकवि सुजान है सो भाषते  
है ॥ २२ ॥

उदाहरण दोहा ।

धर्मविना सुखनहिँ मिलै गुरुविन लहै न ज्ञान ।  
ज्ञान विना नहिँ मुक्ति है पचिपचि मरै अजान ॥

धर्म विना सुख नहिँ मिलै । गुरु विना ज्ञान नहिँ मिलै  
ज्ञान विना मुक्ति नहिँ होय । अजान है सो पचि पचि के  
मरे है । इहा शास्त्र प्रमाण है यातें शब्दालकार है ॥१९॥

अथापत्तिलक्षण दोहा ।

जहाँ व्यर्थ भे अर्थ कौ और जोग सैं थाप ।

अर्थापत्ति अलकृति सु भाषत सुकवि सदाप ॥२४॥

जहा व्यर्थ भये अर्थ कौ और जोग सैं थापे सो अर्था  
पत्ति अलकार गर्व सहित सु कवि भाषते है ॥ २४ ॥

उदाहरण दोहा ।

तिय तेरे कटि है यहै मैं कौनौ निधार ।

जो न होय तो को धरै विपुल पयोधर भार ॥

हे तिय तेरे कटि है यह मैंने नियय कियो है जो  
नहिँ होय तो भारी कुच भार कौ कौन धरै है यहां नहिँ

यह ध्यार्याय कुच धारण योग करि ठहरायो । यातें अ  
र्थापत्ति है ॥ २५ ॥

अथ अनुपलब्धिसम्भव लक्षण दोहा ।

जानि परै नहिँ वस्तु कछु अनुपलब्धि है सोय ।  
जहँ सम्भव है वस्तु को सम्भव नाम सु होय ॥२६॥

जहा कछु वस्तु नहिँ जानि परै सो अनुपलब्धि अल  
ङ्कार है ॥ जहा वस्तु को सम्भव होय सो सम्भव नामक अ  
लकार होय है ॥ २६ ॥

अथ अनुपलब्धि उदाहरण दोहा ।

नहिँ तेरे कटि सब कहत कुच धित विनआधार ।  
इन्द्रजाल यह काम की लोक करत निर्धार ॥

तेरे कटि नहिँ है । सब कहते हैं कुचन की स्थिति विना  
आधार है । यह कामदेव को इन्द्रजाल है ऐसे लोक नि  
श्चय करते हैं ॥ इहा कटि को अभाव है ॥ यातें अनुपलब्धि  
है ॥ २७ ॥

अथ सम्भव को उदाहरण दोहा ।

सुनी न देखी तुव शृष्टय है ब्रह्मभानुकुमारि ।  
जानत हौं कहूँ होयगी विपुलाधार विचारि ॥

हे ब्रह्मभानुकुमारि मसान तो देखी है न सुनी है प  
रन्तु पृथ्वी बडो विचारि को जानौं हौं कोरेँ होयगी । इहा  
वस्तु को सम्भव है यातें सम्बालकार है ॥ २८ ॥

अथ ऐतिह्यलक्षण दोहा ।

सु ऐतिह्य प्राचीन कोउ चलि आई जु कहानि ।  
ताको वक्ता प्रथम को नहिन परै पहिचानि ॥

जो कोई प्राचीन कहानी चली आई होय ताको प्रथम वक्ता नहीं पहिचान्यो परै सो ऐतिह्य अलकार है ॥

उदाहरण दोहा ।

हे सीता उर धीर धरि जन धरि मन अपघात ।  
जीवत सो नर मुख लहै यहै लोक की बात ॥

त्रिजटा की उक्ति । हे सीता हृदय में धीरज धरि मन में अपघात मति धरै । जो आदमी जीवै सो मुख पावै यह लोक की बात है । इहा जीवत सो नर मुख लहै यह लोक कहानी है यातें ऐतिह्य है ॥ १० ॥

इति प्रमाणात्कारा ।

अथ समृष्टिशकर लिख्यते दोहा ।

भूषण शब्दरु अर्थ के आपस में मिलि जाँहि ।  
संसृष्टिरु शकर तहाँ ये जुग नाम कहाँहि ॥३१॥

जहा शब्द और अर्थ के अलकार आपस में मिलिजाहि तहा समृष्टि और शकर ये दो नाम कहावैं है ॥ ३१ ॥

अथ समृष्टि लक्षण दोहा ।

एक अलकृति कौं रहै नहि दूसर की चाह ।

बाधकहूँ इक आन को होय नहीं किहूँ राह ॥३२॥

जुदे जुदे भासैं सकल अपनी अपनी ठाम ।

तिल तडुल की रीति करि है संसृष्टि सुनाम ॥

एक अलकार कौं दूसरे अलकार की चाह नहीं रहे  
और एक अलकार दूसरे अलकार को बाधक भी किसी  
राह में नहीं होय ॥ ३० ॥

तिल तडुल की रीति करिकै सब अपनी अपनी ठौर  
पर जुदे जुदे भासैं सो संसृष्टि नाम है ॥ ३१ ॥

अथ संसृष्टि भेद दोहा ।

अर्थ अर्थ के भूषणरु शब्द शब्द के होय ।

अर्थ शब्द के होय यौं त्रय संसृष्टि विजोय ॥३४॥

अर्थ अर्थ के अलंकार होय और शब्द शब्द के अलंकार  
होय और अर्थ शब्द के अलंकार होय ऐसैं तीन संसृष्टि  
देखी ॥ ३४ ॥

अथ शंकर लक्षण दोहा ।

पय पानी कौ रीति करि होय परस्पर लीन ।

ताको शंकर नामही भाषत परम प्रवीन ॥३५॥

दूध जल रीति करिकै अलंकार परस्पर लीन होय  
ताको परम प्रवीन है सो शंकर नाम भाषते है ॥ ३५ ॥

अथ शंकर भेद दोहा ।

है अगागी भाव अरु सम प्राधान्य वषानि ।

सदेह अरु इक वाचकानुप्रवेश चव मानि ॥३६॥

अगागी भाव शकर है सम प्राधान्य २ शकर बखानों  
सदेह कर ३ और एक वाचकानुप्रवेश शकर जानों ये चारि  
भेद हैं ॥ ३६ ॥

अथ अगागी भाव लक्षण दोहा ।

बीज वृक्ष के न्याय करि डूक डूक को अंग होय ।  
सो अगागी भाव है कवि गुलाव मत जोय ॥३७॥

बीज के न्याय करिकै एक अलङ्कार दूसरे अलङ्कार को  
अग होय सो अगागी भाव शकर है गुलाव कवि के मत  
में देखी ॥ ३७ ॥

अथ सम प्राधान्य शकर लक्षण दोहा ।

दिन दिनपति के न्याय करि सगप्रगटें संगभास ।  
नामसम प्राधान्यही कविगुलाव कह तास ॥३८॥

दिन सूर्य न्याय करि अलङ्कार साथ ही प्रगटें साथ ही  
भासै गुलाव कवि है सो ताको नाम समप्राधान्य कहैं हैं ॥

अथ सदेह शहर लक्षण चन्द्रायण ।

प्रथम मिटायें द्वितीय अलङ्कृति भासही ।

द्वितीय मिटायें प्रथम विशेष प्रकासही ॥

बाध न डूक कौ एक राति दिन न्याय करि ।

तिंहीं शकर सदेह कहत कवि मोद धरि ॥३९॥

पहिलो अलङ्कार मिटाये सैं दूसरो अलङ्कार भासै दूसरो  
अलङ्कार मिटाये सैं पहिलो अलङ्कार प्रकासै राति दिव

न्याय करि एक कौ एक बाधे नहीं ताकौ सदेह शकर क  
हत है कवि मोद धरि करि कै ॥ ३८ ॥

अथ एकवाचकानुप्रवेश शकर लक्षण दोहा ।

न्याय नृसिंहाकार करि पदक वाक्य ड्रक माहि ।  
जुग भूषण ड्रक वाचकानुप्रवेश कहि ताहि ॥ ४० ॥

नृसिंहाकार न्याय करि एक पद और एक वाक्य मै  
दोय अलकार हीय ताकौ एक वाचकानुप्रवेश शकर  
कही ॥ ४० ॥

अर्थ अर्थ की प्रथम सृष्टि को उदाहरण दोहा ।

शशि सो उज्जल मुख लसै खजन हैं मनु नैन ।  
अधर नासिका बिव शुक मधुर सुधा से वैन ॥

शशि सो उज्जलो मुख लसै है नैन है सो मानी खजन  
हैं ॥ अधर और नासिका है सो किदूरी और शुक है ।  
सुधा से मीठे बचन है ॥ यहा उपमा उन्मेषा यथासंख्य  
अर्थालकार करि सृष्टि है ॥ ४१ ॥

अथ कामाधा उदाहरन सबैया ।

छाडत ना पति कौ छिनहू गुरुलोगन की  
मन मानत मै ना । कानि करै सखियानहु की  
न कथै मद्मार भरे वड वैना ॥ नाक चढाय भ्रमा  
भृकुटी त्रिपुटी भरि भाल सुभावत सैना ॥ वान  
मनोभवचापचढ़े सम राखत उन्नत दीरघ नैना ॥

दोहा ।

स्वभावोक्ति पद चयन में उपमा चौथे सांछि ।  
जुग अर्थालकार करि छा ससृष्टि सराहि ॥४३॥

द्वितीय ससृष्टि की उदाहरण दोहा ।

कर की करकी वर चुरी धूरि-धूसरित देह ।  
कत मुकरत परखी परत सुख सौं सनी सनेह ॥

सुन्दर कर की चुरी करकि गई है धूरि करि कै धूसरी  
देह है । धूर्ति नटै है । पिछानी परै है । सुख सौं सनेह में  
सनी है यहा यमककेकानुपास शब्दालकारन की ससृष्टि  
है ॥ ४४ ॥

अथ नवल अमगा उदाहरण सबैया ।

उच्च हँमै नहि रोस करै मधुरे मृदु बैन व-  
खानि सुटेरै । देहरि लाधि कटै घर तै नहि सा-  
सन-सासन नैक न गेरै ॥ कानि करे गुरुलोगन  
की अति नेह-नही नहि नैनन फेरै । पै पति की  
वर बात कहै तव भौह भ्रमाय सखी तन हेरै ॥

दोहा ।

सासन सासन मै जमक लखि छेकानुपास ।  
शब्द शब्द जुग योग तैं छा ससृष्टिहि भास ॥४६॥



द्वितीय सृष्टि की उदाहरन दोहा ।

दृग से, दृग हैं याहि के मुख सी मुखही आहि ।  
कर से कर कुच से कुचहि उपमा उपजे काहि ॥

याके दृग से याके ही दृग है । मुख सो मुखही है । कर  
से कर ही हे कुच से कुच ही है । उपमा कौन कौं उपजे  
इहां केकानुपास अनन्वय शब्दार्थालकार की सृष्टि है ॥

अथ आरूढ यौवना उदाहरन सबैया ।

आज लखी द्रुक गोपसुता करि-कुभन से  
कुच की छवि चैना । है नहि चंपक की तन सी  
दुति आनन सी शशि की दुति है ना ॥ गोल  
कपोल अमोल मनोहर पोपन प्रान सुधा सम  
बैना । कजन-भजन खजन-गजन है मनरजन  
साँजन नैना ॥ ४८ ॥

दोहा ।

पूर्णापम लुप्तोपमा अनुप्रास अनुमानि ।  
चवथ प्रतीप द्वितीय पद थी सृष्टि पिछानि ॥

इति सृष्टि ।

---

अथ अगागी भाव शकर उदाहरण दोहा ।

हलत पवन सैं तरुनतर दौखत छांह अचूक ।  
शशिहरि नैं तम-गज हनें मानहु तिनके टूक ॥

पवन सैं हालते हृदन के नीचै जो अचूक छाया दी  
खती है सो मानौ शशिसिंह नैं तम रूप हाथी मारे हैं ति  
नके टूक हैं । यहा शशिहरि तमगज रूपक है सो उमेचा  
को अग है यातैं अगागी भाव शकर है ॥ ५० ॥

सम प्राधान्य शकर उदाहरण दोहा ।

लघित तुंग पयोधर सु रवितुरगावलि चार ।  
मध्य अरुण नायक मनहु नभ-श्रीमरकत हार ॥

ऊचे मेघन कौ उलाहती हुई सूर्य का घोडान की पति  
है सो हमारी रचा करौ सो मानौ मध्य मै है लालमणि  
जाकेँ अैसे आकाश लक्ष्मी को पद्मा को हार है ॥ इहा  
श्रेय उतप्रेचा समासोक्ति साथ ही प्रगटते है साथही भासते  
हैं । यात सम प्राधान्य शकर है । नभ थी मै नायिका ध्वज  
हार को आरोप है सो समासोक्ति है । नायक नाम मारथी  
और हार को मणि को है । "नायको नेतरि श्रेष्टे हारमध्य  
मणावपीति" विश्व ॥ ५१ ॥

अथ सदेह शकर उदाहरण कवित्त ।

शोभा तिहुलोक की मसाली शोष केलि मेलि  
रूप वर भाजन मै फेरि फेरि जीवती । चदन

कपूर रस चोवा मधि सानिसानि निज निपुनाई  
 सब ताही माझ पोवती ॥ सुकवि गुलाव जो व-  
 नाय विवि-कारीगर कुंकुम कनक विज्जुमार जल  
 धोवती । औपनी पियूष लेय नीकी भाति औपती  
 ती राधामुख चंद्र की समान चंद्र होवती ॥

तीनों लोक की शोभा है सो मसालो इकट्ठो करि रूप  
 है सो सुन्दर भाजन होय तामें धरि कै फेरि फेरि शुद्ध क  
 रती । चन्दन कपूर गृहार रस इनका चोवा में सानि कै  
 अपनी सब चतुराई ताही में लगाती गुलाव कवि कहै है  
 ब्रह्मा कारीगर है सो केसर सोनो बिजुरी इनको सार है  
 सो जल होय तामें धोती अमृत रूप औपनी लेय कै आखी  
 तरह सैं औपती ती राधा का मुख चन्द्रमा की समान च  
 न्द्रमा होती यहा सभावना है जो यौ पद सैं और न औसो  
 चन्द्रमा होय न राधाका मुख की समान होय यह मिथ्या  
 ध्वसित है दोनू मे असभव है याते सन्देह शकर है । जो  
 वती पोवती धोवती औपती यौ भूत काल में अन्वय होय  
 तब ती सभावना होय ॥ और जोवै पोवै धोवै औपै तब  
 होवै ती होवै यौ भविष्यति काल में अन्वय होय तब  
 मिथ्याध्वसिति होय ॥ ५२ ॥

अथ एक वाचकानुप्रवेश शकर दोहा ।

हे हरि दीनदयालु मैं यह मांगौं सिर नाय ।  
 तुव पद पकज आसरै मन मधुकर लगि जाय ॥

हे हरि दीनदयालु मैं यह शिर नवाय करि कै भागौ  
 हौं तुझारे चरण कमल के आसरे मेरो मन भ्रमर रुगि  
 जाय । इहा पदपकज मनमधुकर मै रूपक छेकानुप्रास है  
 यातैं एक वाचकानुप्रवेश शकर है । काहू के मत में शब्दा  
 र्थालकार का ही एक वाचकानुप्रवेश होय है । काहू के  
 मत में अर्थालकारन को बी होय है । जहाँ शब्दार्थालकार  
 जुदा जुदा होय तहा समृष्टि है । अरु जहा एक पद में  
 दोनों हौंय तहा एक वाचकानुप्रवेश शकर है ॥ ५६ ॥

इति समृष्टिशकर सम्पूर्ण ॥

श्रीयुत जसयुत विजययुत युतमन वाञ्छित काम ।  
 राजी महि सिर शेष ली सुतन सहित नृप राम ॥  
 अब सवत उनईस सै बावन फागुन मांदि ।  
 श्रीरघुवीरनरेश नै सुन्यौ ग्रन्थ चित चाहि ॥५४॥  
 शीलसदन जनदुखकदन भदनरूप रनधीर ।  
 अरिमदमर्दन वर बदन निर्मल मन रघुवीर ॥

सवैया ।

धीरन मैं रनधीर महा पर-पीरनिवारन मै  
 डकलोई । सागरशील सयानन को गुनआगर  
 चाहि उजागर जोई ॥ कित्ति दिगन्तन लौं रहि

छाय दया धनदायकता नहि गोई ।  
मडल की मधवा रघुवीर समान न २।  
दोहा ।

ग्राम दीय ताजी मगज दिये राम  
कचन ककन पगन में पहिराये रघुवी  
दियो हुक्म सुनि ग्रन्थ इमि ॥ २३ ॥  
उदाहरन भूषनन के निज कृत धरहु  
सो सासन सिर धरि धरे मम ग्रथन  
उदाहरन भूषनन के जिहिँ ठाँ जोग्य  
जवलगि महि अहि शिर रहै जवलगि  
तवलगि राजौ सुखसहित सुवन स।  
इति श्रीमद्गुणावकविरायेण विरचिता ॥॥  
सपूर्णा ।





# भाषा काव्य के ग्रन्थ—अलङ्कार ।

पलङ्कार मञ्जरी	१)
कविकुलकण्ठाभरण	१)
कर्णाभरण	१)
चेतचन्द्रिका	१)
दीपप्रकाश	१)
भाषाभूषण	१)

## नायिका भेद ।

नायिका भेद बरवे में	१)
रसप्रबोध	१)
रसरत्न	१)
शृङ्गारनिर्णय	१)
सुन्दरशृङ्गार	२॥)
शृङ्गारसुधाकर	२)
सुन्दरी सर्वस्व	१)
सुन्दरीविलास	॥)
सुधानिधि	॥)
जगतविनोद	

## नखसिख ।

केशवदासकृतनख सिख	१)
चन्द्रशेखरकृत नखसिख	१)
धनभद्रकृतनखसिख	१)
मैनेजर भारतजीवन बनारस सिटी ।	







